य जुध्यायम् स्वी श्री ड जय काय याय्॥ ॐ ङ ऌ॥ क्लीं म रु न्यागि क्ला त्रि [illegible]
यश्रीयध्रिमव कायपाय्॥ ॐ ग कि नि वि [illegible] विंथ्य कीं कन [illegible] म य
यव कायपाद्द कीं यू॥ ॐ गि यर्की न्याम [illegible] ॥ ॐ नमा तगवां हृद्कन
लायदां श्री हृदेसा यन [illegible] याय्॥ ॐ याः [illegible] व ल्वां न्यासन [illegible] गन्य॥
सधं॥ ॥ हृदयं [illegible] निखा काव व भ गय [illegible] नु॥ ॥ [illegible] लय [illegible]
॥ वैयाय्॥ ह्रीं याय्॥ श्रीं याय्॥ [illegible] य्॥ क्लीं याय्॥ ॐ [illegible] ज [illegible]
याय्॥ [illegible] ॥ [illegible] दि [illegible] म [illegible] ॥ गा [illegible] ॥ [illegible]

॥ॐ नेजक्त कि काय विसृ ६ कुल द्यो आव आम स्त्रि ग न४कु सु व वो दया ॥
ज्ञा मा दिस द्विद यु पा ॥ॐ ति जलपात्र साधनविधि ॥ ॥मूलार्घ प
त्र पूजा ॥ त्रि कृ ०मू व या वा मा ना मि का गुरु न ॥ॐ नेज क्रां क्रीं क्रौं ह्र ४ प रु व
२ घाव २ गव गनू कू य २ च ८ २ ष य ० २ क रु २ व म २ धम २ घा ० य २ वि घो
गय २ वि घ्नि २ कूं ३ क्षुं रु ८ क्षौं श्री महा कौमारिका विद्व पादु कां पू ॥
ॐ नेकार्य समा लिख्य ॥ ॐ ने पूष्प पादुका ॥ नेज सां हृदया दि षड ङ्ग माला
द्भुचन्दना क्षत धूप या दू का पू ॥ यानि मूर्द्धि दर्णथे ७ ॥ ॐ द्र व यथ

सा धन ४ ॥ कद्भु य मुद्रा ॥ ॐ नेकूं ह्रीं श्रीं क्षुं क्षौं क्षौं क्षुं श्रीं क्रीं ॐ ॥ ॐ नि र्दु
गुद्धि ४ ॥ ॥ आत्म पूजा ॥ ॐ नेवन्दन पापू ॥ ॐ श्रीं अक्षतपापू ॥ ॐ सिंदुर
पापू ॥ ॐ क्षुं भाहनी पापू ॥ ॐ श्रीं पूष्प पापू ॥ ॐ नें ॥ आनन्द ॥ कि शेव
वानन्द वीरा धिपतय स्वात्मनया ॥ ॐ अर्घ पात्राय कैनु
आत्म निय मि विन्दू तर्यं दत्वा ॥ धूपापू ॥ ॥ ॐ कर्या गं द्रुतत्वा ॥ ने
कावो दिनु द्रूयद ८ ग नदवी थ मू क्रौ थम ० ललास ७ ॥ स्त्र नया म
न ८ थेव ॥ ॐ नेपूष्प पापू ॥ ॐ नेजव लि २ स्वाहा ॥ ॥मालनी व ८०७ ॥ ज यदी

मालनी या दि॥ पंचवलि॥ ॐ ममधूनासनपादुकांपू॥ ॐ जद्वाकूणव ट्कू

नाथ [illegible] धालासखब्ज वन्न२ जुछिरवन

ट्स्वाहा॥ वट्कं॥ ॥ [illegible] यनीनं बलिगृह्न२ [illegible]

॥ [illegible] ॥ नमामनपायु॥ ॥ [illegible]

पणय यथानाम्न भूतमण्डलम८ छ्ये ज्वलन२ वटुक कुमाय त्रिनयनायक

प्ररवट्वायरवट्ङ शूलपाणथ महाकपालमाला र चलाय विघ्न कौ

टिसमप्रभाय नद्य कितुगुवन्न रनवत्रू प्रणय ८ ध्ये पपन्नान्न वलिं

ह्न२ ममविघ्नोच्छादय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रूं स्फ्रट स्वाहा॥ नवंवलि॥ दीपपा

ला॥ २॥ ॐ सिंहासनपादुकांपू॥ ॐ यक्षविद्याधिणीनांपीठ्जाढीग

जासह्रुजा धार्मजा मञ्जुजा कुलजा संधाहजा ४ यक्षविद्याधिणीनां

रवचरी ऊर्ध्वचरी८ भावचरी नका दर्नी धुन्दनी शुकवी वलुष्यहः बत्स फ्

ष्ठ नवा दनीनी धि जागहासिनीनां य८ ध्ये पयन्नाम्न लिगृह्न२ ममसिद्धि

कुर्वन्तु हूं ३ स्फ्रट स्वाहा॥ बलि॥ यामिनी॥ २॥ ॐ प्रथमासनपादु॥ ॐ

ॐ श्रीसिद्धिचामुण्डायैपादु॥ नवंबलि॥ चामुण्डा॥ ४॥ ॐ मूर्तिसनपा

प्रा ॐ ॐ ॐ श्रीमूं न४८ श्रीकुलगणेशनायपायू॥ नवंवलि॥ ग

ग यक्तिश्रा ७॥ आवाहनादि वन्दनाक्षत धूपपादुकां ७॥ मर्ति नी दणु
थानिमरा मूडा गजामद दिर्णयामि पादु॥ ॥जयस्कागय ८०७॥ गजे
वीपूर्णं विर्णोस्वंस्वदू ण नलि दार्न द्वी पालस्ति नर्ण यादवी थो मि णी
थेसक ल रय भी नका बामर्त्ति काख्या। नोमिग्रीविद्धिकर्णयवमसुख
कर्नंथश्रकयग णेव, गज्ञकोबूजकानाहव वरुरुय मर्णगं सदाय,
लानाउ॥ जूनगन्धादि पश्चिवलोद्यनविलथे४सर्वं य नि पूर्णु मस्तु॥ ॥
विकूनाग थेर्ण॥ ॐ पादुपूजा॥ ॥गीतूबादिमरवर्णोधर्न॥ ॥ निलिणय

कीथवी हरु कोरु समचिर्न। सिद्धिर्णा धनमि ल्याकूपान कीरु कर्णा
धर्न॥ ॥नथेर्ण॥ नेरयातिथ नासनस्कारव रयहन लोरोयवामकु
मूर्किवणीवणीगनाथः यगरु लिरु णालोकयाल्ला४ रुणी लु यका
रक्कासिदेव्या४ विरुगणसहिता४ मातव४ कोत्यालायानिन्ध्याया दु
का४ मूलगलखवना४ पानमनाचियस्तु॥ चिवकु वर्ग सर्व सनुदाघवि
नायकायानिनी कोत्यालाश्रममदरुबुवस्थिता४॥ ॐनम४ श्रीनाथाय॥
ॐनम४ श्री सिद्धिनाथाय॥ ॐनम४ श्रीकुब्जिकानाथाय पादुका पूजा॥ स्वी

कार्त्तिकेय्याये॥ ॐ नि पेक्ष वलि॥ ॥देवी॰ विधि य॥ ॐ ह्रां याधावक्रम
न सिंनयगता वुक्षेन ८ध्वैनि यामार्ग निवाह सपोजिह्व टिकद्रु टिनिरु
रायु ॐ स्थी के। श्च आयक्री थननि यामदृन रावकूजा ह्र लस्तु स्कोतिमूजिस
देवी ॐ य्या ॰ वह निय नसमा श्च आयज वक्रम ८श्व॥ ॥ॐ ग्री [illegible] र्को
मगु लाके याधि॥ ददद श्वपू ०॥ संपूक्षवाहनं॥ ॥ॐ ज सूं सुनलाम
लग्री आदिदेव पापू०॥ नवं वलि॥ ॥ॐ [illegible] गी आनन्दह्रां किरनवा
नन्दवी वामिपनथ [illegible] पापू०॥ नवं [illegible] वलि॥ ॥ॐ नवासनया

पू०॥ ॐ ग्लौं॰ पूस्वनद्वीपदनुनाधदेवी [illegible] लि मन्त्र [illegible] तयालाय यापू०॥ ॐ
थों॰ पनस्कि द्वीपदकी धदेवी महाधों [illegible] पालायाय पायू०॥ वलि॥ ॐ
ग्लौं॰ सिंहनद्वीपकु नाथदेवी महायानिगी [illegible] पालायपायू०॥ वलि॥ ॐ
ॐ ॐ [illegible] वस्वनिक्षमहाञ्जनाधिपनंयङ्क कपिलापजटारोवनास्व [illegible] लि
नख का लामूख [illegible] वननरहेनवद्भुयप गृ [illegible] र [illegible] र मू [illegible] र ललख ख
खाहि र महादामनाधि [illegible] यक्कमसब वनदा ममसू [illegible] धनधान्य लाता
दहि नमः स्वाहा॥ वलि॥ आवाहनादि दध मूद्रा॥ [illegible] य॥ ॥ॐ मयूंवासनवा

मः॥ ऐं ३ ग्रौं श्रीं कुलभूषणवटुकनाथाय पापूज॥ वलि॥ आवाहनादि गजेन्द्र
मुद्रा॥ वटुक॥ ॥ ऐं ३ मूलासनं पापूज॥ ऐं मां मीं मूं मः ४ ल्लीं श्रीं कुलगणे
शनाथाय पापूज॥ वलि॥ आवाहनादि गजमुद्रा॥ गणपति॥ ह्सौः पापूज॥ वि
घ्नपति गणेश॥ ॐ निविद्य॥ ॥ ३ पद्मासनं पापूज॥ ऐं ३ श्रीगुरुनूरुश्रीसा
नन्ददेव पादुकां पूज॥ ऐं ३ परमगुरुनूश्री चैत्यानन्ददेव पापूज॥ ऐं ३ परमेष्ठीगु
रुश्री मित्रानन्ददेव पादुकां ३॥ ऐं ३ श्रीं त्रिगुप्तिकहान्तकाय पादुकां ३॥ ॐ
दैवलि॥ आवाहनादि धेनुमुद्रा॥ ॐ निविगुप्ति ४॥ ॥ नमा गुरुमण्डल

नवात्मा ऋषिर्॥ न्यास काण्य०॥ ऐं ३ ह्रां हृदयाय नमः ४ पापूज॥ ऐं ३ ह्रीं शि
रसे स्वाहा पादुकां ३॥ ऐं ३ ह्रूं शिखायै वौषट् पापूज॥ ऐं ३ ह्रैं कवचाय हुं
पापूज॥ ऐं ३ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् पापूज॥ ऐं ३ ह्रः अस्त्राय फट् पापूज॥ कर
न्यास॥ ॥ ऐं ३ ह्रः शिखास्थाने पापूज॥ ऐं ३ ह्रीं शिरःस्थाने पापूज॥ ३ ह्रौं ल
लाट पापूज॥ ३ ह्रैं वक्त्राय पापूज॥ ३ ह्रूं हृदयाय पापूज॥ ३ ह्रां नाभौ पा
पूज॥ ३ ह्रः गुह्य पापूज॥ ३ ह्रं जान्वो पापूज॥ ३ ह्रूं पादद्वय पापूज॥ ॐ निर
वाणाय करन्यास॥ ॥ ततः पूर्ववत् करन्यासनं अङ्गन्यास काण्य०॥ ऐं ३

ॐ ह्रीं यनमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं ... ॥ ॥ ... ॥ ... ॥ ...
... नयपि... य... वासयमा... वाहु... ल...
... काल... मालासमस... ॥ ... ॥ ... ॥ ...
... त्रिभुवन नमित ... सिद्धजीयूतदेवी ॥ ॐ ... ॥ ...
महा... मण्डल ... वायै स्वाहा ॥ त्रिकोण मध्ये ॥ ॐ ... ह्रूं ...
... मण्डल ... दिव्याये स्वाहा ॥ ... पूर्व ॥ ॐ ... उ...
... मण्डल ... दिव्याये स्वाहा ॥ दक्षिणे ॥ ॐ ... ह्रूं ... मण्डल

लक्ष्मी... नाये स्वाहा ॥ उत्तरे ॥ ॐ ... ह्रूं ... मण्डल ... स्वाहा ॥ प
श्चिम ॥ ॥ ... ॥ ॐ ... मण्डल ... स्वाहा ॥ पूर्व
॥ ॐ ... मण्डल ... नाये स्वाहा ॥ दक्षिणे ॥ ॐ ...
... मण्डल ... नाये स्वाहा ॥ उत्तरे ॥ ॐ ... कुसुमाये स्वाहा ॥
पश्चिम ॥ ॥ ॐ ... स्वाहा ॥ ... अग्निकोणे ॥ ॐ ...
... स्वाहा ॥ नैरृत्ये ॥ ॐ ... स्वाहा ॥ वायव्ये ॥ ॐ ...
नाये स्वाहा ॥ ईशान ॥ ॥ ॐ ... नाये स्वाहा ॥ विकोण म

...र्द्ध॥ ॥पुनर्वपि अर्घ्युबाणे॥ ॐ नमः यं गणेशाय पा पूज॥ पूर्व॥ ॐ नमः श्री नं वि
घ्नेशाय पा पूज॥ दक्षिण॥ ॐ नमः श्री वं बुलिश्वाय पा पूज॥ उत्तर॥ ॐ नमः श्री लं निवृ
त्यर्थाय पा पूज॥ पश्चिम॥ ॥ॐ नमः कुलरुद्र भैरवाय पा पूज॥ नमः कुलेशानो
॥ॐ नमः श्री कुलनाथ रुद्र भैरवाय पा पूज॥ नैरृत्य॥ ॐ नमः श्री कुल वटुक रुद्र भैरवाय
पा पूज॥ वायव्य॥ ॐ नमः श्री कुलकपाल रुद्र भैरवाय पा पूज॥ ईशान॥ ॥
ॐ नमः श्री कुल अस्त्र रुद्र भैरवाय पा पूज॥ त्रिकोणपश्चि॥ ॐ नमः श्री कुल अस्त्र
देवी पा पूज॥ त्रिकोण वाम॥ ॥मध्याह्न पूजा॥ ॐ नमः क्रां क्रीं क्रूं क्रैं ४ क्षे

त्रपालाय पा पूज॥ आग्नेय॥ ॐ नमः गां गीं गूं गैं ४ ग्लौं श्री कुलगणेश्वराय
पा पूज॥ नैरृत्य॥ ॐ नमः ह्रीं क्रीं कुलपुत्र वटुक नाथाय पा पूज॥ वायव्य॥ ॐ नमः
श्री महा कौमारि त्रिकोण विश्व पा पूज॥ ईशान॥ ॥ॐ नमः [illegible] पा पूज॥ ॐ नमः
लायै पा पूज॥ ॥त्रिकोण मध्ये॥ ॐ नमः पद्मासन पा पूज॥ ॐ नमः [illegible] वासन पा
पूज॥ ध्यान पूर्ववत् गृहीत्वा॥ ॥ॐ नमः पद्मासन श्वेतवर्णं षडानन वक्त्रं त्रिलोचनं
। स्वर्वर्णं श्रीमहादीक्ष सर्वलक्षण संयुतं। स्वर्वर्णं पूर्ववक्त्र दक्षिण [illegible]
[illegible] ॥ उत्तर पीत वर्णं स्यात् [illegible] वक्त्र [illegible] वक्त्र दक्षिण [illegible]

श्री ध्वेतमूर्ति वमवच। गदृष्ठ्वं पीमवर्णु ॐ पीगस्याक्रस्नू दक्षिले॥ वक्रमु
वमिलाष्ठूगदृष्ठं ध्वेतमूर्तकर्म। स्वस्वदगतुर्भंदवंकवध्याहालद्दविर्ग॥ स्व
स्वस्त्रकवनंदवंत्रिशूलमंक्षुगन्कथा। स्वर्णकमण्डलु ध्येष्ठ्टमद्व खड्गगमव
व॥ वाणधनुस्त्रसंयुक्तं दवगुघण्ठास्र ध्योहिनी। वर्कीयेवगदायालिवनद
स्यहस्रकं॥ कायविन्दुधनंदवंनानायंकावमण्डलं। गवपीनंरथद्दणुमास
नस्रखसंस्थितं॥ नवीद्र यंनवात्मानंमण्डलंगुरुमण्डलं। ध्यायनगनयकोत्मा
क्षिप्रंसिद्धिकिमानवा॥ ॐ निध्यानंविविन्याय पूज्यपादुकांपूजे॥ ॥गुरुलि

३ ॐ नग ॐ आनन्दशक्तिस्नवानन्दवीजाधियगय ॐ श्रीगुरुमण्डल
नवात्मा ... स्वहायकाय ॐ लियघ्रीपादुकां॥ नं ७ सं ७ ॐ श्रीमहाविद्या
ध्यश्वरीहं ७ श्रीगुरुमण्डलनवात्मारद्दायकाये ॐ लियघ्रपादुकां॥
ॐ ७ ह ७ आनन्दशक्तिस्नवानन्दवीजाधियकथसं ७ पादुकां॥ ॐ नं ७ सं ७ श्री
महाविद्याजश्वरीहं श्रीनवात्मनय ॐ लियघ्रपादुकां॥ मध्ये॥ आवाहन
स्थापनसंनिधानसन्निधानकवचीकरणस्नानपाद्यआचमनीयार्घ्यदिपादुकां
॥ ॐ ७ चन्दना कुंकुमसिन्दूर ॐ लियघ्रपादुकां॥ त्रिशूलयानि वेनुमुद्रांदर्श

ग्र० ॥ ॥ ॐ अघाय ॐ अघाय ॐ घोराघोर ... सर्वतः सर्व स
र्वेभ्यः स ॥ ह्रीं ॐ रुद्ररूपेभ्यः पादुकां ॥ त्रिकोणदक्षे ॥ ॐ ॐ वज्रकुब्जिनी
ह्रूं त्रां ... कर्षिणि ह्रीं कामाङ्गद्राविणी ह्रीं ह्रीं महाक्षोभकारिणी ऐं ह्रीं श्रीं य
पूजं ॥ त्रिकोणवामे ॥ ॐ नमो भगवति ह्स्ख्फ्रें कुब्जिकायै ह्रां ह्रीं ह्रौं घोरे अघो
रे अघोरमुखि छ्रीं छ्रीं किलि २ विच्चे पादुकां ॥ त्रिकोणाग्रे ॥ पश्चिमवामिनि ॥ ...
वलि ॥ ॥ ॐ समस्त मन्त्र पी० सिद्धासनपी० पी० ... पी० ... [illegible]
... [illegible] ... पादुकां बलि ... स्वाहा ॥ ॐ ...

... सर्व ... पादुकां बलि ॥ ॐ ... नवात्मा ... बलि ...
... बलि ... स्वाहा ॥ ॐ ... मण्डल ... बलि ...
... स्वाहा ॥ ॐ ... मण्डल ... बलि ... २ स्वाहा ॥
॥ आवाहनादि ॥ ॐ चन्दनपादुकां ॥ ॐ ह्रीं वीरा ... पादुकां ॥ ॐ श्रीं वीर ...
पादुकां ॥ ॐ ... वीर ... पादुकां ॥ ॐ ह्रीं वीर पुष्पपादुकां ॥ ॐ अलि बलि
... पादुकां ॥ ॐ वीर धूप पादुकां ॥ ॐ वीर दीप पादुकां ॥ ॐ पद्ममु
द्रा ॥ ... मुद्रा ॥ ... मुद्रा ॥ ... योनिमुद्रा ॥ ह्रीं महामुद्रा ॥ ... मुद्रा

मूर्द्धादिन्यासः॥ ॥करन्यासः॥ ॐ नमः श्रीनाथाय पादुकां॥ ॐ नमः श्रीसि
द्धिनाथाय पादुकां॥ ॐ नमः श्रीकुजेशनाथाय पादुकां॥ ह्रूं पादुकां॥ ॥
ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं पश्चिमजं स्थानुजं [illegible] श्रीगुरुमण्डलं नमाम्यहं ॥ [illegible] विधान
समाप्तं॥ ॥ गुरुः कर्मार्च्चनम [illegible] आमानस्य॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं [illegible]
[illegible]॥ ॐ ऐं क्लीं ह्रूं ह्रूं ह्रः फट्‌ वज्रमण्डलं [illegible] धारणं
[illegible] पय वज्रासनपादुकां पूजयामि ॐ॥ आसनीयं॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
[illegible]मण्डलं [illegible] ह्रीं फट्‌ [illegible]॥ [illegible]

प्य [illegible]॥ ॥ॐ किनि विच्चे [illegible] नाथे [illegible] स्वाय फट्‌॥ [illegible]
॥ ॥ॐ ऐं ह्रूं फट्‌ वज्रपञ्जर [illegible] स्वाहा॥ वज्रमुकुटमूर्द्धादिन्यासः॥ ॥
ॐ बलमकुल [illegible] कुलमबल [illegible] ह्रूं फट्‌ स्वाहा॥ दिग्बन्धनं॥ ॥

॥ग्राम्यासंकासयः॥
ॐ किनि विच्चे [illegible] नाथे [illegible] स्वाय फट्‌॥ [illegible]॥ ॐ नमो भगव
[illegible] कमला [illegible] यनमः पादुकां॥ ॐ ह्रूं कुब्जिकाये कुल

ह्रीं पाये क्रीं ग्री लिनुस स्वाहा पायू ०॥ ॐ ७ क्रां क्रीं क्रूं वर्व्व नलि स्व हूं ग्री लिख्वा
येवा स्व हूं पायू ०॥ ॐ ७ धाय जूघाय जू धा ना मू स्वी वहूं नू पाये हूं ग्री क
वया यहूं पा पू ०॥ ॐ ७ स्त्रां स्त्रीं मरु का लि का ये क्रों आनन्द यायवहूं
पायू ०॥ ॐ ७ किनि किनि वि श्वं कां क नाये क्रः ग्री जू स्वा य रुद्र पायू ०॥
वलि ग्री कानक क्रां अन्यास स्तुं या यि पू र्व्वं ॥ वनी लिमूलम कुं ण स्वा स्माति
नु स्ति पूज नं ॥ एवं वलिं यय २॥ ॥ ननाद्वादलांग मा दि न्यास कुर्या ०॥
ॐ क्रीं ग्री स्कं स्कं ॥ स्कं सिद्धाये पाय द्वय पादुकां पूजयामि ०॥ ॐ ७ स्मां
मुद्धाये जानु द्वय पायू ०॥ ॐ ७ स्त्रिं विघ्नाये ऊरु द्वय पायू ०॥ ॐ ७ स्त्रीं
लक्ष्मी गुह्य पायू ०॥ ॐ ७ स्कुं दीकारी नाभी पायू ०॥ ॐ ७ स्कूं मालि न्येद्वद
थ पादुकां पूजयामि ०॥ ॐ ७ स्कं लिवाय क० पायू ०॥ ॐ ७ स्कैं वसमुखा
ये मूख पायू ०॥ ॐ ७ स्कां नागाधूमाये नागा पूट द्वय पायू ०॥ ॐ ७ स्कीं
कर्ण काये वर्क्तु द्वय पायू ०॥ ॐ ७ स्कं रु विकराला येत्र क्रीं पायू ०॥ ॐ ७ स्कं ः
महाम स्वो लिनस पायू ०॥ ॐ ७ स्कं ० सं ० पूष्य पायू ०॥ स्कुं दवलि ॥ स्कुं
सिद्धाद लांग न्यास ४॥ ॥ प्रणवाद्यं गथा जेनगुह्य वर्क्तु सम द्वय ०॥ हृद्

नववीजं यमस्या धोर्ष्ठं विर्यो कृत ॥ ऊह्न गर्वीयय तेन स्थान यूवाय ते पूव
।ह्नाद ग स्वन र्ध न रु दिन र्वी यय तेन श्री नाकालेना पमू त्यू न विश्वे न
त्यु ऊायत ॥ सर्वव्याधि विनिर्मुक्ता कूदु लाकाक्षिसा पक ४ ॥ न्यास रुल ॥
ऐं ऊ स्मृं सर्वदेक्ष गाय रुदयाय पा पू ३ ॥ ओं ऊ ह्रीं ऊ रूदन ज आमाललनी चित्र
लिवसस्याहु पा पू ३ ॥ ओं ऊ स्हूं रुव दवदनी रुनादिवा आयलिस्वाथे श्वा
हू पा पू ३ ॥ ओं ऊ स्है वज्रिलेवजधनाय स्वनक्ष कवचाय हूं पा पू ३ ॥ ओं ऊ स्ह्रौ
गाम्धानि त्यजलू फ सक्षिस रुज त्रिनेत्र द्रयाय वषट् पा पू ३ ॥ ओं ऊ स्ह ४

नमस्तु ते अगुन क ग कि लीक्षं महापातुप गस्त्राय सहस्रा व्याय हूं फ
ट पा पू ३ ॥ ओं ऊ ह्रां याबतन्न न्यास य पा पू ३ ॥ ऊ दवलि ॥ ॥ ऊ
ऐ न्यास ॥ नवैष तंन्तु ध्यान नवैमलिमा दिकसिद्धिदा ॥ न्यास रुला ॥ ॥ न
गामाललनी न्यास ॥ ओं क्षीं श्रीं क्षूं स्त्रौं नं नादिनी लिखायां पादुकां पूजया
मि स्त्रौं क्षूं श्रीं क्षीं ओं ॥ मनुला ७ ॥
ऊ ऊ थं य सनीड द्व लिखा मानायी पा पू ७ ॥ मनाक्षं नावृ क्षिना ॥
ऊ ऊ निद्र लं यूर्व लिखामानायां पा पू ७ ॥ मना गावर्ल न ॥

ॐ स्रूं पतिक्षायै दक्षिणलिथामालायै पादुकां पू० ॥ मनीमावर्तन ॥
ॐ ङुं [illegible] यै डरुवलिथामालायै पादुकां पू० ॥ मनीमावर्तन ॥
ॐ ङं णं [illegible] प्रथिमलि[illegible] मालायै पादुकां पू० ॥ कवावृक्षि ना ॥
ॐ वुं वाक्षायै मृगीय लावन पादुकां पू० ॥ डुर्द्धय खया ॥
ॐ धं धप्रियदर्शनीभूत ह्याया पू० ॥ वरुद्वा याद्रि लावनया नखर्षा
ॐ णं मानायणीकर्णुविवनथा पादुकां पू० ॥ अंगुलिपक्ष्यना० ॥
ॐ डमाहनीदक्षिणकर्णुहृपलेपादुकां पू० ॥ हस्कुर्षयनन ॥

ॐ डुं पक्षायै वामकर्णुहृपले[illegible] पादुकां पू० ॥ हस्कुर्षयनन ॥
ॐ ङुं नुक्षणकिनाणापूर्द्वयं पादुकां पू० ॥ मूलादन्त दल ॥
ॐ ववजिलीवक्षीयापू० ॥ हस्कुर्षयनन ॥
ॐ ककंठायै दक्षहृदय पादुकां पू० ॥ नखया ॥ वाजदन्तवडुकूयमर्थं
ॐ खवालिकायै डर्द्धदगनपक्षी पादुकां पू० ॥ नखया ॥
ॐ गलिवायै जूध्याद्गगनपक्षी पादुकां पूजयामि ॥ नखया ॥
ॐ घघावायै डर्ध्वपादुकां पू० ॥

ॐ नमः ह्रीं श्रीचामुण्डा खड्ग पादुकां ॥
ॐ नमः ह्रौं मायायै त्रिकार्यं पादुकां ॥ अखाय ॥
ॐ नमः ६ वागेश्वरीवाविपादुकां ॥ स्वर्गभन ॥
ॐ नमः ७ कलिखिवाहनीक० पादुकां ॥ यंष्ठुनन ॥
ॐ नमः ८ हस्तीमनीदक्षिणबाहुलिखय पादुकां ॥ यंष्ठुभन ॥
ॐ नमः ९ पवायूवनायै वामबाहुलिखय पादुकां ॥ यंष्ठुनन ॥
ॐ नमः तलामायै दक्षिणबाहुदण्डु पादुकां ॥

ॐ नमः ११ विनायकायै वामबाहुदण्डु पादुकां ॥
ॐ नमः १०० पूर्णमायै करनगर्द्धघा४ पादुकां ॥ विन्दुना ॥
ॐ नमः ११ कालीदक्षिणहस्ताङ्गुलिपू पादुकां ॥ समूपस्य म्यलूना० ॥
ॐ नमः १२ कर्द्दनीवामहस्ताङ्गुलिपू पादुकां ॥ समूपस्य म्यलूना० ॥
ॐ नमः नदीपनीशूलदण्डु पादुकां ॥ दक्षिणहस्तावनया ॥
ॐ नमः जजयन्त्यायै दक्षिणहस्त पादुकां ॥ त्रिशूलाग्र ॥
ॐ नमः टकपालिनीकपालवामहस्त पादुकां ॥

ॐ व ववनिहृदिमध्ये पापूज॥ हस्त पर्णना ७॥
ॐ ह हं विकाशयाला धारे पापूज॥ हृदयं॥ हस्त पर्णना ७॥
ॐ स सर्वबीजाय दक्षिण पार्श्वे पापूज॥
ॐ श्रूं शस्त्राय वामपार्श्वे पापूज॥
ॐ क्ष क्षा गलीदक्ष स्कन्ध पापूज॥ कृषूमण्डल वामना ७॥
ॐ ल यूं लनाये वामस्कन्ध पापूज॥ कृषूमण्डल ग्रामना ७॥
ॐ आं आं माये पव्यादय पादुकीं पूजयामि॥ चूवू कयर्णना ७॥

ॐ घ लीं शादवीडन्द पापूज॥ तुलु विमर्द्दन॥
ॐ क्ष सं हाकिणीनाहिमध्ये पापूज॥ ग्रामना ७॥
ॐ म महाकाल्ये निगम्ध पापूज॥
ॐ ग कु सूमाविनी गुह्ये पापूज॥
ॐ ॐ तु क्षीं दवीलु क्षी पादुकीं पूजयामि॥ जंतण्याः ४॥ नखया॥
ॐ न ना नादवीडन्द्र व्यपादुकीं पूजयामि॥ नखय॥
ॐ श क्षा नाये दक्ष जानु निपादुकीं पूज॥ कन्दविन्दूनायलिखनन॥

ॐ ह्रिं पश्चिमवामजानुनि पादुकां पूजयामि ॥ चन्द्रविन्दुनादलिखनन ॥
ॐ ॐ गायत्री दक्ष उं पार्यो पादुकां पूजयामि ॥ थखया ॥
ॐ ॐ सावित्री वाम उं पार्यो पादुकां पूजयामि ॥ थखया ॥
ॐ ददकनी दक्षिणपाद पादुकां पू ॥ श्रीखना ॥
ॐ रुरु ल्काविनी वामपाद पादुका पूज ॥ श्रीखना ॥
ॐ ख्यां हृदयाय पादुकां पूज ॥ ॐ ख्रीं शिरसे स्वाहा पादुका पू ॥ ॐ ख्रूं
शिखायै वौषट् पा पू ॥ ॐ ख्रैं कवचाय हुं पा पू ॥ ॐ ख्रौं नेत्र

पाय वषट् पा पू ॥ ॐ ख्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् पा पू ॥ ॐ ख्रः मालनी अ
स्त्राय फट् पा पू ॥ स्वात्म शिवसिवलिंच ॥ ॐ निमालनी ॥ ॥
यथा वह्नि समारूढं गुञ्जकाष्ठं च निर्दहेत् तथा सर्वाणि पापानि निमालनी
दहन्त्यलो ॥ ज्यासवल ॥ ॥ ननह्रानावालि ॥ ॐ क्रीं ह्रीं हूं ॐ
कण्ठे ललाट पादुकां पूज ॥
ॐ आनन्द मण्डल वक्रे पा पू ॥ पूर्ववत हस्त संयम ॥
ॐ ह्रूं स्त्रीं गन्दक्षिणभण्ड पादुकां पूजयामि ॥ वह्नि यू पूजादि माव न

ॐ ऐं श्रीं त्रिमूर्त्तिवामभग्न पादुकां पूजयामि ॥ पूर्व्ववद्दीकमलं ॥
ॐ ऐं हूं स्मशानदक्षकण्डे पादुकां पूजयामि ॥ विवश कुलिप्रक्षेपनं ॥
ॐ ऐं हूं स्मशानवामकण्डे पादुकां पूजयामि ॥ पूर्व्ववं ॥
ॐ ऐं हूं नायहूतिय [illegible] नासापुटे पादुकां पूजयामि ॥ मूलादशाक्षरस्वया ॥
ॐ ऐं हूं स्थितिथामवामनासीपुटे पादुकां पूजयामि ॥ पूर्व्ववं ॥
ॐ ऐं ऊं स्तानुदक्षगण्डे पादुकां पूजयामि ॥ कपालहस्त वर्णनं ॥
ॐ ऐं ऊं हस्तवामगण्डे पादुकां पूजयामि ॥ कपालहस्त वर्णनं ॥

ॐ ऐं एं भजीनत्र्क्षदन्तपङ्क्ती पादु ॥ स्वया ॥
ॐ ऐं ऐं हूंनिकऊर्द्धदन्तपङ्क्ती पादुकां पू ॥ स्वया ॥
ॐ ऐं ओं सत्याज्ञानत्र्धरोष्ठ पादुकां पू ॥ मध्यस्थभन ॥
ॐ ऐं औं सूनप्रहीनऊर्द्धोष्ठ पादुकां पूजयामि ॥ मध्यस्थभनं ॥
ॐ ऐं अं [illegible] पादुकां पूजयामि ॥ विन्दुवदं ॥
ॐ ऐं अः [illegible] पादुकां पूजयामि ॥ स्वया ॥
ॐ ऐं [illegible] पादुकां पूजयामि ॥ प्रसन्न ॥

ॐ खचणु दक्षिणबाहू यणु पापूॐ॥
ॐ नप्रचणु दक्षहस्त मणिबंधे पादूकीपूजयामि ॐ कङ्कण॥
ॐ घणिव दक्षहस्त पादूकीपूजयामि ॐ॥ बिन्दुन॥
ॐ ढणकरूड दक्षिण कलांगुलिनखपू पापूॐ॥ समूपस्थ्यलूना०॥
ॐ वकूर्मवाम स्कन्धे पापूॐ॥ श्रीकूनन॥
ॐ कूणकमणवामबाहू दणु पापूॐ॥
ॐ जवस्तुर्म्मूखवामहस्त मणिबन्धे पादूकीपूजयामि ॐ॥ कंकन॥

ॐ मफूजीणवामहस्त पादूकीपूजयामि ॐ॥ विन्दूना॥
ॐ ढणम्मीणवामकनीगुलिनखपू पापूॐ॥ समूपस्थ्यलून॥
ॐ टसाम ध्वयदक्षिण स्फिचि पादूकीपूजयामि ॐ॥
ॐ ०लीगलीणदक्षि लोनी पादपादूकीपूजयामि ॐ॥ नखया॥
ॐ ठठायू वौदक्षिणजानी पापूॐ॥ चन्द्रविन्दूनादक्षिखमन॥
ॐ ड ऊर्द्धनाचीणदक्षउंघ पादूकीपूजयामि ॐ॥ नखेपा॥
ॐ णडमाकान्कदक्ष पादांगुलिनख पपादूकीपूजयामि ॐ॥

ॐ ग अन्तरीसवामहिं विपादुकां पूजयामि ॥ नख्वया ॥
ॐ थदिङ्कि माथो पादुकां पूजयामि ॥ नख्वया ॥
ॐ द धात्रीणवामजानी पादुकां पूजयामि ॥ चन्द्रविन्दुनादलि ख्वनन ॥
ॐ ध मीनवामर्डीघ पादुकां पूजयामि ॥ नख्वया ॥
ॐ न मसवपादीगुलिनख्वकू पादुकां पूजयामि ॥
ॐ प लाहिनदक्षिणपार्श्वे पादुकां पूजयामि ॥
ॐ फ लिखीणवामपार्श्वे पादुकां पूजयामि ॥

ॐ वङ्कगलगु पृष्ठवंशे पादुकां पूजयामि ॥
ॐ रुद्धिवलुनाभिमध्ये पादुकां पूजयामि ॥ नामना० ॥
ॐ ममहालहृदिमध्ये पादुकां पूजयामि ॥
ॐ यवालीण त्वचिमध्ये पादुकां पूजयामि ॥ लिंगाग्रे ॥
ॐ रत्तुडीणरक्त पादुकां पूजयामि ॥ लिंगमूल ॥
ॐ लपिनाकिमांस पादुकां पूजयामि ॥ मेदसि ॥
ॐ वक्वङ्गाण स्नायुमध्ये पादुकां पूजयामि ॥ कं ८० ॥

ऐं ऽ गणककानन्द अखिमर(ञ्जो) पादुकां पूजयामि ऽ ॥ न उग्रथखया ॥
ऐं ऽ बल्वेनानन्दम ज्ञीयीं पादुकां पूजयामि ऽ ॥ गुरुत्रूजु ॥
ऐं ऽ मरुहगुरुकृ पादुकां पूजयामि ऽ ॥ वीऽया अ उत्या ४ ॥
ऐं ऽ रुलाक्कलीसपाणाक्षांन पादुकां पूजयामि ऽ ॥ दवि ॥ १६
ऐं ऽ क्रोसीवक्लिक्रोधेयादगुरूपृठिम ध्रे पादुकां पूजयामि ऽ ॥ नुतगारकम
ऐं ऽ क्लूं हृदयायनम ४ पापू ऽ ॥ ऐं ऽ क्लूं शिरसस्वाहा पापू ऽ ॥ ऐं ऽ क्लूं शि
खायै वौषट् पापू ऽ ॥

ऐं ऽ क्लूं कवचाय हुं पापू ऽ ॥ ऐं ऽ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् पापू ऽ ॥ ऐं ऽ क्लूं ४
अस्त्राय फट् पापू ऽ ॥ षडङ्ग ॥ ऐं ऽ क्लूं अखण्डानन्दनाथ नालिकह्लादकाय
पापू ऽ ॥ नवीवलि ॥ ॐ गिणक्षत्रालिन्यां [illegible] स ४ ॥ ॥ अणिमादिगुणानन्दय
प्मासानन्दवल्लिव । दरहन्सर्वपापालि [illegible] सकऽम्माजिानि ॥ कृष्पानक
[illegible] दिग्गगन्दापगृहा दि सि ४ नरुवह्निदु [illegible] वेगस्यगद्धनालिनवीनर्म ॥ न्यास
रुल ॥ ॥ ऐं ऽ क्लौं शिवनत्वाधिकाय पवाथे शिरसस्वाहा पापू ऽ ॥ ऐं ऽ अ
घोरक्रां क्रं पवमघोरक्रूं घोरनामस्वीङ्ग्री सीमरी पणीवमर पिय्य वृत्रू [illegible] रुहू

ॐ ह्रीं हूं स्फ्रूं विद्यानन्दाधिकाय पञ्चात्मने हृदयाय पापू ॥ ॐ १ ... नन्दाधिक ह्रीं
हूं ह्रीं श्रीं स्फ्रूं शुं पञ्चात्मने नाभौ पापू ॥ ॐ १ अं ऐं ऌ त्रितिविद्या रुद्राय नकाय पापू ॥
॥ ॐ देवलि ॥ ॐ त्रितिविद्यान्यास ४॥ ॥ नवं ध्यं वोत्रिविद्याय सर्वपापप्रमावुनी
॥ न्यासकल ॥ ॥ ॐ १ ह्रीं ह्रूं ४ श्रूं धाम ह्रीं श्रीं वधायाथि लिङ्गस पापू ॥ ॐ १ ह्रीं
ह्रूं ४ पवमधाम ह्रूं श्रीं पवमधायाथि मूत्व पापू ॥ ॐ १ ह्रीं ह्रूं ४ श्रीं धाम ह्रूंथ
ह्रीं श्रीं पवमधायाथि हृदयाय पापू ॥ ॐ १ ह्रीं ह्रूं ४ श्रीं धाममूत्वधामूत्वा
येनमो गुह्य पापू ॥ ॐ १ ह्रीं स्फ्रूं ह्रीमनमाथे दक्षिणभुज पापू ॥ ॐ १ ह्रीं ह्रैं

रीपञ्चदन्तारीपणाथे वामभुज पापू ॥ ॐ १ श्रीं ह्रीं ह्रूं ४ वम श्रीं नामवाम श्वे
दक्षिणोरु पादपापू ॥ ॐ १ ह्रीं स्फ्रूं चिवह्र श्रीं चिवल्वेवामानुपाद पापू
॥ ॐ १ ह्रैं ऌ धाविकाहूवारुद्राय नकाय पापू ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ त्रिधाविकाहून
न्यास ४॥ अस्त्वाधामाहूकं नित्यं पञ्च पातकनाशनं । भक्ति सिद्धिकरं नित्यं
गुह्यायुस्माय न्नाकथ ॥ सर्वदापापुण्यक्ति सर्वपापप्रमाद्यनी ॥ न्यासकल
॥ ॥ ॐ १ कालिकालिमहाकालीमीमसंहौ निताराजनी ह्रां ह्रीं ह्रूं वक्रहृद्यूम
स्वीयवीमीमी पञ्चनुहु ४ ... व ४ ॥ हृदय हूं गी हृदय पापू ॥ ... नमारमव

ति ड्गवाण्डलिनं त्रिनेत्रां सरोद्भणीकपाल खट्वाङ्ग धारिणीं हस्ते २ धनु २ वज्र
२ मन्त्रस्तु गस २ मानर ह्रौं ३ रुरु लिवा हृ मी लिनस वा पू ७॥ नै ७ ह्रौं ह्रीं
श्लौं लिखा हृमी लिखायी वा पू ७॥ वै ७ ड ह्रौं लिवा सिम लि आ सर्व पूकं
विसर्वहि आ दिमी आसि ड ह्लीं खि आ सर्व दृष्ट कल खि आ श्रा कव वहृनी
कवच या पू ७॥ नि ७ नुक नक्र महा नक्री वाम पुष्टची अव नन २ स्वाहा श्रीन
त्रहृनीनम यथ या पू ७॥ नै ७ उष्क प उ कर्ष्णं रुरु ममस र्वाधि पदवानुसयन्त्र म
न्त्रनलत्तवृष्णु पथा गां दिकानु यन ष्वगानु कानयि मानुक वि श्वक्लि कूर्वं कि षु क्लि
ना सर्वानुहन २ दं ह्राकला लि ह्रौं ह्रीं ह्रूं रुरु गुष्म कुक्षिकला श्र अम्स दू नी अ
स्त्राय या पू ७॥ वामपाद अधिपा ग न्यूं या पाय न द्वाम पाद नह्र न्यां नाति
नमर्य॥ नै ७ सं ७ व हृ लिर ह्रा विकोथि पाद कां पू ७॥ ॐ दं व लि॥ ॐ
लि व हृ नीन्यास ४॥ ॥ हृदयादीनां रुलं वग फ नी नयनासिनी । म
न्त्रसि द्विरुलं दानास र्वपाप क्षयंकर ४॥ मोहनं सर्वगन्त्रानि स्वपाद
यादि स्नानत ४॥ स्वनन्त्रा सर्वदा अथा सर्वायुध विमर्दनी॥ न्यासरुल॥ ॥
ॐ ७ वामे पृथ्वी ह्लूं व ह नगण लाकशा नगर्के नाभि मीन गण लाक अर्म्हा

सअक्षवणी गगणानन्ददेव गगणाम्बा वज्रु ४ वक्षी लक्ष्मीकाटि सिद्धि वज्रु ४ व
ज्रि लक्ष्मीकाटियाग्निणी पायू ७ ॥ ललाट ॥ ॐ १ मायायै स्तूँ वतु स्वर्ग लोक
शा गगर्द्ध गामिनी स्वर्ग लोक अष्ट गस अक्षवणी स्वर्गा नन्द देव स्वर्गा
म्बा वृनी गल लक्ष्मी काटि सिद्धि वनी गल लक्ष्मी कोटियाग्निणी पायू ७ ॥ नासिका व
क्ष ॥ ॐ १ माहनी फूँ वतु पवन लोक शा गगर्द्ध गामिनी पवन लोक अष्ट
गस अक्षवलि पवनानन्ददेव पवनाम्बा भातु गल लक्ष्मी काटि सिद्धि भा ति ग
लक्ष्मी काटियाग्निनी पायू ७ ॥ कंठ ॥ ॐ १ ज्ञानायै स्तूँ मर्त्य लोक शा गगर्द्ध ग

मिनी मर्त्य लोक अष्ट गस अक्षवणी मर्त्यानन्द देव मर्त्याम्बा अष्ट लक्ष्मी का
टि सिद्धि अष्ट लक्ष्मी काटियाग्निणी पायू ७ ॥ हृदय ॥ ॐ १ क्रीं गायत्री फूँ वतु
नाग लोक शा गगर्द्ध गामिनी नाग लोक अष्ट गस अक्षवणी नागानन्द देव ना
गाम्बा वृक्षा बिल लक्ष्मी काटि सिद्धि वक्षा बिल लक्ष्मी काटियाग्निनी पायू ७ ॥ नाभि
मध्ये ॥ ॐ १ क्रीं फूँ वतु कुन्द नील अनन्त लोक शा गगर्द्ध गामिनी अनन्त लो
क अष्ट गस अक्षवणी अनन्तानन्द देव अनन्ताम्बा अनन्त लक्ष्मी काटि सिद्धि
अनन्त लक्ष्मी काटियाग्निणी पायू ७ ॥ बुद्धि स्कन्ध ॥ वं १ हं ९ सं ९ वलि ॥ ७

शिव न्रयप्रकं न्यास ॥ ॥ ननना दिसमस्त पूजन ब्रह्मा पिनं स्नलं । पात
कीना लिनं सर्व्व लतुनं न्यास माया न ॥ न्यास स्नल ॥ ॥ ॐ ऐं ह्रुं अनन्त गदि
पाद द्वयया पूजा ॥ ॐ ऐं ... कालवर्णं थिनु लः द्वयया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रिं श्रीदन्तं थि
ऽंघ द्वयया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रौं उग्रकूर्मं थिड जानु द्वयया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रूं वामनं थि
कटि द्वयया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रुं कामनं थि लिङ्गस्थानया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रूं पिनाकं थि
भय ॥ स्थानया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रं ब्रह्मा थि ब्रह्म स्थानया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रुं सूर्यनं
थि नाभीया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रुं सामनं थि पृष्ठ मध्ये पा पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रुं प्राणं थि

ऽदयया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रें जीवनं थि हृदयया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रां विष्णुनं थि क०
या पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रौं रुद्रनं थि भाल मध्ये या पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रः उग्रनं थि शिर ॥
स्थानया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रः सदाशिवनं थि ब्रह्मस्थानया पूजा ॥ ॐ ऐं ह्रं ... थि
न्यास रूपाय कायया पूजा ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ शिवं थि न्यास ॥ ॥ उदयार्क
निभ ध्यायेद्दीप्यमान सूर्य रूपसी । स्थानस्थान गतं ध्यानं गं थिधा ठगादी
चिर्न ॥ अष्टवर्ग थि न्यास न अमर ब्रंयसाधय ७ ॥ ब्राचासिद्धि ॥ पूर्वक्रो
रुमा क्लानीव नवारुव ७ ॥ न्यास स्नल ॥ ॥ ॐ ऐं क्लीं नासा पूर्व द्वयया पा

पूजा॥ ॐ ह्रीं मुखाय पूजा॥ ॐ यं भगवत्यायपायपूजा॥ ॐ स॰ सर्वात्मन
पायपूजा॥ ॐ कस्तुद्वयपायपूजा॥ ॐ मू॰ पादद्वयपायपूजा॥ ॐ एकाक्ष
नीरुद्राविकोय॰ पायपूजा॥ ॐ दीपवलि॥ ॐ लिनकाक्षनीधारान्यास॰॥ ॥
एकाक्षनीधारान्यासं न्यासं लिर्युकमववथ। पञ्चमुद्राकम येवरुयपाग
कनागनं॥ न्यासफलश्॥ ॥ ॐ नं मूक्रायफट्॥ ॐ ह्रं दयाय पायपूजा॥
ॐ ह्रीं लिनसस्वाहा॥ ॐ श्रीं लिस्वाय्येवौषट्॥ ॐ ह्रं कवचाय हूं पायपू
॥ ॐ ह्रौं भगवत्यायवषट्॥ ॐ अस्त्रायफट् पायपूजा॥ ॐ पूजावलि॥

ॐ लिपञ्चपञ्चकन्यास॰॥ ॥ पञ्चपञ्च न्यासनपञ्चपानकुनाशनं॥
पञ्च [illegible] मीगु [illegible] पञ्चव [illegible] न्यासफल॥ ॥ ॐ ह्रीं हृद
यायपायपूजा॥ ॐ यादिकल [illegible] न्यासपूर्ववि॥ ॐ [illegible] पायपू
जा॥ ॐ दीपवलि॥ ॐ लिनवात्मान्यास॰॥ ॥ नवात्मानं मुर्य न्यासं [illegible] वी
[illegible] ना चिक। [illegible] न्यासं नवात्मानं महाजसं॥ [illegible]
[illegible] नयायपंजल। सर्वदु॰ खविनिर्मुक्ता [illegible] नयदं॥ [illegible]
[illegible] सिद्धिया [illegible] समनगी [illegible] नववीजानियथस्थानवू

विन्यस० ॥ न्यासरूलं ४॥ ॥ ॐ १ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ४ प्र ह्र २ हृदयाय नमः ४ पादु
३ ॥ ॐ ३ धारनं २ गवगनूनू ध्यवं ठलिवस स्वाहा यो पादु ३ ॥ ॐ ३ वठ २ पवठ
२ लिखाये वौषट् पादु ३ ॥ ॐ ३ कह २ वम २ कवचाय हुं पादु ३ ॥ ॐ ३ द
म २ घानय २ भग नेत्राय वषट् पादु ३ ॥ ॐ ३ वि घानय २ विघ्न २ हूं ४ रूह
पुमाय रूह पादु ३ ॥ ॐ ३ सं ७ सुधावाहु रहा वकायया पादु ३ ॥ ॐ दं वलि ॥
ॐ नि सुधानाद न्यास ४ ॥ सुधावाहु न्यसत्ति त्यं सर्वाय धनिवा वं ९ ॥ न्यास
रूलं ॥ ॥ वर्वं पणलसको न्यासी ड क ४ यच्छिमण ॥ सभ ॥ वउर्द्व मयद ४ सर्व वि

घ्निनागवारस्फूर्ट ॥ वतु कार्न्यस दक ७ सासन वि ८ धौ च्छिन ४ ॥ य ४ संसा द्वा
दुवत्स त्यं ९ कि वाशा र्क व स्म य ७ न्यासको वोलिनु धूं विगर्व ननम त्युन ।
तेनगयो य था छ ४ कु ध द र्क पूजा क्रिमा ॥ सर्वेदव विहीने र्यान्यसत्ति त्यं
वो म व थ । पुयहंग स्थपायालि संजागानि दक त्यामी ॥ ॥ न्यमगार्के ॥ न
नम व गुरुं ये वमान वै विनवं तथा ॥ धाता न्यास विहीन चधात न्यास वमान
व ४ धाता न्यास विहीने र्य पुनभव व यार्द्धनी ॥ सा विनालू लू माध्वा निनवर्क
वप्रयधग ॥ विद्यानते ॥ ॥ ॐ १ हं ७ सं ७ सर्व धाता न्यास रहावकायया

पूजा ॥ ॐ वलि ॥ ॐ लिखा ग्नास ४ ॥ ॥ नमो वाम गर्जे नीमा दम्भ जादानर्थ्य
लिवसि पर्य्यन्ती पूष्पभर्क निधाय ॥ स्वाम्मलिव सि पूजने ॥ ॐ जनगलानन्द
देव ऋ विलाम्बादवीया दुल ऋद्ध हासा स्वयं पापूजा ॥ ॐ जनद्रूम्भकान
न्द देव सागोम्बा देवीया दुल ऋद्ध हासा स्वयं पापूजा ॥ ॐ जकीतानन्द देव
सभला म्बा देवीया दुल ऋद्ध हासा स्वयं पापूजा ॥ ॐ जसाकानन्द देव ऋद्ध
हासा स्वयं पापूजा ॥ ॐ जआनन्द देव ऋद्ध हासा स्वयं पापूजा ॥ ॐ जग्रासद्ध
जानन्द देव ऋद्ध हासा स्वयं पापूजा ॥ ॐ जग्रादीकानन्द देव ऋद्ध हासा स्वयं

पापूजा ॥ ॐ जग्रीधननामानन्द देव ऋद्ध हासा स्वयं पापूजा ॥ ॐ जग्रीदवानन्द
देव ऋद्ध हासा स्वयं पापूजा ॥ ॐ जग्री जर्ष्ठ जानन्द देव ऋद्ध हासा स्वयं पा
पूजा ॥ ॐ जग्री कुञ्जानन्द देव पापूजा ॥ ॐ जग्री ऋ पुनानन्द देव ऋद्ध हासा स्व
यं पापूजा ॥ ॐ जहुं ० पापूजा ॥ ॐ देवलि ॥ ॥ ॐ जवृषासन पापूजा ॥ ॐ जसिं
हासन पापूजा ॥ ॐ जऋषाव ऋमाध्य ववदविमल ऋंग्री वृक्षाय ० पापूजा
॥ ॐ जऋषाव ऋमाध्य ववदविमयकंग्रीमाढ्ड्यश्री पापूजा ॥ ॐ जऋषाव ऋमा
ध्य ववद विमलवंग्री कीमाची पापूजा ॥ ॐ जऋषाव ऋमाध्य ववद विमल ४ वै
षूठी पापूजा ॥ ॐ जऋषाव ऋमाघ ववद विमल कंग्री वावाञ्छ पापूजा ॥ ॐ जऋषा

नं २

न अभाय वनद विमल पंत्री ॐ न्नाय श्वे पाथू ३॥ नें ३ अर्घाय अभायवनद विम
लयं प्री बामूर्ण औ याथू ३॥ नें ३ अर्घाय अभाय वनद विम लश्रीमहालक्ष्मी या
पूजा॥ सं ॐ ब्रह्मा आदि ने ले स्था वलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॥ नें ३ हं ॐ आनन्द भैरि
नवानन्दवीनाथि पतय सं ॐ पुष्पाञ्जलिपुष्प पाथू ३॥ नें ३ सं ॐ महा विद्यानाऋ
पत्नीहं ॐ पुष्पाञ्जलि पुष्प पाथू ३॥ नें ३ हं ॐ श्री महा विद्यानाऋ पत्नी सं ॐ पुष्पाञ्जलि
पुष्प पाथू ३॥ नें ३ सं ॐ श्री महा विद्यानाऋ पत्नीहं ॐ पुष्पाञ्जलिपुष्प पाथू ३॥ ॐ
दे वलि॥ नें ३ अर्घाय क्रौं थध्याय स्वाहा॥ नें ३ नै यद्य कू ति नी क्रौं स्वाहा॥ नें ३ न

भा रुगवति ह्रूं कू ति काये स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रौं ह ६ ल नम भ थाम अर्घाय अर्घायामृ स्वी
ह्रां ह्रीं किलि २ विच्चे पाथू ३॥ नें ३ नमः कू ति काये स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रौं ह ६ ल नम
थाम अर्घाय अर्घायामृ स्वी ह्रां ह्रीं किलि २ विच्चे पाथू ३॥ नें ३ रुगवति सिद्ध
ह्रां ह्रीं कू ति क स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रौं थाम अर्घाय अर्घायामृ स्वी ह्रां ह्रीं किलि २ विच्चे
पाथू ३॥ २॥ ल न ऋ य व नीलि॥ मर्त्य मिव॥ आज्ञा॥ निर्वाण मूल विद्या॥ पता
काय॥ पञ्चमालव॥ महानिर्वाण॥ आवाहनादि धूप॥ यं वमहामुद्रा॥ नें ३ य
मुद्रा॥ क्षी धेनुमुद्रा॥ ग्री ज्ञानमुद्रा॥ ह्रूं योनिमुद्रा॥ क्षीं महामुद्रा॥ अर्घपा

पादकमा स्मलिव सिविन्दुमालिं चनी। ॐ सूर्याय पाद्यं ॥ ॐ किनि विश्वकर्मा कना
शेद्र अस्माय स्वर्ण ॥ विसर्जनं ॥ आस्मलिव क्षिनपूर्ष गृही वास्व नीर्थ दृष
नी ॥ कि वित्यूथ नेयप आयागर्घ ॥ नेबपूष्पमाद्योर्ण क्षुखावल्यानि भय
॥ ॥ नेभर्म कावथ ७ ॥ गनाजुलन वाक्नीव पार्जन विन्दूनाम घेल ॥
ॐ अस्मविंशति क्रमाद्यानम स्वर्विं शतिमण्डलि। नमस्कु वर्क वक्ति ह्रं नम
स्कु पवमथुन ॥ नमस्कु तेनवं पवं नमस्कु ह्लानदायकं। अस्मा हृ कवद्वृ काना
यामिनीनी मथवच ॥ क्षेत्रपाल गणादीनां निमयपक्षेत्रपाल की। क्षुल यक्षि

मं सर्वभकाकाव नमाम्यहं ॥ अस्मदादीनां सगणय विवाराणां अयूनाय
न्यभेग्व र्युजन धनल क्ष्मी सं न कनिसकान वृक्ष र्थन्य थोक अस्तकामाथ
स्मसय यक्षं नम ४ पाद्यं ॥ ॐ श्रीनाथाय नम ३ ॥ पूर्ववद्विन्दू नर्यं दद ० ॥ स्वी
कानिकूर्या ७ ॥ कुमारी भोजनविधि ४ ॥ ॥ ॥ पूनर्जलपात्र अर्घपात्र पू
जा पूर्ववत्तलक्षण ॥ आसन सिंदुनादि पूर्ववद्भूषण ॥ ॥ नम गुरूय कि पूजा
॥ ॐ ब्रह्मधर्मागकन्यपाद्यं ॥ ॐ गणनाश नाय पाद्यं ॥ ॐ स्कंदाय पाद्यं ॥

ॐ नानाय पाद्यं ॥ ॐ ह्रीं पद्माय पाद्यं ॥ ॐ ह्रीं वज्राय पाद्यं ॥ ॐ ह्रीं कर्णिकाय पाद्यं ॥ ॐ ह्रीं

कर्णिकासनाय पाद्यं ॥ ॐ ह्रीं पद्मासनाय पाद्यं ॥ ध्यान ॥ ॐ ह्रीं श्वेतवर्णं चतु

र्भुजं दक्षिणे जपमालिकां । वामहस्ते दण्डं कमण्डलुं यक्षिणं ॥ ति

नेत्रं पद्मे नं कृष्णाजिनसुवर्णकं । पद्मासनस्थितं कं दीपं प्रसन्न

वक्त्रं ॥ सर्वदेव शिवार्चनं नमामि गणेश ध्यानं ॥ श्रीनन्दपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं

श्रीमनानन्दपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशानन्ददेवपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं श्रीकीर्ति

नन्ददेवपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं श्रीसंकानन्ददेवपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानन्ददेवपाद्यं ॥

ॐ ह्रीं श्रीसहजानन्ददेवपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं टीकानन्ददेवपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं धनसानन्द

देवपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं श्रीदेवानन्ददेवपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं श्रीयज्ञानन्दपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं श्री

पुरानन्ददेवपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं गुरुपादुकाभ्यो नमः पाद्यं ॥ ॐ ह्रीं बलि

॥ ॐ ह्रीं कादशपादुकायुग्मपञ्चपूजयेत् ॥ आवाहनादि पञ्चमुद्रां दर्शये

त् ॥ विन्दु तर्पयेत् ॥ ॐ ह्रीं त्रिगुणपञ्चार्चनं ॥ ॥ गणाधिपधीपूजा

॥ ॐ ह्रीं गणासनपाद्यं ॥ ॐ ह्रीं पद्मासनसुखासीनं श्वेतवर्णं त्रिलोचनं ॥ त्रि

वक्त्राय कं स्वगावपीनाम नमः शोभितं । गुणा पूर्वक महादेवीयापदं रक्तमान

ज्ञीनी। छमरू त्रिशूल खट्वांगनीलोत्पल सनालकं॥ यात्र विन्दुक नं प्रेष्ठ्वं धी
भातन ग पथ्या धना। ऊँ अप धीकम ध्यान ध्यायां ज्ञीवं विगुडी विगं॥ ॐ ७ ध्यान
पूथयायु॥ ॐ ७ ह्रां श्री सर्वजन ध्यारनीयायु॥ ॐ ७ ह्रीं श्री सर्वजनमोह
नीयायु॥ ॐ ७ ह्रूं श्री सर्वजन उम्मनीयायु॥ ॐ ७ ह्रैं श्री सर्वजन स्तम्भ
नीयायु॥ ॐ ७ ह्रौं श्री सर्वजन आकर्षणीया पू॥ ॐ ७ ह्रः श्री स
र्वजन दुदानुच्छाद नीयायु॥ ॐ ७ सं ह्रीं श्री अपधीकम रुद्राविको यैयायु॥
ॐ देवलि॥ आवाहनादि महामूजदर्णय ७॥ विन्दुगयंदद ७॥ गरुडमाहनी

साधनं॥ ॐ देवलि॥ ॐ स्याथ धीपूजनं॥ ॥ गण ४ श्री वीरार्घ्यं नं॥ ॐ ७ वृषा
सनयायु॥ ॐ ७ सिंहासनयायु॥ ध्यान॥ ॥ ॐ ७ वृष सिंहासनं देवं हिम
कुन्देन्दु सन्निभं। नवकोटि भगवद्विव्यादि पमहावालं॥ वरुडमरुनानं
त्रिशूलीवामधाविनं। चर्याकधानूजालिंग कपालपूर्णुपात्रभा॥ दक्षयात्रि
वं कंकृत्वा सव्य हस्त पूधाविनं। वामभारकुंगणादवीश्यामांगनवजीनी॥
वचानय कनाद्वी त्रिनेत्रादिव्य दृष्टिनी। दिव्यनलोंग हर्षांनी दिव्यवस्त्राव
भातिना॥ एवं ध्यात्वा महादेव धीकर्णं पवनमध्यनं॥ ॐ ७ ध्यानपूथयायु॥ ९

॥ॐ ऐं ह्रं ऐं आमन्दभणकि हुंज्वालान्धवीना विघनथस्यं ऐं श्रीश्री कं०नाथस्व
णकिसकिणायपादु॥ ॐ ऐं सं ऐं श्रीमहाविद्याणडेश्वरीहं ऐं श्रीश्रीकं०
नाथस्वणकिसकिणायपादु॥ ॐ दंवलि॥ आवाहनादिपिठलयानिमुद्री
दर्शय०॥ बिन्दुतर्पयदथ ७३॥ ॐ सिश्रीकंठनाथार्चनं॥ ॥ नानावक्काथ्या
सार्चनं॥ ॐ ऐं हंसासनपादु॥ ॐ ऐं वृषासनपादु॥ ॐ ऐं मयूरासनपादु
॥ॐ ऐं गरुडासनपादु॥ ॐ ऐं महिषासनपादु॥ ॐ ऐं गजासनपादु॥
ॐ ऐं प्रेतासनपादु॥ ॐ ऐं सिंहासनपादु॥ ॥ॐ ऐं अघाप अमाधव

वदविमलम्रं श्रीब्रह्मायणी विद्यापादु॥ ॐ ऐं अघाप अमाधववदविमलकं
श्रीमाहेश्वरी विद्यापादु॥ ॐ ऐं अघाप अमाधववदविमलवं श्रीकौमारी वि
द्यापादु॥ ॐ ऐं अघाप अमाधववदविमलटं श्रीवैष्णवी विद्यापादु॥ ॐ ऐं
अघाप अमाधववदविमलणं श्रीवाराही विद्यापादु॥ ॐ ऐं अघाप अमाध
ववदविमलपं श्रीइन्द्रायणी विद्यापादु॥ ॐ ऐं अघाप अमाधववदवि
मलयं श्रीचामुण्डा विद्यापादु॥ ॐ ऐं अघाप अमाधववदविमलशं श्रीमहा
लक्ष्मी विद्यापादु॥ ॥ दंवलि॥ आवाहनादि॥ मुद्रादर्शय०॥ ॐ सिनाथग
३१

लजूतन॥ ॐ ह्रीं महाकालाय बलि गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ १ ॐ ह्रीं महाकालाय बलि
गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ १ क्रां क्रीं क्रूं क्ष४त्रपालाय बलि गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ १ यक्षवि
द्यागिणीनां पी०डाकप्रजासहजाजागजानङ्कलडासन्धोहजा४॥ यक विद्या
गिणीनां खचचरी तृचरी।गोचरी तकाकरी छन्दचरी ग्रहचरी यत्र यत्र स्थिता
भूतवाहकीनां त्रिजटासिनीनां यक्षोपय नीच बलि गृह्ण २ मम सिद्धिं कुर्वन्तु
हुं हुं स्वाहा॥ ॥नमासनवलय ध्वर्जन॥ ॐ १ पद्मासनाय पाद्यं॥ ॐ १ सिंहासन
पाद्यं॥ ॐ १ महिषासनपाद्यं॥ ॐ १ कुम्भायपाद्यं॥ ॐ १ निर्गुणाय पाद्यं॥ ध्या

न॥ ॥ॐ १ उग्रचण्डामहादेवी ध्यायद्भगवतीशिवा। तप्तचामीकरनाभा
साविद्युत्कोटिसमप्रभा॥ पीनवक्षस्थलानागगिनत्रावानूहासिनी। किंची
टीकुण्डलाकाली केयूरनामणिनायुता॥ नतमाला विविधंण हालमालावन चिन
।अष्टादशभुजाक्रान्तादिव्यवस्त्रागहविना॥ खड्गवाणंतथा चक्रं वज्रांकुशव
चाधनं। तमयुद्भधनापन्नुदक्षिणेषु विनजयं॥ कुटकं धनुर्गदापाशंजोपाश
तर्जनीखट्वाङ्गंकोपेलस्यकण्ठपाशान्तु विन्दुहसी ॐवामके॥ सिंहासनस

मातृयामहिषादनाञ्जिका॥महिषासूचनिर्द्धयीवसर्वदेश्वविनाशनी॥ऊधाथा
तशक्ताववद्दंगतमनुक्षेविनाऽनुहवचण्डवचण्डवचण्डायाचशुनाग्नि
भा॥चण्डाचण्डवनीधेवचण्डचूषाभिवण्डिका॥नवमीवायवण्डावमथ्यकाञ्चि
प्रशान्ति ता॥भाचनानाचूर्णाक्षुसानीलाशुक्लावधूम्निका॥पीताचपाण्डुलाक्षुद्रा
लालीः क्राहनिष्किपा॥महिषाथयमाशस्तीलचेचशुह्मस्थिकाक्षुद्धवृ
ष्टनयक्षावाउयचण्डाञ्जिकाक्रमा॥नवं यथात्वामनाथवीमहात्तगवतिन

मार्कण्ड॥ भानुवृषयायावू॥वं॥नमःश्रींक्रींचण्डवाया॥ नमःश्रींक्रींयायावू॥सू
लमन्त्र॥ॐक्रींवाजयद्धक्षुऊयवचण्डनियमर्द्दनाक्षुं सदानन्दवांमा
ह्रंसःमत्र्यहश्यनमःस्वाहायायावू॥ ॥वं॥ऊ ऊचरुवण्डीथेयायावू॥वं॥
ऊऊग्रचण्डायैयायावू॥वं॥ऊऊवण्डायैयायावू॥वं॥ऊचण्डचण्ड ... नी
[illegible]कायैयायावू॥वं॥ऊऊवण्डायैयायावू॥वं॥नवंचण्डवखेयायावू॥
वं॥ऊभीचण्डरूपायैयायावू॥वं॥ऊऊ ऊः ऊ निवण्डिकायैयायावू॥ ॥

बलि॥ ॐ ज मँ ०ग्राउ य वज्र थे यावू ७॥ मध्य॥ ॐ देवलि॥ ॐ ज ॐ श्री सिद्धि वा
मुण्डे वलि गृह्न २ स्वाहा॥ आवाहनादि थानिमू दा दर्गन्ध ७॥ विं दूद ध ७॥ ॐ
लिकगवलार्चनं॥ ॥ब्रह्मावामागध्वनी दूजनी॥ ॐ जय आसन वायू॥ ॐ ज नि कि टी
पि कि टो कूटवुणु वा गीध्वनी वृद्धमहनाविकाविघ्नयायू॥ ॐ देवलि॥ तिदं गन
दूजनं॥ ॐ जनि किटी हृदयायनमः यायू॥ ॐ जपि किटी शिवस स्वाहा यायू॥ ॐ
ज कूट वुणु शिखायेवौषट् यायू॥ ॐ वागीध्वनीकवचाय हुं यायू॥ ॐ ज वृद्धम

हनाविकानत्रत्रायवौषट् यायू॥ ॐ ज विघ्न जुम्भाय फट् यायू॥ ॐ देवलि॥
आवाहनादि थानिमू धूपदीप ७॥ वि दूद ध ७॥ ॐ लिवामाध्वनी दूजनी॥ ॥अथ
क्रममण्डलार्चनं॥ वज्रासनं॥ ॐ ज ग सं वाध्य व त से त्रि वृ ग य न यू र नागय
धाडुकाणं क्षीवाक्षु धातसानं ज ल त ज द ल य र ह्रत वृ लं र्ज्युवासं॥ धाथायद
वकाइं थिरु वन विधिनं सेव गाढ्युहयूके कावेथ्यो हतिमालासवतयविवृ
नै थांदयुलयवक्षी॥ ॥ॐ ज आ अनागकथ यायू॥ ॐ ज नुन नासनायमा
यू॥ ॐ ज स्त्रीयायय यायू॥ ॐ ज नागय यायू॥ ॐ ज भस्माय यायू॥ ॐ ज यज्ञाय यायू॥

नं ॐ कैव लाय याचू ॥ नं कण्डिकाय याचू ॥ नं ॐ वन्द मण्डलाय याचू ॥ नं ॐ वन्द
मण्डला वियनथ वृक्ष थ गासन याचू ॥ नं ॐ सूर्य मण्डलाय याचू ॥ नं ॐ
सूर्य मण्डला वियनथ विष्णु थ गासन याचू ॥ नं ॐ जून्नि मण्डलाय याचू ॥
नं ॐ जून्नि मण्डला वियथ रुद्र थ गासन याचू ॥ नं ॐ साम मण्डलाय याचू
॥ नं ॐ साम मण्डला वियनथ ईश्वनथ गासन याचू ॥ नं ॐ डाकि मण्डु
लायया चू ॥ नं ॐ डाकि मण्डला वियनथ सदाशिव थ गासन याचू ॥ नं ॐ
येक्ष थ गासनाय याचू ॥ नं ॐ नमः श्री गुरू वीर योगिनी ... याचू ॥ नं ॐ

म्लूँ य वद्दीय वालनी देवी महादंष्ट्र दन्त वाल श्लीँ श्री ... नयू ग श्री ... ति
... नमः ... म दायी १० श्री डाति याम्वा देवी श्री ... तीश्र नाथ देव श्री न काम्वा देवी
श्री ... गानन्द देव श्री ... विमह न्ना निव ... श्री क देम न्द्र ... श्री उ देय
मिवियद्ध ... श्री वद्दक नाथ ... त वाल विष्णु श्री ... कानन्द देव याचू ॥ त्रिका
णम ... ॥ नं ॐ ... वन्द दीय ... नाम्वा देवी श्री ... यालश्लीँ श्री ...
नायू ... श्री ... श्री मह ... मण्डल यी १० श्री ... म्वा देवी श्री ... नाना
... देव श्री क वाल म्वा देवी श्री कुनं गी ... नन्द देव श्री क्का विमह न्का वि

वृकेश्री क्षीनवृ क्षे ह्रिमगिविपर्वं मश्रीयमदण्डु क्षेत्रपाल यदश्रीकु
ह्लिकानन्द देवपावृ ॥ मेघवर्णकाल ॥ २ ॥ वं ७ मूं जनद्वीपकलनी दे
वीश्री मोपाल क्षेत्रपाल ह्रौंश्री दायनवृक्षेश्रीयु ल्तु मिविमहामन्त्र वी०
श्रीयूर्णुमाद देवीश्री यू ल्तु नाथ देवश्री चण्डकामा देवीश्री वज्रीसानन्द
देवश्रीकुकाविमहकाविवृक्षे श्रीविड्ल निवृक्षे यूनल गिविपर्वं मश्रीविम
लक्षेत्रपाल वृक्षश्रीकुलिकानन्द देवपावृ ॥ वायुकाल ॥ ३ ॥ वं ७ पूं व

ल द्वीप धर्म्मादेवीश्री महाकाय क्षेत्रपाल श्री श्रांक ह्लि यूगश्रीकामवृ
पनदायवी०श्री कामविड्या म्वादेवीश्री कामीमना थदेवश्री महाकृमा
म्वादेवीश्री मदरीगानन्द देवश्रीकुकानिमहकावृक्षेश्रीवेलवृक्षे साम
गिविपर्वं मश्री वृक्षदण्ड क्षेत्रपाल वृपानागश्रीकुलिकानन्द देवपावृ ॥
धूम्रवर्णकाल ॥ ४ ॥ वं ७ क्लूं महावत्नद्वीप धर्म्मादेवीश्री महाकाय क्षेत्रपाल
श्रौंश्री जूवनानयूगश्रीयनायनचन्द्र वी०श्री नन्दि न्यामा देवीश्री नन्दी

गनाथदेवश्रीमहालक्ष्म्याम्बादेवी मण्ड लानन्ददेवश्रीकुब्जिकाविद्यादेवीश्रीपति
जागनन्दश्रीअमृतवल्लीमकरध्वजश्रीविजयनाथश्रीनाथयालसर्व्वया
वीस्त्रश्रीआनन्दामीनश्रीकुब्जिकानन्ददेवपादुं ॥ एतमध्ये त्रिकोणवायव्य
त्रिमासन ॥ ७ ॥ कुलिपीठ देवक ॥ ॥ ओं ऐं श्री उड्डयानपीठे श्रीकुब्जिका
ये पादुं ॥ मध्ये ॥ १ ॥ ओं ऐं श्री जालन्धरपीठे वर्व्वनाथे पादुं ॥ नैरृत्ये ॥ २ ॥ ओं ऐं
श्रीमहेन्द्रपीठे श्रीमहान्तारिकाये पादुं ॥ वायौ ॥ ३ ॥ ओं ऐं श्रीकैलासपीठे श्री
कमलाये पादुं ७ ॥ पूर्व्वे ॥ ॥ विशुद्धी पूर्व्वकोणयद्धाणस्य मध्ये ॥ कुलि
पीठे वटुकं ॥ ॥ ओं ऐं श्री आदिविमलमहानाथे पादुं ॥ पूर्व्वे १ ॥ ओं ऐं स
र्व्वज्ञविमलपुलिन्दनाथे पादुं ॥ दक्षिणे ॥ ओं ऐं योगविमलश्रीसन्तनाथे पा
दुं ॥ उत्तरे ३ ॥ ओं ऐं श्रीसिद्धिविमलवर्व्वयकाये पादुं ॥ पश्चिमे ४ ॥ ओं ऐं
समयविमलश्रीकुब्जिकाये पादुं ॥ मध्ये ॥ ५ ॥ कुलिविमलपञ्चकं नैरृ
त्यानादलनाउउरे ॥ ॥ ओं ऐं मालिन्ये पादुं ॥ ओं ऐं मतिन्विकाये अग्निहावि
हाये पादुं ॥ ओं ऐं गोचनाथे पादुं ॥ ओं ऐं खवुनाथपादुं ॥ ओं ऐं हूंवना
थे पादुं ७ ॥ ओं ऐं निक्तस्ये पादुं ॥ ओं ऐं कुञ्जाये पादुं ॥ ओं ऐं अग्निस्का

नगगमस्वाथे वा यू॥१२॥ ॐ डिमालिन्यादि द्वादशयक्त्राणां पूर्वकाणा
पियद्वामक्षस्वपूजन॥ ॥तं ज क्रौं क्रौं मरुनाति काथे जां ग्लूं कलाक्षे सां
सीं सूं म्मां विशुद्धि साकिनीथे स्वक्रमि पूनी खमी सानन्द देव पायू॥तं ज
घानजूं घानजू घानाम स्वी वद्धू चूपाथे हूं पूं मक्राद्वे कौं कीं कूं क्मां
जूनाहृत काकिनीथे गुण पूनी विज्ञानानन्द देव पायू ७॥तं ७ कौं कीं कूं
वर्वनधिस्वक्रूं घूं लालीं लूं ल्म्यां मणिपूरक लाकिनीथे मरु पूनी
संविसानन्द देव पायू॥तं ७ कूं ढिकाथे कुलदीपाथे डीं डूं पाया

स्वे वं वूं म्यां स्वाधिष्ठान नाकिनीथे धाध पूनी जनपदी सानन्द देव
पायू॥तं ज नमारुगवतिहनकमलाथे जां नुं जुवणा द्वे जां जीं जूं
ग्मां आधान ता किनीथे मन ४ पूनी मित्रानन्द ज व पायू॥तं ज किनि०
विश्वं कांकनाथे ज ४ वूं ग स्वाधूं ढां हीं दूं म्मां आ हा हाकिनीथे प ४ पू
नीपूं ज स्वरुणी सानन्द देव पायू ७॥तं ७ थां यीं यूं यूं म्मां लालाट यन्दोली
थे यन्दोणी पूनी क्षामी सानन्द देव पायू॥७॥ ॐ त्रिसाकिन्यादि वन्दव
यथमलिपूनकशत॥ ॥तं ७ मनानुगाथे पायू॥ नुं ७ चन्द्रिस्वे पा

हा ॥ ओं विद्युन्मालायै स्वाहा ॥ ओं विद्युल्लतायै स्वाहा ॥ ओं घोषवत्यै स्वाहा ॥
ओं सूक्ष्मायै स्वाहा ॥ ओं निर्म्मलायै स्वाहा ॥ ओं निर्विकारायै स्वाहा ॥ ओं
निरालम्बायै स्वाहा ॥ ओं निरञ्जनायै स्वाहा ॥ ओं लीलायै स्वाहा ॥ ओं लीला
यै स्वाहा ॥ ओं कलायै स्वाहा ॥ ओं निरामयायै स्वाहा ॥ २८ ॥ इति नवानां
मध्ये पूर्व्वकोणे दिग्भागे तत्र यन्त्रे पूजनं ॥ ॥ विशुद्ध पूर्व्व कोणेषु
सप्तविंशति नाडिका मणिपूर्वके तु वायव्ये स्वाधिष्ठाने तु षोडशाः ॥ आ
ज्ञाचक्रे कोणेषु ... मध्ये तु यजेत् ॥ ॥ ओं कुण्डलिकायै कुण्डलिका
नन्दभैरव स्वाहा ॥ विशुद्धमध्ये ॥ ओं मित्रायमित्रानन्दभैरव स्वाहा ॥ पूर्व्वे ॥ ओं
उड्डीयानन्दभैरव स्वाहा ॥ दक्षिणे ॥ ओं षष्ठायषष्ठानन्दभैरव
स्वाहा ॥ उत्तरे ॥ ओं चर्याय चर्यानन्दभैरव स्वाहा ॥ पश्चिमे ॥ ६ ॥ इति वि
शुद्धचक्रे विशुद्धमध्यकोणे ॥ ॥ ओं अकुलायै अकुलानन्दभैरव स्वाहा ॥
ओं कुलायै कुलादि आनन्दभैरव स्वाहा ॥ ओं नीलायै नीलविमलानन्दभैर
व स्वाहा ॥ ओं मित्रायै मित्रानन्दभैरव स्वाहा ओं कौलिनायै आज्ञान
नन्दभैरव स्वाहा ॥ ७ ॥ इति अकुलादि देवता आज्ञाचक्रे नवकोणेषु ॥

॥ ओं जष्ठी ॐ ज्ञायेवृद्धकर्म्मानन्दप्रव पायू ॥ ओं ज ज्ञानायेम ध्यकर्म्मा
नन्दप्रव पायू ॥ ओं जक्रियायेवालकर्म्मानन्दप्रव पायू ॥ ओं जकुब्जिका
ये ज्ञालिसानन्दप्रव पायू ॥ ४ ॥ ॐ गुरु वस्तु पश्चिमकालो ॥ द
क्षिणपश्चिमडलन म ध्ये ॥ १८ ॥ वस्तु व्यपक्षे कीवद्वावउ वीपश्चमंव
गुष जुरावि शति ब मनेव पूउ यन्नभा स्तुग ॥ पूर्वपीठ वस्तु क्व
निष्ठिवनस्तुव नवीमलपक्षे कलवायथ्यो क्वाणसंस्कातलनवकसक्व
धूगयातुस्क ॐ गुलो । कूलाग्रयपक्षे कंतुपहनदिसिगगपश्चिमपूनू
वत्वासा ध्याविश्रधिरधनमण्डलिसगर्जेनवैशाकुंजगा ॥ ॥ ओं ज हुं
ले सं ले पायू ॥ नमः ॥ ओं ज आवाहन का यनं सन्निधानं सन्निधायनं
जूवस्तु नेमन्त्रास सकलीकरणं सांगायां गयायकगर्वन्यासनकाम
नादर्शनं ॥ पूयक ध्यान याग्रावमनं जर्यंगडदर्शननिर्म्मकुनस्नानवि
लयनादिवस्त्रालीकालीवन्धनादिहवलं ॥ ॥ नमाहवनयूजनं ॥ ओं ज
हं सूर्य्यमण्डलायद्वादशकालात्मनं यायू ॥ पूर्वदुर्द्धनखा ॥ ओं ज सं सो
ममण्डलायषोडशकलात्मनं यायूजा ॥ दक्षिणमध्ये नखा ४ ॥ ओं ज नेजुम्नि

मञ्जुलायदगधमं कलात्मभयापू ॥ ऊलथ ऊर्द्धवाह्मनखायी ॐ नि ऊर्द्ध

नपूजनं ॥ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ऊर्द्धवक्त्राय पाद्यं ॥ ॐ घोर ऊघोर ऊघोराम

खीपूर्ववक्त्राय पाद्यं ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं दक्षिणवक्त्राय पाद्यं ॥ ॐ ह्रूं वृद्धि

काथे ऊत्तरवक्त्राथे पाद्यं ॥ ॐ नमो भगवति पश्चिमवक्त्राय पाद्यं ॥ ॐ

किनि २ विश्वकोकनाथे पश्चिमवक्त्राय पाद्यं ॥ मार्गं गवक्त्र पूजा ॥ ॥

ॐ नमो भगवति हगकमलाथे कांश्री हृदयाय नमः पाद्यं ॥ ॐ यादि

शिवगिरवाकवव नमस्त्रानं पूजा ॥ ॐ ध्यै नैपृथ्यवायो ॐ ह्रीं ॥ ऊस्त्र

वऊद्धिक्त ॥ लयांग पूजा ॥ ॥ ऊतहूँ लमं कूटहयीं ॥ ऊवनं ॥ यक्षमहाम

द्रादगनं ॥ ॥ नमो स्वच्छवक्त्र पूजनं पूर्वादि ॥ ॐ ऊऊ ॐ ह्रीं ऊदुपृपृ

ॐ नवशा ऊज ऊ ॥ ऊवर्णलिलाः ऊ रत्नाथे वक्त्रा मे सर्वमङ्गलाथे वे

श्वाथे ॐ हे कुड़ि काथे ऊ दक्षिणवाय पाद्यं ॥ १ ॥ ॐ ककगघङक वर्ण

मखवानाणस्वीं ॐ लाथे माहेश्वरीच ह्रिकाथे गुष्ठिन्थी ऊ नथकुडि

काथे ॐ पश्चिमवाय पाद्यं ॥ २ ॥ ॐ चछ जझ ञ ववर्णकछुकाला

पूर्व हाथे कौमानी भाग थे वर्लियान्धे कुडिकाथे ऊत्तरवायया

पू॥ नं ७॥ ०उ ठ ण ट वर्ण दृ पि जू ह्वा सम्प्र वायवे स्वाये ज व सिद्धी वषि
कि थ्येने पु थ्यकू ह्लिकाये पू ह्लोसेन वाय वायू॥ ५॥ नं ७॥ त थ द ध न त वर्ण
नाश्रो जय म्ह्यायूपॅ साये वाना ही नद्दा वि काये कण्डुनी वायू॥ ६॥ कू ह्लि काये
७ ह्लोसेन वाय वायू॥ ७॥ नं ७॥ प फ ब भ म य वर्ण पुष्ठ व वि ज त्र वाये स्तु
ष्टानी कि लि किलाये न ज विनं वाय वी कू ह्लि काये न ह्लोसेन वाय वायू॥ ६
॥ नं ७॥ य र ल व यवर्ण [illegible] ॥ न काम कण्ठी वाये वा मण्डा ये काल ना त्री क्कि पि
नि काये क्को थ्ये कू ह्लि काये अ ह्लोसेन वाय वायू॥ ७॥ नं ७॥ श ष स ह [illegible] व

र्ण वाधधवी काट ज ह्ला ये म हाल न्ही ही यणी ह्रं विनी काषि क्ष ज्ञा स्ये कू ह्लि का
ये जू ४ ह्लोसेन वाय वायू॥ ८॥ जू त कू ठ द ये अवमनम प्रायश्चित्ते॥ शुभ
[illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ नं ७॥ गगनानन्द देव वायू॥ नं ७॥ कुसु
मानन्ददेव वायू॥ नं ७॥ प्र मानन्ददेव वायू॥ नं ७॥ हेनवानन्द देव वायू॥ नं ७
[illegible] वानन्द देव वायू॥ नं ७॥ कमलानन्द देव वायू॥ नं ७॥ भिवानन्द देव वायू॥
नं ७॥ नामानन्द देव वायू॥ नं ७॥ हे सानन्द देव वायू॥ पूर्वाचिम [illegible] ॥
ज ठ कू ठ द ये अव मने॥ य क्रम हाम प्राय डनि॥ शुभ [illegible]

पूजयामि ॥ ॥ नम ॥ आज्ञापय पादुकां पूजयामि ॥ ऐं ५ सूर्यानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५
भीमानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ स्वच्छानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ गम्भीरकानन्ददे
व पादू ॥ ऐं ५ सिद्धानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ ज्ञानानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ विज्ञा
नन्ददेव पादू ऐं ५ नित्यानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ स्वरूपानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ वि
मलानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ स्वआनन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ मृडानन्ददेव पादू ॥
ऐं ५ वल्लानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ केशवानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ अमृतानन्दे
व पादू ॥ ऐं ५ सीतानन्ददेव पादू ॥ ५ ॥ पूर्वादि दिशा ओड्यानाथ ॥ अग्र कूटदे

ये ॥ आवर्तनं पञ्चमहामुद्राय ब्रह्मने ॥ ॐ षडनाथ ओड्यान ॥ ॥ ग्र पूर्व
पूर्वपश्चिम ओडदल संपूज्य ॥ ऐं ५ कुलाधीश्वरानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५
कुलाधीशितानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ कलिकाधीशमथानन्ददेव पादू ॥ ऐं
५ कुलाधिवीर्यानन्ददेव पादू ॥ ५ ॥ पूर्वचतुर्दल पीठपूर्वेण पूजय
त ॥ ॥ ऐं ५ कुलाद्याधीशोड्यानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ सिद्धाधीशसिद्धानन्दद
देव पादू ॥ ऐं ५ लक्ष्म्याधीशविमलानन्ददेव पादू ॥ ऐं ५ कुलसन्ध्या
धीलाकानन्ददेव पादू ॥ ५ ॥ दक्षिणचतुर्दल कुलवपूर्वेण ॥ ॥ ऐं ५

न काय उ ... आनन्द देव पा पू ॥ ॐ सास्माय ... आनन्द देव पा पू ॥
ॐ विकलाय ... आनन्द देव पा पू ॥ ॐ ... नाथ ... कुला
नन्द देव पा पू ॥ ५ ॥ ... चतुर्दल ... पूजनं ॥ ॥ ॐ ... मा ...
... आनन्द देव पा पू ॥ ॐ मनाक्षाय ... आनन्द देव पा पू ॥ ॐ ... मना
... यानन्द देव पा पू ॥ ॐ ... नाथ ... आनन्द देव पा पू ॥ ४ ॥ प
श्चिम चतुर्दल ... पूजनं ॥ ॥ ... ॥ आवाहनं ॥ ... दर्श
नं ॥ पुनि ... नाथ शिव शक्ति ... पूजनं ... ॥ ॥ ...

पूजनं ॥ ॐ पा पू ॥ ॐ ह्रां पा पू ॥ ह्रीं पा पू ॥ ह्रूं पा पू ॥ ह्रौं पा पू ॥ ॥ ...
... पूजनं ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ... पालाय पा पू ॥ ॐ गं गां गूं
गैं गौं गः ... कुल गणेश्वनाय पा पू ॥ ॐ ह्रीं क्रीं कुल ... वटुक
नाथाय पा पू ॥ ॐ यां सर्व योगिनीभ्यो पा पू ॥ ... नाके
॥ पुनि आधार ... पूजनं ॥ ॥ ... पूजनं ॥ ॐ लूं इन्द्राय पा पू ॥
ॐ रूं अग्नये पा पू ॥ ॐ मूं यमाय पा पू ॥ ॐ क्षूं नैरृत्याय पा पू ॥ ॐ
वूं वरुणाय पा पू ॥ ॐ यूं वायवे पा पू ॥ ॐ सूं कुबेराय पा पू ॥ ॐ

ह्रूं ईशानाय वायू ॥ वं ॐ ऊं ऊर्द्ध्वाय वायू ॥ वं ॐ ऊं ऊर्द्ध्वाय वायू ॥ वं ॐ ह्रूं
वायू ॥ वलि ॥ ऊं त्रिलोक पाल ॥ ॥ कालादि पूजनं ॥ वं ॐ कालाये वायू ॥ क्री
ऊं म्बवे वायू ॥ श्री कवन्धाये वायू ॥ क्रूं नन्दन वनाय वायू ॥ क्षौं वायू ॥ मम
त्रिकोण मध्ये ॥ वं ॐ गवासन वायू ॥ वं ॐ वृषासन वायू ॥ वं ॐ सिंहास
न वायू ॥ वं ॐ वह्नि पद्मासन वायू ॥ ॥ ध्यान ॥ वं ॐ नील यक्ष नमानव
नेत्र य पर्श्व कपालिका ॥ विचित्र वर्ण धनीया वतन स पाल्कि वर्द्धित वह्निनादि

सितांशाञ्ज कृतांगु ध्वजितै नव ॥ कदानालाग ध्या वांगु कावि कदि सुहास्य
वान ॥ विद्रु कुलवक्र ध्वजा पानंवय कवा कूलि ॥ वालि जानजा ध्युमालायु
काल यक्र केकेप ॥ जचा दाकूद यस्या कक वम्मा वृत विषुद ॥ दवावतामा
मानव सधव सं ल्कि मानव ॥ ॥ वं ॐ नीला ञ्जन समप्र स्याक्रद्धि दुवामहा
दवा ॥ वद्ध कालादा यदा ऊ जा स पल्किन त्तेवर्द्धिता ॥ मूर्त्त मालधनी श्री दु
हा कवाल कानना ॥ ऊ हार्द भव काधवीवद्ध पार्द्ध ऋि शनूहा ॥ याद्युवर्म
यनीधानं सिंह च भाल नीयका ॥ दिव्यारु वण्डु वानी ऊहाद हास्य काछिनी

॥ त्या ॥ यी गं जतवक्रं उ जनं ध्याम स सनि नं ॥ दक्षिणे कृष्णवर्णं च य
त्त मुखाव्य दा गि रो ॥ पूर्व वक्त्रं नवदक्रं कामी गन स्फ टि कायमं ॥ सकस्तत्वे
सं कामामूर्द्ध वक्रं यन्ना विद्धिम ॥ सर्वं दं ष्ट्राकराला तानि वक्रा णां कानि सि उना ॥
ऊ त्राव्य त्या ॥ यव वामि कूं छ्रि का यामहान्तिय ॥ दक्षिण वरत्र थारम ण वा
मेथेवं वि जानथ ॥ त्रिशूलं च क्रं वकाली जू कूर्ग धचक हे कं ॥ दक्षिणे वाम
भाय श्चा ती लात्यत्त सनान कं ऊन्य ञ्जमूतु खड्ग घण्टा दुसो धनू सथ ॥ क
पा लं वामकं या कं सिंहा सं नाग वासनो ॥ ॐ जं क्रमथवथवीस ध्यानयू थपायू

॥ ॐ तिमरध्यावि विन्त्या ॥ ॐ जं हं ॐ आनन्द शक्ति से च वानन्द वीना वि यन थ स ॐ
ग्रुं तिं यू थ पायू ॥ ॐ जं सं ॐ महाविद्याना ॐ स्वचीहूं ॐ ॐ ग्रुं तिय यू थ पा
यू ॥ ॐ जं हं ॐ आनन्द शक्ति ह च वानन्द वीनाभि यन थ स ॐ वायू ॥ ॐ जं सं ॐ
महाविद्याना ॐ स्वचीहूं ॐ ग्रुं तिं यू थ पायू ॥ ॐ तिमरध्ये ॥ ॥ ॐ जं ॐ घ
म जां थ धान क्रौ धाव धावेन नक्रं ॐ सर्वेन ॥ सर्वे सर्वं दं क्रूं स ॥ धां नूं द
नूं थक्र ॥ पायू ॥ ॐ जं नं च नक्रं छि नी ध्रूं ॐ त्रां क्रांक र्वनी क्रीं कामाग द
नं ह्रीं स्त्री नहा ध्यानकानणी न सौं स ॥ श्री याद ॥ ॐ जं नभान गवति ध्रूं च

त्रिकाये क्रां क्रीं क्रूं धा म जु धा म जु धा ना म स्वी क्रं क्रं कि नि २ विद्वं याचू ॥ नं ओ
नम ॐ त्रिकाये स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं ह ऊलनम धा म जु धा म जु धा नाम क्रं क्रीं वि
नि २ वि द्वं याचू ॥ नं ओ तगवति सिद्ध क्रां क्रीं कु त्रि क क्रां क्रीं क्रौं स्वगनं
धा म जु धा नाम स्वी क्रं क्रं कि नि २ विद्वं याचू ॥ त्रिवनीडि ३ ॥ आवाहन स्था
पन सन्निधान सं नि भाष नावगुं०न कवची कलणानि स्नान वा धा वमनी
याचीनिवन्यन विसर्जन पनवीन तस्म चीवमा ह नी वीना ढाग जु तिवहि

ह लु यूय धूप ह लनाम्बु लाधि मेन द्वं याचू ॥ यक्ष सकाम ब्रायदर्शन ॥
नं ओ ह ह याचू ॥ नं ओ याचू ॥ ॥ पुनर्म ध्य पूजन ॥ नं ओ क्षौं शिवगत्व
सिकान ज्वा ये याचू ॥ नं ओ धा म क्रां जु पुनम धा म जु धा नाम स्वी ही म ही
वणीवम २ दम २ पिव २ वन २ वन २ नं क्रीं क्रूं फ्रुं ह २ विधात वाये जु पन
ये याचू ॥ नं ओ नं क्रीं क्रूं ह २ आत्मन वाये यनाय वये याचू ॥ हुं ति तिन ल्वं
न पूजनं ॥ ॥ नमाव कवव ण शुक्र चव लौ पूजन ॥ नं ओ क्रूं नकवव ण श्री
याचू ॥ नं ओ स्कं शुक्र चवण याचू ॥ नं ओ हं श्री चनमभा ह चव मिश्रवव नण ना

पू ॥ कुलिबनपदूजन ॥ ॥ ओं ऐं ह्रौं श्रीं आनन्दशक्ति हेनवानन्दवीनाधिपत
थसं श्रीमहाविद्यानाज्ञ्यनीक्रमपदवूपदवनी श्रीवलिग्र क्रं २ स्वाहा ॥ ओं ऐं
सं श्रीमहाविद्यानाज्ञ्यनीहं श्रीक्रमपदवगी श्रीवलिग्र क्रं २ स्वाहा ॥ ओं ऐं ह्रौं श्रीं
आनन्दशक्ति हेनवानन्दवीनाधिपतनथसं श्रीमहाविद्यानाज्ञ्यनीक्रमप
दपदवनी श्रीवलिग्र क्रं २ स्वाहा ॥ ओं ऐं सं श्रीमहाविद्यानाज्ञ्यनीहं श्रीक्रमप
दपदवनी श्रीवलिग्र क्रं २ स्वाहा ॥ ॥ ओं ऐं ह्रौं श्रीं सं श्रीं यक्षयी ०पदिनूस्वावि

शालिक्रमन्तदानकायमालिन्याधिमभान गाधिजद्धा य शिवशक्तिमप्येयानव
नात्थल्य ४ सूयाधिश्रा ज दानूकुलाधि सम स्नव क्षक्लिग श्रीवलिगृ क्रं २ स्वा
हा ॥ ध्वनूयानिमन्त्र ॥ ॥ ओं ऐं समसमन्तुयी ०लि ॥ ओं ऐं डकानूकौयत्विशि
ल्याधि ॥ कुदेवलि ॥ ॥ नयोण ३ ॥ ओं ऐं नमः श्रीनाथाय ॥ ओं ऐं नमः श्रीसि
द्धिनाथाय ॥ ओं ऐं नमः श्रीकूजशनाथययायू ॥ ॥ जतजंधयपू धू धूप
दीपनैवेद्य रूलमानूलाधियक्षापवनाधिनाक्षाविशालिक्रमाष्टवन
विधं १ सर्वे पविपूर्णमस्तु ॥ ओं ऐं कूंयायू ॥ विन्दु ३ ॥ ॥ कुलिशाशाशाय

छिन्नमस्ता [illegible] न्याय [illegible] विद्या [illegible] मार्ज्जन समाप्त ॥ ॥ ततः दिग्बन्धन ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ओं नमो भगवति ऊर्द्ध्वचक्राय वायु ॥ ओं [illegible] पूर्व्वच
क्राय वायु ॥ ओं [illegible] दक्षिणचक्राय वायु ॥ ओं [illegible] २ [illegible]
[illegible] पश्चिमचक्राय वायु ॥ ओं [illegible] २ उत्तरचक्राय वायु
॥ [illegible] चक्रन्यास ॥ ॥ ओं संजीवनि २ [illegible] वायु ॥ ओं ऊर्द्ध्वके
[illegible] नी वायु ॥ ओं [illegible] मध्य [illegible] या ॥ ओं माया [illegible]

[illegible] नासिका [illegible] वायु ॥ ओं [illegible]
[illegible] वायु ॥ ओं [illegible] वायु ॥ करन्यास अङ्गन्यास ॥
ओं [illegible] वायु ॥ ओं पद्मासनाय वायु ॥ ध्यान ॥ ॥ ओं [illegible]
[illegible] याम [illegible] ना ॥ [illegible]
॥ पूर्व्व [illegible] दक्षिण [illegible]
[illegible] ॥ पञ्चवदन सौम्य [illegible]
[illegible] त्रिशूल [illegible]

वंकार्यवामह स्मृ मायूजा ॥ यन्म यमा सनाह्रूतात्रि स्वञ्जुयनमस्वनी ॥ दि
अवस्मृ य नी श्रनादि व्यालं कानह्र विमा ॥ नाना यूष्य वमाध्वी नानागं ध्वञ्जुमा
विता ॥ धि दी धि वमखहागा मा ह्र व द्धि याव ह्लिमा ॥ मध्यगा क्र त्रि स्वञ्जाव य
वमे ध्यानम ह्रूमं ॥ मध्य गं सर्वे या यं व वियूदाविद नागनं ॥ ॐ वि त्रि स्वञ्जु
ध्यान ॥ ॥ यूजनं ॥ नं ञतं नमा रगवमान्नूजाय वह्रूँ यायू ॥ नं ञ नमस्थाम
ञ्जु ह्रूँ यायू ॥ नं ञ नमस्था काग मान्नूणां ह्रूँ यायू ॥ नं ञ नमः ४ सर्वकामार्थ

साधनीनां ह्रूँ यायू ॥ नं ञ ऋजनामनीनां ह्रूँ यायू ॥ नं ञ सर्वेग्रा प्रतिह
तगतीनां ह्रूँ यायू ॥ नं ञ स्वञ्जुय यन्नूव यविवर्त्तिनीनां ह्रूँ यायू ॥ नं ञ
सर्वसत्ववसीकनणा ह्रादमा न्हलन समस्त कर्म्म यवर्त्तनीनां ह्रूँ यायू ॥
नं ञ सर्वमाह्रणां गुह्यह्रदयं व नम सिद्धं ह्रूँ यायू ॥ नं ञ यनकुमस्य
यनकनं स्वकर्म्म स सिद्धि कनं ह्रूँ यायू ॥ नं ञ माह्रणां ववनेगुह्र ह्रूँ यायू
॥ ॐ विवञ्मारवञ्जुपूजा ॥ ॥ नं ञ कु धाय कुभाद्य वनय विमलेयो वैव

ब्रह्मायणी विश्वस्वाहा ॥ इत्येव ॥ माहेश्वरी ॥ कौमारी ॥ वैष्णवी ॥ वाराही ॥ इन्द्रा
णी ॥ चामुण्डा ॥ महालक्ष्मी ॥ ८ ॥ इति मातृस्थानपूजा ॥ ॥ ॐ चामुण्डे ह्रूं
स्वाहा ॥ ॐ ऊर्ध्वकेशी ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ विरूपाक्षी ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ विद्यु
ज्जिह्वे ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ गगनकाली ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ पिंगलाक्षे ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ
विकृतद्रंष्ट्रे ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ वज्रदंष्ट्रे ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ मांसशोणितभूतनागव
प्रिये ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ हसनि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ नृत्यनि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ विश्वम्भ

रि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ मायाजालबन्धने ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ सहस्रपानवलि नी
नि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ नृपनि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ क्रोधनि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ विनिस्र ह्रूं स्वा
हा ॥ ॐ हिलिहिलि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ कृत्तिनि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ त्रासनि ह्रूं स्वाहा ॥
ॐ तामसनि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ विद्रावणि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ क्षोभणि ह्रूं
स्वाहा ॥ ॐ मारणि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ संजीवनि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ दहनि ह्रूं
स्वाहा ॥ ॐ गलनि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ घूर्णनि ह्रूं स्वाहा ॥ ॐ धूम्रनि ह्रूं स्वा

यू ॥ ॐ नमामाहागणायहूं यायू ॥ ॐ नभानम ॥ ॐ विघ्ननम ॥ स्वाहा ॥
ॐ तिनूरस्वगुंपूजा ॥ १ ॥ ॐ सं लेपीतिस्वक्तिथवसीष्या यायू ॥ ॐ दबलि
॥ आवाहनाविति स्वतामुद्रान्वगथ ३ ॥ विन्दूतयेयदं ३ ॥ ॐ तितिस्वगाहु
नं ॥ ॥ गगासुलस्थानार्हनं ॥ न्यासीकावथ ३ ॥ ॐ जूधायेकाहूद वाय
नम ॥ ॐ थधायेक्रीं गिन सं स्वाहा ॥ ॐ धायधायेनं नहूंहूं गिस्वा
येवीयद ॥ ॐ सर्वनं ॥ सर्व सर्वज कववायहूं ॥ नज्ञहूंस ॥ क्रीं न तत्रया

यवीयद ॥ ॐ नूदनूयरू ॥ जूस्वायरूहू ॥ ॐ तिजधायेन्यासहौं ॥
ॐ जूललाटयायू ॥ ॐ हुंकारयायू ॥ ॐ डमस्वयायू ॥ ॐ हुकया
पू ॥ ॐ वादद्वधीयायू ॥ ॐ तिवाहयक्षकेन्यास ॥ ॥ नमस्वक्रादाव
॥ ॐ वक्षयेकन्तिकानं यनवचितियगंकेडानेवाखयगं गदाधवह
वूलंसकतरूलदकंवाउनस्युवाक्षे ॥ दावदंगानउवेगिस्विरूगविवि
नयूकेकावंथमालावावाक्षंसूलावनंउलखिवृगयूगं वालमालनमहं

॥ॐ अं नमस्तेवज्र थथागतपूजावलिमिरु सगुरुवज्र हृति विघावज्ञार्थक
ल्किकायावस्यूदलविजया श्रामन्त्रयामिवर्म। ध्वताश्रीहृ निर्वाण क्षितिम
चिगगण द्वावूय द्वानकानीकालादीनस्वर्वच्छप्रणवपूजायज्ञं सर्वं अं वाद्धि
मध्ये॥ ॥ॐ अं आधारशक्तये यापू॥ॐ अं अनन्तासनाय यापू॥ॐ अं कूर्मा
य यापू॥ॐ अं नालाय यापू॥ॐ अं पद्माय यापू॥ॐ अं पत्राय यापू॥ॐ अं
केशरेभ्य ४ यापू॥ॐ अं कर्णिकाय यापू॥ॐ अं चन्द्रमण्डलाय यापू॥ॐ अं च

॥सूर्यमण्डलाय यापू॥२

न्द्रमण्डलाधिपतयेवज्रपुष्पासन यापू॥ॐ अं सूर्यमण्डलाधिपतयेविश्व
पुष्पासन यापू॥ॐ अं अग्निमण्डलाय यापू॥ॐ अं अग्निमण्डलाधिपतये
वज्रपुष्पासन यापू॥ॐ अं श्मशानमण्डलाय यापू॥ॐ अं श्मशानमण्डलाधिपतये
पुष्कोशवज्रपुष्पासन यापू॥ॐ अं शक्तिमण्डलाय यापू॥ॐ अं शक्तिमण्डलाधि
पतयेसर्वाशिवपुष्पासन यापू॥ॐ अं वज्रासन यापू॥ॐ अं सिंहासन या
पू॥ ॥ध्यान॥ॐ अं वज्रसत्वशक्तिरीश्वरं खवज्रधृक्पद्मोक्तिनि। वज्रवर्की

त्रिनयं वास्त्वादशगन्तु ॐ अनित ॥ तमर्दू यनगुं स्व दंशन मंकु गवशावी ॥ गी
र्यं चवैलू वाध्यवलुयदं वनदक्किण ॥ वामस्य ब्रह्मगण्ड्लस्य ऽस्न्लवी धनुया
लं ॥ हस्तावयालवेणु ॐ ज्ञनयान्तयनागर्क ॥ य ट्टनवध्वमाजानू वमिनू
स्त्वावदंवती ॥ एकवक्त्रा त्रिनत्रावज्ञनूनाव र्णुवल्लितुगा ॥ दित्तु जावनयावदं
सिंहस्था ऽरुययाशुगा ॥ नानालंकारसंपूर्णं लक्षणसर्वसंयूत ॥ स्तनवानन्द
नूथा ६ यंजं ध्यानूजद्दकीलि गा ॥ एवं ध्यात्वावनाभाह क्विदं सध्यंक्तिमानवा

१ ॥ सँ ज ध्यानयूथ्यायु ॥ ॥ इर्यीजालि ॥ त्रंज हं ल ज्ञानन्दगकि सैनवानन्द
वीनाधियन थँसँ ल श्रीकुलियूथ्यायु ॥ अँ ज सं ल श्रीमदाविद्यानाजंध्वनी
हं ल श्रीकुलियूथ्यायु ॥ त्रं ज हं ल ज्ञानन्दगकि सैनवानन्दवीनाधियत्य
सं ल श्रीकुलियूथ्यायु ॥ नं ज सं ल श्रीमहाविद्यानाजंध्वनी हं ल श्रीकुलियू
थ्यायु ॥ ॥ त्रं ज ज्ञ धाव क्रां थ धाव क्रीं धाव धानगनद्रं ह्रूं सर्वत्रासव
सर्वदं इस १ क्रां नद्र द्रव थ द्रं १ यायु ॥ नं ज नं वज्रकुञ्जिनी ह्रूं शैलाध्याकवेण ॥

ह्रीं कामाङ्ग द्राविणी क्लीं ऐं महाकाल कालानलाय स्रौं सङ्ग्रा या पूजयामि ॥ ओं नमो भगवति ह्रीं
कुब्जिका ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं घोरे अघोरामुखी क्रां क्रीं किलि किलि विच्चे या पूजयामि ॥ ओं नमो भगवति
ह्रां ह्रीं कुब्जिके ह्रां ह्रीं ह्रूं ङ ञ ण न मे अघोरामुखी क्रां क्रीं किलि किलि विच्चे या पूजयामि ॥
पञ्चवंशतिः ॥ ॥ आवाहन स्थापन संनिधान संनिरोधन अवगुण्ठन कवचीकरण
अमृतीकरण स्नान अर्घ पाद्य आचमनीय चन्दन विलेपन वीन ह सावी नमा हनी वीनाप्यो तार्ण
लिवलि रुमुपू ध्वधूपदीप रुलनामु ल्याजि नैवेद्य या पूजयामि ॥ ॥ ओं ह्रां हौं त्वा

स्नान या पूजयामि ॥ ओं संगिन स्नान या पूजयामि ॥ ओं कुललाय या पूजयामि ओं मे वृकाय या पूजयामि
॥ ओं लं हृदयाय या पूजयामि ॥ ओं वं नाभी या पूजयामि ॥ ओं बगु ह्रूं या पूजयामि ॥ ओं यं त्वा
या पूजयामि ॥ ओं हुं या पदद्वय या पूजयामि ॥ ॥ पुनः शन्नवाह्मा व तज्जन पूजनं ॥ ओं स्रौं हृ
दयादि ॥ ॥ तत स्त्रि कौलश्च ह्रं पूजनं ॥ ओं ह्रूं महामायाकुब्जिके विद्याव
कुब्जनीशी या पूजयामि ॥ ओं गुह्यं ग ॥ ओं अघोर ह्रीं हसः आत्मन वा क्षिपन पवि
या गक्ति यना श्री निर्वाण सून्दवी थवी या पूजयामि ॥ दक्षिण ॥ ओं यनम घोर ह्रूं घा

॰ क्लें नवाय ऐं चामुण्डा शक्तिसहिताय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं [illegible] सहाय नवनवाय

[illegible] लक्ष्मी शक्तिसहिताय स्वाहा ॥ पूर्वदिग्भागे [illegible] ॥ ॐ [illegible]

॥ ॥ [illegible] ॥ ॐ ह्रीं ऐं स [illegible] स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं [illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible]

स्वाहा ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ ॐ ह्रीं क्रों [illegible]

[illegible] स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं [illegible] स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं [illegible] स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं [illegible]

[illegible] स्वाहा ॥ पूर्वदिग्भागे [illegible] ॥ ॐ [illegible] ॥ ॥ [illegible]

१७ [illegible]

स्क लोकपाल पूजनं ॥ ॐ ज लूँ इन्द्राय पायू ॥ ॐ ज रूँ आग्नेय पायू ॥ ॐ ज म्हूँ य
माय पायू ॥ ॐ ज ह्रूँ नैऋत्याय पायू ॥ ॐ ज वूँ वरुणाय पायू ॥ ॐ ज यूँ वायव्य
पायू ॥ ॐ ज सूँ कुवेराय पायू ॥ ॐ ज हूँ ईशानाय पायू ॥ ॐ ज ऊँ ऊर्द्धाय पायू
॥ ॐ ज तुं अधोर्द्धाय पायू ॥ इति लोकपाल पूजा ॥ ॥ कालादि पूजनं ॥ ॐ पायू ॥
ह्रीं पायू ॥ ह्रां पायू ॥ ह्रूं पायू ॥ ह्रौं पायू ॥ ॥ ॐ ज यक्ष विध्यागिणानां वलि पूर्वे
व ३ ॥ ॥ ॐ ज ह्रें ह्रः श्री नन्द शक्तिरेववानन्द वीनाथि यत थसें ऽमूल स्थानस द

वकाय कुंदनेव छ्वव लिग्य ह्रीं २ स्वाहा पायू ॥ ॐ ज ह्रें ह्रः आनन्द शक्तिरेववा
नन्द वीनाथि यत थसें ऽमूल स्थानस दावकाय कुंदनेव छ्वव लिग्य ह्रीं २ स्वाहा
॥ आवाहनादि वन्दनादि यक्ष महाम्बालिगम वंदशाय ३ ॥ ॐ ज ह्रुं ह्रः सं ऽमू
लस्थान क्षेत्रपा वलिग्य ह्रीं २ स्वाहा ॥ ॥ स्तग धूप दीप नैवेद्य स्कल
गान्धु लादि यक्ष यवीमादि मूल स्थानार्चन विधि ४ सर्वेय विपूजु मन्त्र पायू ॥
ॐ ज नमः श्री नाथाय पति ३ ॥ विन्दुनाद चलि ॥ ॥ इति श्री श्रीश्री यक्षिनि जं स्थानु जं धा

नमाके

थाय मूल स्थान पूजाविधि ॥ ॥ग्गा ४ कुजनाय पूजनी ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्स्रौं पूर्णु

ष्वनाय नमः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्स्रौं पूर्णुष्ययें नमः ॥ गु दवलि ॥ पूर्वे ह्स्रौं वा ॥

॥ ऐं ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्स्रौं लिंगनी ह्स्रौं थायनमः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्स्रौं नि ष्वष्ठे श्रीं नमः ॥

गु दवलि ॥ ह्स्रौं दुकिलयाः पू ॥ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्रौं ह्स्रौं कजानाथाय वा

दुकी ॥ ऐं ह्रीं पू श्री ह्स्रौं ह्स्रौं ह्स्रौं कूजंष्य श्रे पादुकां ॥ ह्स्रौं गु दवलि ॥ पश्चि

मया ॥ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रौं ह्स्रौं ह्स्रौं ह्रीं क्रीं ह्रः ह्रां ह्रः ४ गु ह्स्रौं ष्य चू नायगु ह्स्रौं काले

नमः ॥ ऐं श्रं सिद्धिकलालि क्रीं श्रीं ह्रूं श्रीं स्हनमः स्वाहा ॥ थाउगान्हनी ॥ गु दवलि ॥ उ

त्तरया ॥ ॥ ऐं ह्रीं सौं ४ क्लीं वाम्हवश्च ग्निवक्र कामगार्यलि मेजोगनाथ लिं ह्रीं का

म ष्वनीदवी पूहात्त ह्रां गकिथावा पू ॥ वाम्हव ४ ॥ ॥ ऐं ह्रीं सौं ४ क्लीं कामराज

सूर्यवक्र कालीवनपी ८० वधुगनाथ लिकवज्ञ ष्वनीदवीवि ह्रूं षटात्त ग

किथीयापू ॥ कामराज ४ ॥ ॥ ऐं ह्रीं सौं ४ क्लीं गकिवीज साम वक्र पूर्णुगिवीय

व भश्चुडालीगनाथा त्तिकर गमालनी पदवीवक्रालम गकिथी यापू

ॐ ॥ शक्ति वीज ॥ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ४ ह्रीं ह्रूं ह्रीं गुनी यवी उ व ह्म च क्रं स
स्थान यी ८० वर्ष्यानाथ त्रिकपी ह्रं ह्रूं त्रिपुर सुन्दरी देवी यन्त्र
ह्मा त्म शक्ति श्री पादुका ॥ ॐ देव लि ॥ त्रिपुर उर्द्धया ॥ ॥ ॐ ह्रीं ऐं
ह्रीं ॐ सौः ॐ हादक ष्वनीन म ४ ॥ उर्द्धया ॥ ॐ त्रि वना म्नाय पूजन ॥
॥ नन निर्वाण ॥ ॐ ह्रीं ली ह्रूं ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं पादु ॥ ॐ ऽ सर्व्व नम ॐ स्व
वाय ह्म ह्रा ४ ह्री ४ ह्रू ४ पादुका ॥ ॥

ॐ ऽ ॐ ह्रौं ह्रौं ॐ श्री महानिर्वाण वनानन्दनाथ ह्रीं ष्वया सहि
नाय सिद्ध न सर्व्वाधिकार वन्द्य ॐ पादुका ॥ सर्व्वाधिकार ॥ ॥
ॐ हूं हा ॐ पूर्व ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ पादुय दक्षिण ॥ ॐ ऽ ह्रू ह्रूं ॐ पश्चिम ॥ ॐ
ऽ ह्रां ह्रीं ॐ ऽ च ॥ ॐ ऽ ह्रं ह्रं ॐ त्रिपथ ॥ ॐ ऽ ह्रः ह्रः ४ ॐ हादक ॥ ॐ
[illegible] ॥ म्नाय सर्व्वाधिकार ॥ ॥ ॐ ऽ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रः ४
ह्रा ४ ह्री ४ ह्रूं ॐ ॥ महानिर्वाण वनमा देव महाविद्या ॥ ॥ ॐ ह्रूं सौः

हानिर्वाणेश्वनानन्द नाथ श्रीपादू॥ महानिर्वाण॥ ॥ ध्रैं पादूका॥ त्रैं श्रीं ह
४॥ त्रैं श्रीं श्रीं पादूका॥ यनमा फ्रेमन्त्र॥ ॥ श्रीं श्रीमहानिर्वाणेश्वनानन्द
नाथ श्रीं क्रौं श्रीं यनम निर्वाणेश्वरी किस श्रीं हिनाय पादूका॥ महानि
र्वाण श्रीं॥ ॥ त्रैं ज निन ॐ नाय विघ्न हनिना क्रानाय धामही। नन्न ४ हूं क्षं
यानयां ३॥ गायत्री॥ ॥ क्ष पादूका॥ ३॥ श्रीं यमनव॥ ॥ त्रैं ज श्रीं त्रैला
क्ष मनू समाक्रूःमेस्वाहा॥ त्रैं त्रैलाक्य मनू ह्रं यनमाक्रूःमेस्वाहा श्रीं॥ जाम

मन्त्र ४॥ ॥ त्रैं ज बप बप बप श्रीं पायरक्षनाय स्वाहा॥ पायरक्षणम
न्त्र ४॥ ॥ त्रैं ज श्रीं यनमपायना श्रीं गनाय स्वाहा पादू॥ ॐ निर्वाणमन्त्र ४॥
॥ कलश ४ कलशा श्रीं न॥ मालदास चून॥ ॐ हूं स ४ हाक्ष्याथनम ४॥ ॐ त्यादि
वत्र स्नास ४॥ चू॥ त्रैं ज क्षमानागकथ पादू॥ ॐ त्यादि॥ त्रैं ज वृ मास
नपादू॥ त्रैं ज सिंहासन पादू॥ ध्यान॥ ॥ त्रैं ३ वज्र क्रादिय नागेन्द्र वज्रार्द्धके
नराख्वन ४॥ एकास्यां ललावनत्री त्रि विशुद्धो हानयामधा॥ उत्तं गा साम हालक्ष्मी
सोनाम्ना लावनत्रया। ह्र ह्रू ॐ यसमा लाक्ष्मा वनयारत्य श्रीस्वधा॥ धया ४ कलशेन्द्र

सर्व्व बोधि ला क्ष ४ शक्ति य स्व स ४॥ नानारत्न संशोभिता ज्ञानवज्र युत मण्डिता॥ वज्र
श्वरामाच सर्व्व मण्डल संस्थितायतनम स्वाहा॥ ध्यान पूजा पञ्चोपचार॥ वन्दनादि॥ ॥
पुष्पाञ्जलि ४॥ मूलमन्त्र॥ ॐ अहं कुल वृक्ष महासन समाहन सकलल
धर्म्म चक्र देवता कलाम लाधिपतये वज्र विघ्न ... आत्मविद्याशिवतत्वा
य ॐ ह्रः आनन्दशक्ति ज्ञानवानन्दवीनाधिपतये सं ह्रीं ... कलशाय स्वा
हा॥ ॐ ह्रूं स्व ४ ... कायमहालक्ष्मी शक्ति सहिताय स्वाहा इ का
॥ पुष्पाञ्जलि॥ आवाहनादि ध्यान मुद्रा॥ ॥ पूजा पञ्चोपचार॥ अर्घ्यादि॥ पञ्च
अर्घ्यादि॥ अतिमालादि॥ पुष्पादि॥ आदि॥ दीपादि॥ गन्धादि॥ नैवेद्यादि॥
विस्फोटादि॥ मत्स्यादि॥ मूर्ध्नि॥ अर्घ्य स्नानादि॥ वसिष्ठादि॥ जनकादि॥ ॐ
श्रीकण्ठाय स्वाहा॥ ॐ अनन्ताय स्वाहा॥ ॐ सूक्ष्माय स्वाहा॥ ॐ सदाशिवाय स्वाहा॥ ॐ
शिखण्डिने स्वाहा॥ ॐ ... स्वाहा॥ ॐ एकरुद्राय स्वाहा॥ ॐ ... स्वाहा॥ ॐ
वज्रादि ... स्वाहा॥ नैवेद्यादि॥ ॐ
शक्ति विद्याकला प्रतिष्ठा ... नमः ४ स्वाहा॥ पूजन क्रम ... वलि दद्यात्
॥ पुष्पाञ्जलि ... ४॥ ॥ ... पूजनं॥ ॐ ... स्वाहा

पनम ४ यायू ॥ षडङ्ग न्यास ४ ॥ ॥ आधारनागकथ यायू ॥ ॐ रत्नादि
॥ ॐ ऽ नेकासन यायू ॥ ध्यान ४ ॥ ॥ ॐ ऽ लावायसमि तादवीयम्म
नागसमपता । सर्वं च त वि चित्राणी हुं विकाह मि वि ग्रहा ॥ अनुष्टुद
गरुडाधवीजे लाक्षनान्य विग्रह ॥ खड्ग्यानां कुणासवं कवालकु
लिंगवर्ज ॥ नथांगष्ठ गथाघण्टानं वमलु वचव्रध्वं । रुद्दकं धनु यान
श्री खड्गं सकमण्डलु ॥ थूलमञ्जनवं लञ्ज नलालि थाल चकथ ॥ मनु
लं वह यि त्वाडु नदी ह्नगा वि सवि॑ना ॥ गसन्की यान कासघांवाहना

मूगथाहवा ॥ ध्यान पष्ठ यायू ॥ वन्दनादि ॥ ॥ पुष्पाञ्जलि ॥ ॐ ऽ क्रां क्रीं क्रुं
क्रैं क्रः ४ पुष्प यत्यादि ॥ ॐ ऽ सं लं नं नवानन्दवीवाधि पतय हुं ॐ क्रीं कु
लकन्याय यायू ॥ ॐ ऽ लूं ह्नुं ह्रूं ह्वुं ह्नूं यायू ॥ अथावद ज्वमीलि ॥ ॐ ऽ का
हदयाय यायू षडङ्गेन पूजा ॥ रूदवस्त्रादि ॥ जयादि ॥ ब्रह्मा यादि ॥
कुंदं वलि ॥ आवाहनादि थानि मूजा ॥ गुणिवीवघट पूजा ॥ ॥ नन ४
कामाचीवञ्जनं ॥ ॐ ऽ कां हृदयायादि षडङ्ग न्यास ४ ॥ आसनं ॥ ॐ ऽ आधा
नागकथ यायू ॥ ॐ रत्नादि ७ ॥ ॐ ऽ मयूवासन यायू ॥ ध्यान ॥ ॐ ऽ दं धूका

चूणसिंकाणामति क्षादि समयता। मूर्द्धविम्बु निराय वीछुी बन्य हसिमान

न॥ वालनूपीम ह्रमाया क्षेमामी शुमत्रु पिनी। शुध्य च उर्द्धुर्जकाद्य यू

र्लु लिन क्षि सूतर्क॥ यक्षनागमतिमी विमू कालीकाय ह्र विना। लिखि

नाजसमानूराविघ्नान्तं मा। न्ति का मिणी॥ सीताम्यसी यदाल क्ष्मीमायू ४

धूपयम ४ त्रियं। सर्व्वकाम ध्वी यवीस र्व्वध्या वीमह ध्वनी। आगक्षुउ

स्ति नाव क्षीमेलाधुं ह्रस्ति का विणी। ध्यावाध वीसयानो मि क्षेमानीश्चुतम

इला॥ ध्यानपूष्ययायू। वन्दनादि॥ ॥ शुक्रलिउ॥ नँ ङ वँ क्लु ङ मउ

क्लोँ क्लुं द्रीं गीँ मह क्षेमा विका विश्वयायू॥ नँ द्रीं गीँ कर्क्कीव क्रू द्रि कालेला

क्षमृ धूयी ० धिपत्र सह कूमानी विघ्न ह आकन्दु स्वम ००॥ नँ ङ हँ ७

स ७ यायू॥ नँ ङ कोँ हुवयादि यतर्ल्लेन पूजा॥ नँ ङ ऊँ व क्षायणीया

यू॥ ऊँ क्षा दि ८॥ हूदयर्ल्लु दि ८॥ ङया दि ८॥ ऊँ दवलि॥ आवाह्नया

नि मूद्रा॥ ॥ अ ग क्ष ग॥ नँ ङ नना सनयायू॥ नँ ङ हाँ क्षीँ हूँ ह ४ क्षनयाला

यवायू॥ ऊँ दवलि॥ दऊमूद्रा॥ ॥ दक्षवहूक॥ नँ ङ मयूनासनयायू॥ नँ ङ

॥कूलयूतवटकूनाथाय याचू॥ छुं देवलि॥ नर्ज्जिनिमूजा॥ ॥वामगरलस॥
ज मूक्षा सनयाद्व॥ नेंज मं गां यूं गहले क्षौ कूलगलेस्वना य याचू॥ छुं देव
ज मूजा॥ [illegible] नि॥ [illegible] कोनानी पूजा॥ ॥विले यवलिविय थायथ
[illegible] ॥नमावलिपूजा॥ नेंज गं यू स्कनदी य यन्तु ना ध वी [illegible] ति यव नकेत वा
[illegible] य वलिग ह्रं २ स्वाहा॥ नेंज श्रीं यन स्नि दी य यहू की यवी महा धं द्व केत
वालाय वलिग ह्री २ स्वाहा॥ नेंज स्त्रीं सिह नदी यवू नाध वी महा थाग्नि केत
वालाय वलि ग ह्री २ स्वाहा॥ नेंज का कि कू ह ४ केत वालाय वलि ग ह्री २ स्वा

हा॥ नेंज छुं जे ज स्काना धि यनय यथानाम्न मन्डलम (ध्ये) ज वगन २ य कुर्व
जाय त्रि म गाय का छ स्वट काय स्व म ष्मूलवाण य महाके वा लरे वण
य विथ काटि समन ञ नाय न क्ष कि ह गवनूसे नवक्षू य ण यथाय यय नानेव
लिग ह्री २ समवि घ्ना का द या॥ छुं फों फीं फों हूं रु ह स्वाहा॥ फा वलि॥ ॥ नेंग
रे नायू वटु कनाथ य वलि ग ह्रीं २ स्वाहा॥ वटुकवलि॥ ॥नेंज
[illegible] मू मू कू लगलस्वना य वलि ग ह्रीं २ स्वाहा॥ गणपतिवलि॥ ॥
[illegible] थं क्षे विद्यानिमीणां यो ० जा क्षे त जा था न जा मन्त जा गहे जा कूल

जासंयाक जाधायकवि आजिणीनां स्ववनी तुवनी गोवनी एकाथानी द्ध
नी गुह्यकेनीवक यक्ष यक्ष काष्ठ नवाक्षनीनां डाकिनीनां ॥ यथायय
मानं वलिं गृह्न २ मम सिद्धि कुर्वन्तु हूं हूं फट् स्वाहा ॥ योगिनीवलि ॥ ॥
नमाहं ककाद्वि वलि ॥ नं जज आ ॐ ओं उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
अवर्ग पूर्व यी अविका मह रुद्र मन्त्रेन वाय महाश्मशाना धि पतये स्व
शक्ति सहिताय स्वपनिवानाय ओं मां पूर्व द्वयदीय जूलि वलि वल लं गृह्न
२ ममग ओं नागयर सर्वार्थ सिद्धि यद स्वमं द्वं वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ न
थैव सर्वथा ॥ १ ॥ नं ज क ख ग घ ङ कवर्ग आग्नेय यी अविकाम नियं
नाम कमह रुद्र न वाय महाश्मशाना धि पतये स्वशक्ति सहिताय स्वपवि वा
नाय ओं सर्वायीनां सर्वभूतानि कु २ वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ नथैवास्मि सर्व
थं ॥ २ ॥ नं ज च छ ज झ ञ चवर्ग याम्य यी अविकाम जू ज्वमाल महा
रुद्रन वायर गन्धं पूर्ववव ॥ ३ ॥ नं ज ट ठ ड ढ ण टवर्ग नैरृत्य यी अविकाम
अग्नि जिह्व महारुद्र नवाय र गन्धं पूर्ववव ॥ ४ ॥ नं ज त थ द ध न तवर्ग वानु
व्य यी अविकाम काला द्ध महारुद्र नवाय र गन्धं पूर्ववव ॥ ५ ॥ नं ज यर ल

वरुमववर्म्नवायूच्छपी अधिकाय कापालीग महाभैरवाय ऽ पूर्व्वव
त् ॥ ६ ॥ ॐ ऽ जयन्तलवयवर्म्न उर्द्धन पी अधियतय हामाक महाभैरवाय
ऽ पूर्व्ववत् ॥ ७ ॥ ॐ ऽ जगाव सहगवर्म्न ईशान पी अधिकाय हामनूय
महाभैरवाय महाश्मशानाधिपतय ऽ पूर्व्ववत् ॥ ८ ॥ ॐ ऽ [illegible]
द्धपी अधिकाय नक्वायद महाभैरवाय ऽ पूर्व्ववत् ॥ ९ ॥ ॐ ऽ
ऊर्द्धपी अधिकाय ग्रह्म कतुणु महाभैरवाय ऽ पूर्व्ववत् ॥ १० ॥ ॐ ऽ
हं ऽ सं ऽ मः पूर्व्वपी अधिकाय मेघनाद सून महाभैरवाय महाश्म

नानां बिघ्नयस्तु गच्छ सह्निनाय स्वाय विवाजाय भस्मदादीनां सर्व्व
भक्षि कुरु २ वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ निरुत्तकादि गणपूजा विधि
म ध्यानं ॥ ॥ ॐ ऽ असितांग भैरवाय वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ऽ रुरु भैर
वाय वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ऽ चण्ड भैरवाय वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ऽ क्रो
ध भैरवाय वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ऽ उन्मत्त भैरवाय वलिं गृह्न २ स्वा
हा ॥ ॐ ऽ कपाली भैरवाय वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ऽ भीषण भैरवाय
वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ऽ संहार भैरवाय वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ पूर्वा दिसा

नाकी॥ ॐ ३ वारुणीदेवाय बलि गृह्न २ स्वाहा॥ इति योगिनीनादि४॥ ॥सं ५ बु
वारुणी॥ ॥ॐ ३ अघोराय अमोघाय ब्रह्म विमल [illegible] वक्त्रायणी विश्व [illegible] लि
गृह्न २ स्वाहा॥ तथैव॥ माहेश्वरी॥ कौमारी॥ वैष्णवी॥ वाराही॥ इति इन्द्रा
यणी॥ चामुण्डा॥ महालक्ष्मी॥ सर्वं पूर्ववत्॥ इति मातृगण ४॥ ॥ॐ ३
अं आं रुद्रचण्डायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ ह्रं ह्रीं प्रचण्डायै बलि गृह्न २
स्वाहा॥ ॐ ३ ह्रुं चण्डोग्रायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ [illegible] चण्डनाय
कायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ [illegible] चण्डायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ [illegible]

ॐ चण्डवत्यै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ [illegible] चण्डरूपायै बलि गृह्न २ स्वाहा
॥ॐ ३ [illegible] अतिचण्डिकायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ इति नवचण्डादि पूर्व
दिक्षु गीनाकी॥ ॥ॐ ३ जयायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ विजयायै
बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ अजितायै बलि गृह्न स्वाहा॥ ॐ ३ अपरा
जितायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ जम्भायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ स्त
म्भायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ मोहायै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ३ आक
र्षिण्यै बलि गृह्न २ स्वाहा॥ इति जयादि बलि॥ ॥ॐ ३ सर्वेभ्यो [illegible]

लस्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥ नं ७ सर्व्वस्थावरु केस्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥ नं ७
सर्व्वस्थागणपतिस्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥ नं ७ नं ह्रूं महाकालायवलिं गृ
ह्न २ स्वाहा॥ नं ७ ह्रूं श्रीसिद्धिवामण्डपेवलिं गृह्न २ स्वाहा॥ नं ७ महाक
नवीरश्मशानाय ॐ वलिं गृह्न २ स्वाहा॥ नं ७ सर्व्वस्थादेवस्थावलिं गृ
ह्न २ स्वाहा॥ नं ७ सर्व्वस्थाहूणस्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥ नं ७ सर्व्वस्थानाग
स्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥ नं ७ सर्व्वस्थायक्षनाक्षसहूतयमपिशाचकिन्नर
गणस्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥ नं ७ सर्व्वस्थ८ पर्व्वतवृक्षगणस्थावलिं गृह्न
२ स्वाहा॥ नं ७ सर्व्वस्थाआकाशभवानगिनायवीरस्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥
नं ७ सर्व्वस्थागन्धर्व्वनक्षत्रादिगणस्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥ नं ७ सर्व्वस्थाडा
किनीगणस्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ भूर्भुव ४ स्व ४ स्वाहा॥ नं ७ ॐ ७ ॐ
आह्वाविभतिकमाद्यनायमां गायसगन स्वविवानायॐमाय प्रधूपदी
पनैवद्याधिकलिवलिं ॐ शुगृह्न २ उ २ भव २ लल २ स्वाहा २ महाज
मनात्मियनथक्षसस्ववनश्मम सवर्णुवनपान्यलात सर्व्वाथ सिद्धि
पदस्वसह्नं ३ ॐ दवलिं गृह्न २ स्वाहा॥ ॥ नन८ समयवलि॥ ॐ तिर ॐ शु

समयादि समभानवलिंद ह्मा ॥७॥ ३ सर्व्व धी ८भ यथी भनिद्याभायद्यावस
वद । कें गायकें सं प्रयान्हा ४ सर्व्वचिम्हा ग सं ह्लिगा ॥ याजिणीयागवीमन्त्रास
र्व्वेगत्रसमागगा ॥ कुंद यर्व्व मजायकेग्राना ॥ थावनयामम ॥ थरु ह्मा ४ सासभंद
वीगुरुयावा[?] नवता ४ । सर्व्वसिद्धियसाधामथवीगयारुवंसया ॥ वीन
र्गाथ्याजिणाना श्र्यविथनि सहीगत्त । नगताक्रवलिंधवीसमयावा नमंव
कें ॥ गुरु गिस्थ तिमन ४ यूह्निमांसमथा ह्लि जीविग । निद्धानेयस्तुदूथानायाजिणा
गणसंकूला ॥ कूदूकीधिकू ४ खप्ना नि दू न्नि मिरुदूहाविंगा । निद्धायस्तुदूह्मा

नायाजिनागणसंकुला ४ । ॐ कायादिकूथ्यवीभस्रूयसानायकीलिगा ४ । श्रा
वीश्रारुसंथाह्लाथ्येगासूविथमासूवा ॥ महीयामालवक्का ॥ दुसर्व्वकाना
नेभवूवा । याजिनीयागयकात्मासम गिद्धनि साथका ४ । वीनकुमसूवीथ
ह्मा ४ सर्व्वसिद्धिथवता ४ । सिद्धाथ्ययूगकावार्थ्यसाथकाङिंदिसाथिन ४ ।
नगभवाथ्यप्रामवाजूठ्याह्वासयिद्धन ॥ वाचिकूथेकद्वें दवाग्भगान मा
हमंगुला । नानाहूयधनाच्यधिवटजाविविधानिच ॥ नवसर्व्वडयिसउद्या
वलिंह्नकंनुसर्व्वन ४ । सवणागणा ॥ ऽयदुन्नवां सर्व्वभ ३ स्कलयदं ॥ खालधे

[illegible]

यन्मया कर्म्मयत्कृ विहानियत्ते न । वंच ध्य पुयानन मनुद्याममविनिका
४ सर्व्वकर्म्मानि सिद्धन्ति व्याववानुभ । निवगक्रिय सोदनग्राक काना
नेनमान्य हुं ॥ ॐ नि समयवान्ति हृदं ७ ॥ ॥ नं ज ज ज न स्वाय वर्त्तुं न स्वः ॐ
जवार्त्तन्त्र मूर्त्तिका ४ उल्काग उक्तानु स्व रा य यूयनमवव ॥ सूमू कोछ्यक
कायस्य ल्याद न कर्द्द युक ४ ननावनमडयाम्चू स्थलोय धीसान नाढको ४ ॥
जू ४ कन्याढ ४ कन्चलस्य स्वलुं न्मा गा मूस्व स्थ था । वीयमा ढ ५ तन्ये वेवनु स्वे
यकमवव ॥ कृष्ण मायाउजलता क्रोम्फ काना ५ यउस्थन ४ ठकेयालि स्का

नूवं स्थातामभा ढ ठ कनुक ४ । णती गं काना न्नि मकाथ विमादद्भूनस्थ था । येन
थानाग कनुस्य युवनु स्न ट कानक ४ । वीनसि ला ह कूप स्थाम घरा स्नयूमे
मान्त क ४ । थालवस्यलं वा त्य्य वृडल ४ लुकतुतक ४ । वतलाकु ४ स नाकस्य
दूर्त्तु क ४ द्व येणस्थ था ॥ यीवाग कत यालस्थान यैवाग नमास्तुभ ॥ यीवाग
वमहाक्ष्म्य नियी यम्मयूस स्थिगा । वडवद्धितया क्वनङै ननाहवना ढिनि ॥
पूथक कणस्त्र नू यस्य सर्व्व कि का ध विनूवी । ऊउनायिम ना क्षत्र का ना
नेनमोच्य हूं ॥ नं ज कां ञं ह्रीं क ४ कृ उना दि क्षत्र यालाय वलिंग क्रुं स्वाहा ।

॥ इति ... नादि वर्त्ति ॥ ॥ ॐ ज वज्रधर्म्म महानागायन्म स्वीसू मूखीव
वा । नवनीयम थाथाना सी मा नीमा महावना ॥ जयावविजयाथैव जूजिता
जूयना जिता । महालक्ष्मी विद्धु याम्की शुष्का व कोशमान का ॥ जान हानी सम्हा
वीव जैष्ठा वीशुष्क मैवनी । विय ली यूथ्य हनीव जू गनागस्य हाविणा ॥ रुद्र का
नीसू रुद्रावरु दा नीमा सूरु डिका । वार्त्तिग मन्त्र मातृ ठा कहि का याल वैनि
॥ वार्त्ति गेव सू महाथायान्ति शुष्क मृत्यु गवागनी ॥ ॐ जजू धाय जां हुं याथिवा
त्रिग धानि णी स्थावलिम्र हूँ २ स्वाहा ॥ इति विवमिलि यामिणीवर्त्ति ॥ ॥ ॐ ज

जयावविजयाथैवजयन्तीवायनाजिता । नन्दारु जाजयाहीमाकलावै
वासुकास्थ ॥ ७ ॥ दिव्ययाग्निमहाथाग्निसिद्धियाम्निग ल ... वी । साकिनी
कालना गीवडुर्द्ध कशा निगाकनी ॥ ८ ॥ गं हीना ही वणा कूलायवनाम्रो ...
मिका । ही घणीव महानन्दा काला मृ खीन स्थैवव ॥ ९ ॥ विगाचीह स्किनी थैवय
केणी धूर्ज्जटीनथा । विवरुन्द सर्व सिद्धि ... ह्रीं ... स्थान स्थैवव ॥ ... ॐ कानीला
... वीदी घों धूमा मी के ल ह वि या । मा ग गी का क ह धीव न था ति यूनवानकी
॥ १० ॥ नान्द सी धान ना दा व न काली विस्वतू विणा जयकनीगी द वी रु स्मी

गुह्यकांगीननरातनी ॥ ८ ॥ वीनरुद महाकाली कं काली विकृताननना । काठला
लीमत दावबाय वं गाहृयाननना ॥ ८ ॥ ब्राह्मीव वै क वीनी द्री च छि का ॐ ध्य
नीत था । वानाली नीनसि ह स्युलि वाद्र लिवनु ४ वज्रिका ४ ॥ ८ ॥ ॐ दं दं वीमला
याग्नि वलिग्र ह्रं तुमसदा ॥ क्रीं वव सथियाजिनी ध्यावलिग्र ह्रं २ सर्वे शान्ति
कुरु २ मम सिद्धि कुर्वन्तु ह्रं रुं हूं स्वाहा ॥ ॐ लिवव सथियाजिनीवलि ॥ ॥
ॐ ज ज क्रायद क्रोके र्खुयनाक्रे सीद्धयनीतथा । क्रेयावे वनु चिगा की जू
क्रयाक्रयनायव ॥ ॐ लालीलावलिश्चे वलयालीला स्वरथेवच ॥ लंका

लंकेश्वनीज्ञयाललसा विमलातथा । क्रूगासनि विशाला क्रीं ह्रं कालीवदवा
मूर्त्वी ॥ महोनसामहा के नाक्षा ध्वनीवव ताननना । सर्वेक्षान लालाये वगाला
सूर्य्वदमवच ॥ गेद्रावेवनु यल साघाहि सर्वेनी । गलऊ घावनका ध्री
विघ्र हिं क्रास्वरथेवच । मघनाय सुवर्णुग्रा कालकर्णं वियाननना ॥ य
न्नायचवनी श्चेवयव अघलिगाननना । विकृवक्राविसा वीवविगितासि
ध्यलाल्मू पा ॥ यावनी वमनी चे वतयनी वामनीतथा । विकृताननना वृहल्लुकी
दं दं सर्वी सर्वभूविनी ॥ यमजिह्वा जयनी चदू र्जा या जयमातृका । विजलि

ने वगीथेव थ्रतान नाविउयास्मृता ॥ वाक्षीमाहन्ध्य नीथेवकोमानीवेकृवीन
था। वानाहीथेवर्व द्धानीवामणुअलक्षीयंत्वमा ७ ॥ नृद्रवणुयवणुववणु
यावणुनायिका। वणुवणुवनी। थेववणुनूयानिवलिका ॥ नवमीयात्रवणु
वमध्यस्कववयवाञिता। नकागानिविध्याङ्यावलिगृह्णंतु सर्वदा ॥ नं ७
सं ७ वणु वद्धियागिनी थ्यावलिं गृह्णं २ स्वाहा ॥ इति जकादिववद्धियो
गिनीवलि ॥ ॥ नं जनं ह्रीं सौं ४ ऊर्द्धवक्राणुमावादिविगणगलहूगलनि
४ केलवायालालवानलवा सलिलयवनथा ये तकूतस्किमावा। केतयी

१ भयवीभविपूसकलगण्मपूयदीयासवाथे ४ प्रीनाद्वया ४ सवान ४ नु
तवलिविविनायायस्तुवीनन्धवं था ॥ नं ७ सर्वथ्याथानिनीत्य ४ सर्वहुमत्य
४ सर्वहृमिस्किगत्यस्तैलाकवालिनीत्यविमायूजावलिंगृह्णं २ स्वाहा ॥ ॥
नगामहावलिं ॥ समयादिरुभुक्तीनभानाविस्किनैयध ७ ॥ नं ह्रीं श्रीं हूं
क्षौं ॥ श्रीगुरुपादुकांपूजयामि ॥ नं ७ कवर्णुकेकामनूयंयूनवियूनने
नीजालयी ७ उयंत्यावक्षोणमध्ययी ७ विपूनयूनगनादविशमानकका
ये। आवार्थसिद्धि सं ७ यविरुगयहंसंवद्धियानिच्यवन्धयूकंदत्यं

के जं ख्व तव लक सह्याद वद्वीन्नमामि ॥१॥ याहू पि ग्यानु विद्धं यगा पि
सिनु वन सम्ह वाना लमूल ह्वं गं यी । थ यी । विभमवउ ४ या । मलक्व
लाम्भ मान । सिं थ्वीगी वक वृह्वं उ य विगु कगठ धूस कानावगान कीलुल
पुर्लु मि ज्ञं गगण धूनव न ओ ति यानय्र मान ॥२॥ जाला ख्व या गमख्व कलय
मिनगनकामय स्वनु थं उ ज्ञा ग्या मह हा स य यठ सहक्व लात थ [illegible] य थ [illegible]
ग्री मेल या नि जाग थ सु य गि नि न यह म वि ग्यावनवु गाम ला या य्र थ नेम
नृ न यथ गिनी लाकिनी साकिनीनां ॥३॥ काश्मीन वान्ह थं छे व विदमन य । थव
क्ष वाग जलूग स्त्री नाश्व ह कृ तूकं उ न सि विन ड क्वं सिद्धि ह्वं ग त हा ल । कोला
गि थ्यं थ वि का उ डि मनि नि गि खवन का क्षि द ग य या । गसीना क्ष मच्व थ गोउ
गु यू न न ग न श्री ग न कां व कवा ॥४॥ कर्त्तु नं वां क न वा म ग थ यू न व न के
स्तु क्व हे क लि गे नि ग्राग ग्याम मं ध्वे सू नव न ग य न ग द्वना ख्व स्त लवू । या
निज्ञाम गु जान्वा वि वि धवध नू गीमा गन सा हु सर्वा नु सिद्धा उ था ४ सू सिद्धा वि
वि धवू धनू ना दिव्य सिद्धि दय नु ॥५॥ खड्ग ध्यामन सिद्धि य न यू न विस न ख

गगि लावन स्वाग स्हे स्हे हे विद्यूनां वलि यलि गउर्म स्हं हनसवि द्या॥ दो घयि
थंक विल्वं न स ति थि गु ठि का या दू का कामसिद्धि सर्वा विका द दनु ऊ लि वलि
थि गि मा हे न वा ना न्य यू का॥ ४॥ ६॥ दू ह्य ग्ये नानि मा थियह गण ग ग ण विद्य
त्याठ नण वा ना ऊ धा न ऊ भो ध्य विघ ठ य ऊ हं ये व्या थिर्ग चम्म मूधु। र्कां र्कां रु
ट्का न यक्री हु हु हु हु हु सिर्ग व ब्र यक्री थि व क्री ठ यकि सत्रु मा गा कि लि मि कि
लि थि कि ली ४ को ल ता श्रा क्षि न कि॥ ८॥ सा गु स्का का म नू वा य लव ग व सका हु
हु हूं का न ना या ड लि स्का नी ल क थ्वा ऊ स्न स्न न द या विन्दू नो द ब्र ग स्का॥ हुं

कं कं स्रुह्र का न य क्री न नू न विन व स्या व ब्रि गा ने ग मं मा मग त्या ला क या ला ग
स य म न ग मा ४ वा र्थि वि नो च्च य का॥ ४॥ ८॥ विस्व्या मा नू उ ग कि ४ सु च दि ग ऊ गि
वं ही य णी सिद्धि नू या वा मू ञ्जा ऊ स्त्र नू या द ग थि गि य क टा कू णु ला व्या ब्र सिद्धा
मा का णा नि ठ्य यू का ऊ य थि क ल व थि मा ल नी विन्दू य हा अ घा न नि ठ्य सी का कू ल
म कू ल म य या या ग व कं ह वि ष्टा॥ ७॥ स्त्री ना ष्ठ ता स य क्री ऊ य न व न य ना ना थि
शा का वि गि स्वा दि या स्त्र ला क या ला ४ स क ल न नू ग गा ४ यी ० जा म ग ला स्वा। ग्री को ०
स्व य क्री थि भु व न ऊ न नी म च्च यी ० ग मा स्त्र च क स्त्रा देव देवी गि व य थ स म

नीकालमार्गेव सक्का ॥ १० ॥ नानाधावकृ ङि का ख्याकृ ठि लग नु गलामकु यी । अयवी
अयक्रिथ्य सिद्धि याग्निदनून वियूनाम शुलावूर्कुयीअ ॥ कामाख्याकाकिना
ख्यावकृकूल विविधा स क्रिगा स्नान सिद्ध यागालद्व मिखर्गे विजयतु वसू
नाभाकूल श्रीकूलाख्या ॥ ११ ॥ ङलि शाडुद्धेग शृंठदिग ठिगठयँ र कयनी समं
स्नानी श्रीहूं कानवीऊँ श्वी लऊ लऊ लिगायूर्कुमास यदक्का । साजं शावामश्री
श्रीऊन लकि सठयासीक्रिगा सय रुद सकुशायँवरुद विमलरुलगगा
मेंवनले समस्का ॥ १२ ॥ एकासानेक रुदत्रि यथगनयूगा जूशनामान सानी
धंलाहींनास्ठं नावलवल विलनाय रुं नकी त्रिकाणा । गानि सिद्धि यदकी
नूनूनू विनवेसा सर्वे निशाधि याम्लावर्षे यनी रुरुरुरुरु सरुरुरुरु
क्वानयनी ॥ १३ ॥ कं क्लूं कां कानकूथ्रीगकूगकूगन्तरण कूं कूं कूं कालक्कीना
आक्रे श्राक्ष स्वे सावठं वठ यवठ कां कीं क्लीं कानक्लीना । कूं कूं कूं कानसुलि
ऊसुऊसऊ ऊसाऊ रुङ्कं कानडिक्लूं कं कं कं ङ्कं नरा साहवनहवरुलिणी
कां कां कां कानकूडि ॥ १५ ॥ सां सां सा सान यनी ससनससंन सासाङि
गीसावनालिमानंगीमिगलाख्याशुनदशुरुदयादियकाला सनस्का । कं

ॐ ॐ कान ब्रु ना कू न मनू मन नी मधु ला दंव हू गा तँ तँ तँ कान मू लि गु गु
हु गु रु गु हा या नि जा भा न व कं ॥७३॥ कं कं कं कान मरथ रू ठ रू ठ रू
० अ सा ध्व लि ग सू धी का ः श्रीं श्रीं श्रीं कान लक्ष्मी कि नि कि नि कि कि नी द्रव्य
कान स्था । कं कं कं कान यनी कू मू द कू लग टी सू ध व क्री चन नी हँ हँ
हँ कान हा स रु रु रु रु रु त्रि गा हा ट क सू न्य च की ॥७४॥ बनी सा या ग मा धं
यूत विधून विगा दि व्य का टी स मू का जा स व कं व वि ष्णा द ठ लनन मनम गवि
ना ग ख मू का । वी ० स्का कं त सी हा ज य रु रु ग व लि वी ० माल नि कू डी रु स्व
हं नि त्य म वो यु ण म ध गि न सा द व ना मू लि हु गा ॥७५॥ क्षौं क्रुं गो कों नँ स्वाहा
वा हा ॥ जा यू द्दं हि य गुं द हो यू त न्द हि ग थे व द । धन वि आ य गो द हो स
र्वं शानि कू नू २ व लिं ग्र क्रं २ स्वाहा ॥ द म स्व व न धा म म ॥७६॥ ॐ गि म हा व लि
॥ ॥ तँ ७ सम मू म रु यी ० सिं हा स न यी ० वी र भ य यी ० कं जा य कं त सं धा
हा य सी घा ह दि व्य सि द्धि स म य व कु या व लि ॥ तँ ७ ड का नू कं य कि क्षि न न
स र्वं नँ द्र द या य या व लि ॥ तँ ७ कां डी द्रूं कं कां क्र ४ व लि र क्रं २ स्वाहा

॥ॐ ओं वज्रिग्र क्रं २०० ॥ ॐ निवत्यचन ॥ ॥ वंन ॥ ॐ दमलय सेवार्चन्ध
नं दिमगीमल । वीनजा कॅत विक्रंत ७ २ हाणमम सिद्धय ॥ सुगंधचन
॥ कस्तु चंगुनूके चूनं मिक्र कुं दुन कादिके । भत वनात्म कम धंग्र हाण
वीनवं थिंग ॥ सिंदुन ॥ धूणुवर्द्धन कॅत स्यलांकुनं जीव हुं थ णं । ग्र हाव
वीनवीन । गि सिंदूनं वर्नं दायके ॥ माहनी ॥ काश्मीन कॅत विज्ञायमाहनी
कंजुलस्वया । ग्र हाणवीन गाग स्य फ्लले सी या क थमम ॥ जूकाव ॥ जूक
रं सर्व वीनंग वीनगाववनद्युर्थ । सर्वं ममल याउ वंग्र हाणयवमध्यनी

॥ यज्ञवधीन ॥ उयवीन मिंदवीनं भन कॅत स्यलांकुनं । ग्र हानवीनयागस्य
फ्लं वायकं वयनमम ॥ मालाकु सुम ॥ माल्यं नानाविधिविग्रं वलुंसो नत्यनिकु
नं न्लाधनात्म कंधं वीग्र हालेदं फ्लाकय ॥ नैवद्य ॥ अन्नं महानसंधिवीन
से ४ अद्धि ४ मयानै ... धाधिकेंउधंग्र हाणयनमध्वसी ॥ फ्लतांबुलयूग
... ॥ फ्लं फ्लादि ताम्बूलमिद्ध कं लाधि सर्वं ग ४ । अमृ याधि म्युयक्रानं जा
न्धीयाधि ग्रग्र ह्लनां ॥ ॥ गगाजाय ॥ ओं ग वां ३ क्ष तवाल ॥ ओं ग्रीं क्रीं उवह्
क ॥ ओं ग्लौं हुं गणयति ४ ॥ ॥ यक्ष मालयाय थागकि जाय ॥ ओं श्रीं हूंमू

लसा ॥ ॐ ज ह्रैं ञ्के लङ्गा ॥ ॐ ज सँ ञ्कूरु ॥ ॐ ज क्रौं क्रौं कौमार्य्यै ॥ ॐ ज क्रौं नि
र्वाणकुठवा ॥ ॐ ज श्रूँ श्रूँ निर्वाणजाय ॥ गुह्यकालि गुह्य कालिके ग हाल्प
स ७ ह्र जया सिद्धि नेव तुम निय त्वच्च सादा मह्र प्रकी ॥ जयवू श्री ह्र
हाल त हु ज ॥ श्रुतिजाय ॥ ॥ धूपं ॥ साधा र्ध सह जल्येव वृ पायेन
गलीव न ॥ ३२ हाल वीज वीन लियथो को रुल सिद्धय ॥ दीप ॥ सू
र कोग व देदीय सर्वं गिलिलाय ह ॥ सवा ध्याय के न ध्या नि दीपाय
प्रतिगृह्ण गं ॥ दक्षिणा ॥ ऊ नाविके मिदं कर्मय दि क्षि दम क्षि ऊ वे ॥ कू

रसं वृ णुगं सवंद क्षि णावय स्तो ह्मगं ॥ यमिद्वा ॥ ॐ ज यावक्षा हा स्व न त्यय
रु व नि रु व ना याव या व दा का ग रं मा या व ज्ञो लोग णी द्वा ग ग ण स ल य नि लो
य नि ब गि लेश ॥ यावह्र क्वा यिना कि ह्र विकमल लन नू वंय सिद्धा के मा लि ना व ७ वृं
वू ७ श्री गा स स्व ज नय नि वृ गं या न वू जा वि ना धे ॥ सू यनि ध्याव न दारु वंनु ॥
॥ मणुलं यीवयू थ्याव की श्रुं ॥ सागकान थ ७ ॥ ॐ ज यी ७ का ॥ ध्री भवाद्य ॥ म
ह्रमाया ॥ सर्वं थांय थाग क्षि न वा त्मा क्रम सूल स्थान ॥ ॐ ज श्यामा न का ॥ २ ॥ ॐ
ज श्री सं वर्ल ॥ यूथं का म नि ॥ ऊगं म्हादि ॥ ॥ नमस्कार यू न ॥ २ ॥ मणुल

स्क यूथ्यनह्ववर्णं ॥ गणाधिवस्कर्षन ॥ ॐ याचक्र क मज्ञमिकावसगया
नाक्षीविलीनास्तुयायाखासाक्ष्मि मनूलेनगगगः। लामिख्यसवासास्तुयाय
काःमाह्नवलामक्षुयनिनयायासिह्निगधात्तुवूगंदंवीनियूवक्षेरु
क्षुलयना। ह्रस्थनुरक्ष्याद्दिंगा। ॥ नमस्तेवक्रवक्रेउनेमस्तेस्तेनदाय
के। नमस्ते ह्रेनवेद्धुयेनमसीरुवगानक्र। ॥ ओ … तुयाग्निन्याव
दूकानीगःथेववा। हेनवत्र ह्रं मवक्रे एकाकारनम … ॥ क्रविनाःमारु
वेद्धह्मक्कउनामनभववा। महावलीव्रउदह्मनाउ … मवेक्रतके॥ गरु

नाःमारुवद्धद्विनाय। श्रीकान्निवक्कली। महावृद्धिक्रेव लिये ल … सन
त्निवर्द्धन। नसायनाय सर्वस्यक्रमय क्रयनामहग। नवेनसमहाद्वियीवीय
गालवस्तयऊँ॥ नैधेउकूलयाग्निन्यानेदउकूलहेनवा। नयत्तुयक्षेनावाध्यायवा
च्यवनमास्तग ॥ दक्षिन। सूत्विनसत्तुसत्विन। सेतुदंह्वव७। यसादास्तुवदाया
मिवनणजीवधावनी॥ ॐ नम श्रीनाथाय नि३॥ हुंनिदवस्कर्षन॥ ॥ आ
लसमयेकानय७॥ ॐ याचक्रेत्यादि॥ पातस्वीकानेयनमानक्षयाव७॥ ॥
क्रूथदवागीर्वाद॥ ॐ एकानेकरुवाग्निमूर्त्तिकयनायूःगुंथ्यनीवासवह्नम

श्रीगगणाय नमः भगवति नेत्रध्वनी दक्षिणे । स्नान गन्धकुं ध्वनी कलशवानुत्थ
दिनाय कार्यवामाय नमामि विश्वजननी देवि ध्वनी सिद्धिदा ॥ ॥ पुष्पार्घ्य पात्र
दत्त नाति श्वकी स्वामादीन् ॥ ॐ उडुकाणाद्व्य पाथा हंस कमलड जावादन
ध्यानिलिंगा वायु व्याघ्रां जिनाश्च ॥ गणिय कलक लोविंदु नाथार्द्ध हंगो । नित्य
कजाल धनाय पृश्य मकला हे नवामकुसूर्ति ॥ पायाद्ध्वा नवात्मा सकल
तस्यहनाहे नव ॥ श्रीकुंकुम ॥ चन्दन ॥ चन्दं चन्दन तिलक कुंकुम कनकाश्च
दिसमा हनेया निदद्दू निर्माघनाशन कर्ने श्रेयसदा सांवरनी । पूष्पिसर्व

विनात्मका रुव नदा मा मालिं सनाय हादवश्रीस्वम्रतीस्वशा विजयन नस्यवि
नेयाजुव ॥ सिंदूर ॥ सिंदूर तिलक वक्षि दहन नयाथा घवि वसिनीमा
यूथ विन वनेश्व दिसू रवि ना श्यादिदं सायन । माहं सर्व जन जगत्व स
भाल श्री सवासयु नम यूवं व न कार णवि जयन कामस्वनी वाजव ॥ माह
नी ॥ माहं नीजन संघ दजय कनीवाहं महा सिद्धि दयाथा घदु निर्माघना
शन कनीसं सानक नारण । नस्यासी वद नित्यमवमू दयं स्नान सदा सांवरन
दवीश्री त्रिपुर ध्वनी विजयन सनाजगमाहनी ॥ सगुण ॥ सिद्धार्थ दधिया

नदंसन विनंकं हंवद्वर्णुजलो ८ गंखंगुक्ष सयथसुकनलगाग्मेनाव
नाशीहलो। विधावंयवविदयहागसमथम्गोकांवनावीहथाद्वर्वोथागिनगनधु
लास्तकंसूगा ८ कुवंहुभमजलो ॥ जकंग ॥ य छिंवाद्भगम्हत्युवंवनगव ८ सं
वालिंमाजायहमानार्घ्यगुरुकानुर्णयगकनंछेयंसदासंयधं। सर्वाक्षिवक
लुयनाछनक्वचीसांनसंगानर्णजुला क्षति यूनानिघागकगुहंगयवितं ८
याहुवधा [illegible] वदि ॥ नं [illegible] भयूवंजगंयदंस्तगवलिवंगच्यूवात्सक्वा
ह्मभच्छावद्रूलागथाहविहभवक्षामनीसतयी। गोध्वहुनवयंवकंगनग

गंघायागिनीयं ८ कंवदक्षीमनाविंयक्षमसनं यात्रुनिलयंकुजा ८॥ ॥ तलाथ
ववसर्जनं ॥ जगच्छगक्षसनछेयस्वबस्कानिगगलय ८ नक ० महिम
नियूनननावङयायव ॥ वंजनमाहगवगिहगकमलाथंनिवदंगन्यास ॥ हृ
दयनात्मनीनं ॥ जसुणविसर्जनवलि ॥ आवमनं ॥ वलिकंगनिकिय ॥ ह
यंमाक्षि ॥ कोमाची विसर्जनं ॥ नभाशाङ ॥ कनंकानं ॥ ॥ ॐ निशाणाणवधि
मण्डलमाय पूजाविधि ८ समाप्त ॥

ॐ नमः श्रीकुब्जिकायै ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रें ह्सौं ॥ श्रीगुरुपादुकस्थायादकीपूजयामि

॥ दीयजागण विधिं वक्ष्ये ॥ कथं कुब्जामन्त्रणयाय ॥ द्वारुलखद्यानविय

॥ वाक्यच थनु ॥ ग्रामत्रिगालियानिन्यासगणगुरु सीमामी ॥ पूर्वदबोक

मीखेवासोमनस्यीस्वयस्कुम ॥ गमिया विधानं ॥ वितनजथा विधि ॥ सूद्धमी

यगमैखे वः ॥ विलक्षलिवनागकी ॥ यजमानस्यकस्नन पूर्याधिं कृत्वा ॥ प

यशुमनायादि ॥ पुष्पगाजन ॥ सिद्धिषष्ठु क्रियावकृत्यादि ॥ यखिमजद्यान

यदीयजागणसमर्पयामि ॥ गुरुनमस्कारं कृत्वा ॥ पखशुमगुलावायत्यादि

॥ गुरुनमस्कारं ॥ जश्रीकुब्जिकाथ्यादकी ॥ जदवीनमस्कान ॥ गणाथवाहने ॥ का

मार्च्चिनसागधामीन ॥ ध्यान ॥ जायगाय ॥ ॥ पृथवाआगमलुखानयिथ्यककथस

पूजायायआगमदुसाख ॥ काथनावलिद्धयागथाप्रयु ॥ वलिविय ॥ गणकुक

व ॥ यागिनि ॥ कुनुकादि ॥ वुलिगामीदि ॥ वक्षाप्यादि ॥ कुदवचुआदि ॥ डनयंअस

स ॥ लुजनादि ॥ वीसकथागिनि ॥ मकावलि ॥ जाप ॥ पसुपूजा यनुगर्पन ॥ भा

॥ माकमाया ॥ यथास्तुति ॥ समयार्त्त ॥ प्रविसव ॥ वल्लिविसर्जनं ॥ थानसवाय ॥ व

नियगुपूजाविधि ॥ ॥ थथायसीकोमनावाहनं ॥ पूर्ववत् ॥ यथाविधिन ॥ वाने

समानच्छायमाया ॥ ज तिकोमालिङ्डजा ॥ जवबदुक ॥ खवगणपति ॥ ह्वबन्क्षेत्र ॥
नैव छनवाय ॥ भाजनी छ्व माला ॥ यथा विधिन पूजा ॥ न्यासादि ध्यान ॥ भाव ॥ ॐ तिको
मावाह्वनं ॥ ॥ तत ऊर्द्ध नादि क्रियाकर्म्मं क्रमः ॥ अथान्क नेवखव ब्रह्मा मिथीयेडा
गक्रिया विधिः । सिर्द्धसाधानयाग्नेयाकूलवू तामणीक्रम ॥ यानवासनवायअग्न
मद्रुवन ॥ षट्कोन स्यमध्य त्रिकोन ॥ त्रिकोन सम ध्वजकाव सका याककूनद्वयी
षट्कोनस्यवोह्नमण्डु लाक्ष्न ॥ उसा ३ ॥ ॥ ध्वजमण्डुलयाय धूनव्काव ॥ वनू
वाय ॥ ॥ क्षीयनयूर्द्धकोणेञ्व वडुयाकालमालिक्षेनु । ह्ववर्न वेवनेसूत्र्यायिषट्

कोणेश्च विधियन ॥ वायूद्धाजवचनेष्व वी त्रिकोणाकालमालिक्षेनु ॥ ॐ ह्रीं ना जेस
षर्न यवीऊर्द्धव ज्वष्मु वीवथ ॥ आग्नेयी यजुवज्रकु सर्वविरूपेधायथ ॥
आनन्द नयत्रिभिमगे यंद्वयय वधुमालिक्षेनु । मध्ये मृदुधावयकुपार्श्व दक्षिणे
कनुडुविदू ॥ पावबाम ऊर्द्धपार्श्व ॥ पाशा ये कीच कीचदू । तनविधानकर्म्मयी
पुयापयजपूजनं ॥ पूर्व्वषट्कोनस्य विनधिचक्रस्थानरवचनवनचदू सञ्छिन ॥ ष
ट्कोनस्य नैऋत्य नाकनेचकस्थाम हुवनवचदू सीञ्छिन ॥ षट्कोनस्य वायु
कोन मतियूवकचक्रस्थानजवववनवचदू सीञ्छिन ॥ षट्कोनस्य ॐ ह्रीं नानकाभद्र

पिक्वान वक्व क्वान स्य खबबवनू सँस्थिन ॥ अठकान स्यवानि काका नष्म धानवक्व
क्वान आनन्द वनू सँ स्थिन ॥ ०ं निय ठ्व वनू वायविधि ॥ ॥ नक्ष्म नक्वा पात ॥ पि
क्वाण सँ स्थिनं ॥ नक्वु पात स्य दक्वि ल ठ्कू ण्ठुज ॥ नक्वा पातस्य वामड द्विर्ज ऊ राव
मीसँ ॥ ऊ र्जपा किर्के ॥ नकोपात स्य ऊ ठेकैयमा स ॥ तिवनू वायविधि ॥ ॥
अठ्कोन य वाध्व वनीसन्ना स्कि कवलि ॥ वनी सियागिनी वलि ॥ वुजन ॥ वाछय
सन्नस्कि कवलि ॥ ऊ लिनाग पि ॥ छ पुकादि ॥ ०ं न्द्रादि ॥ धनवलिस्वाढवुजा ॥
०ं निन व दवा वनू वाय विधि ॥ ॥ यात दवनं नछिन ॥ नछि दवमदीय

थनव ॥ थानि नीस्य वनू पाकयाय ॥ स्वलावार्य सँन्युासयाढाव ८ जाप्य मदु
पयुथ्वक लिकान सयवनू साध्रय ॥ स्वलखव ठ ल्हन ॥ त्रिक्रुँ त्रु ऊनिस्कापनं ॥ त्रि
क्रीप्रीं क्रुँ क्रौं ॥ रत्नसाध्रय ॥ लखनमूलननुय ॥ सालिकि नापुवा किनाधूल
नक्वाय ॥ द्रदूथनकस्कि ८ सारवव ॥ पंक्रप्रं ॥ वनक्वाय ॥ गर्क्रां क्रीं द्रूवौ अठकाका
य ॥ पंक्र वनू पाकयाव ॥ ॥ त्रिपकावदायक विधि ॥ थानकायावथनसाध्रय
थनसन ॥ धनचूनना ॥ साविघूननाल ॥ जासपन स्वाय ॥ जासन ॥ कसुवि काय
नश्यानक ३ गुक स्याल ६ लवढ ८ लवकद्ववग जिलिस्वाल नमनव ३ पिपलि

॰ ठासनधम ॥ द्दृ घनसाखवकामन॥ धवि॥ वीनदह्मनक्काय ॥ न्यासयाकाव छाय
॥ त्रिप्रकानदायक ॥ त्रिकोणाकृति ७ लिंगाकृति ८ सखवद्या विनानू मापनद्वयक
२ ॥ २० ॥ ३ ॥ विनजन क्कँ ३ अथवा ढा ८ अथवा १ अथवा ९ अथवा ११ ॥ अथवा १
३ ॥ अथवा १ ७ वम विनजन ॥ धनसथमनव ४ ॥ त्रिप्रकानसर्द्धू थन ॥ खवव॥ द्रुवन
जयवन॥ सखव॥ मानन्द॥ धनर्द्धू थ ढाव यिनात क्काढुकापयन ढिय॥ वायूनर्द्धू थढ
क्कान ॥ अरुँ लिक्कि १ ॥ धननवृ य क्ष सकननकाव ॥ त्रिप्रकानन॥ साधनथ क्ष वायन
याढमाल ॥ धानसक्कवाक्रुढायर्क ॥ यात सक्कायधढुनवाग्रम ॥ नाकूनहन॥

धक्कानाय श्रीकृसकयना सिय ॥ यँनवृन॥ त्रिवन॥ आनन्द वयूनत ॥ रिंववीनप्रवा॥
धायनयाढवथ ननक्रु ॥ ॐ नँ नँ नँ नँ नँ ॥ वीजपूनकी ॥ यवस्त्री रु ॥ यवी स्रीथ ल्ल ॥
वाक्वीय ८ थेनू ॥ अयम्बनवालाक ॥ ॐ त्वादि ॥ जयनाहृतनसा ह्र त्वाकनासयकदसी
यवा॥ मकासेनवनड मुयनवानक्षिगोम्हता ॥ नमानमृगंकूर्न्हं पूजमानविविक्रयं॥ ॥
ब्रह्माण्डखणुसी ठुनमन ॥ यवनसमयर्द्ध आपूविनम्मकाकूर्म्हं धीपुस्वाचार्यमानय
॥ अक्षादनतुजाकीर्द्धुं मद्धवर्गिका लमारितं ॥ कीनायत्मथना ह्नुतंअलियर्ध्यनमामु
न ॥ ॐ नियमाम्हन ॥ सिंध्रजजम॥ विष्ठिकर्णुयमाका ॥ आग्रन ॥ नवनत्ने ॥ धनमक

याग्रसन ॥ थनेन सकवनाम्वाय धूनक ॥ वाकसमूकानस्याद्भ थनूवाय ॥ त्रिचनू
यातजवरवव ह्नवनवाय ॥ सन्कानसधाङ्क्स ॥ चूय नियान दुँदूवलिवाय ४२ ॥ द्वे
वयान १० ॥ दगं दिमवाय ॥ यङ्कवलिवाय ॥ थवनजवचासवायविधिथ्वन ॥
ननाया निल्वादिन उवायविधि ॥ मूलाचार्यन न्यासयाच्चव ॥ आचार्यपत्रिमाक्लिमूर्ख
जागिनीपूर्वमुम्र्व सिङ्क्ष्वा ॥ ७ सिंह्नासनायया दूका ॥ ॐदमा मन्नमठ ॥ ७ हृदयया दि
येपूर्ज ॥ जसँ ल्ड ॥ हैँ ७ वीनवन्दनयादूका ॥ सिंहूनपादूकाँ ॥ पूष्पयपादूकी ॥ हैँ ७ वीन
यादूकाँ ॥ यजमानस्यदीपजानार्चनार्थं ॐदं अर्घस्वाहा ७ ॥ जपदि ॥ थं ९ यर्य ७ ०

ज्वलीखड्गत्र उ श्रीखण्डज्वाल उ जदमासि १ यानमीम ८ मूल्कर ॥ वाक्ष्य ६० ० ॥ हैँ हु
गं ह्विवन्दनं हैवावीवपादा हँभिवव ॥ उह्नादकनयुक्कात्ययादपूजानम्ल १४ ॥ ॐ
लिङ्वायविधि ॥ मिज्ञकाळ्मावन ॥ मिणाज्ञकासकावनपूजा ॥ वीकजनञ्जकाँ मूलाचे
र्यस्वीपूजा थनकम ॥ यजमानस्यैउवायक ॥ उवायवयामि आदिनकमाकंथनसा
नम ॥ मूलाचार्यन्किवान्नि ॥ मूलाचार्य्ययाख वनासुयङ्कवलिवाय ॥ ध्वन उवाय ॥
विधि ॥ ॥ ननायाग्निनी आदिनवीकजनताबूजा ॥ हैँ ७ सिंहासनायपादूकी ॥ ॐ
वीनवन्दनयादूकाँ ॥ ह्रीँवीनत्म्मसिंहूनपादूकाँ ॥ ७ श्रीवीनाक्वेनपादूकाँ ॥ ७ ह्स्क्रूँ वीन

माहनियादूकं ॥ ॐ क्रौं यज्ञोपवीतयादूकं ॥ हस्ति विभव ॥ कर्णुपताका ॥ सिंदूर
वस्त्र शान ॥ मालापुष्प ॥ यानि निधान ॥ त्रि गवक्षावक्कवय धनात्रिभूषादि यज्ञोप
वीतानावस्त्र विविताग्नि " वचदात यथापुनिन्नि ॥ ॐ मं ॥ आनन्द ग किंतु नवान्द श्री
मत्रुविद्यावानु प्रवीह्रं ॥ आदूकाओ ॥ त्रि ॐ ह्रां हृदयाय यथापूजा ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा
॥ ॐ ह्रूं शिखायै २ ॥ ॐ ह्रैं कवचाय २ ॥ ॐ ह्रौं नेत्राय २ ॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ ॐ नि
वेदनं " नैवेद्य ॥ त्रि ॐ सं ॥ धूपदीप ॥ नैवेद्य ॥ पाण्डपदास्वन ॥ त्रि ॐ यवसूर्य
ष्ट कृत वीव सिद्धानामनुमोदितं ॥ सांख्ययकावर्णार्थयतिनिर्मलस्फटिकोपमं ॥ व

साधनार्थं सर्वसत्त्वं यथा तप श्रुतिनिर्मितं ॥ निष्कलं सकलात्यन्तं कमल पङ्कं नमाम्यहं
॥ पृष्ठ कृत वीव उं मं धर्म सिद्धानामनुमोदितं ॥ बुद्धं कविवाणुलक्षकाकालन्नमा
म्यहं ॥ ज्ञानगर्भं धर्म वाजानां मलनागविव क्लिष्टं यादेश्यविनिर्मुक्तिं ताम्बक
निर्मलत्वयाओ ॥ दक्षिणा ॥ त्रि ॐ वलि ष्टं कं मकावीवैचपतैवद्य साधनमाकरव
सत्त्वानां निर्मलस्फटिकोपमं ॥ ॐ त्रैं सद्धावसं दिव्यं सर्वहूतासमदाविनं ॥ निष्कलं
सकलात्यन्तं पद्मपत्रं नमाम्यहं ॥ स्मयपात्र ध्याय ॥ सिंदूरदक्षिणा ॥ ॐ सिं
दूर चन्दन विलेपन पुष्पमाला यज्ञोपवीत वस्त्र नाओन धूपदीप संपूर्णपात्र

मलिनामिषमीनयुक्तं नाम्बूलमायकारूत्ता निलिप्तूर्द्धिनानी ॥ तमानि सर्व्वयत्रिण
नियविपूजितानिध्वंकृजावतिनदेवगणासमस्त ४ संपूजिता रुतमिदं त्रि
यसंप्रदानाणाक्रिसयारवपुमगं लदकल्लक्ष्मी ॥ ज्यौसोसदादिसदायन
मयपकथावद्रणीलासमस्तव्रक्ता विष्णुपदं ऊसकलयपूमृणोहृतनिम्यन
व्यप्४ ॥ शक्लासाध्यं गणुसंवन्नगरुवणायायपदस्तुयुवाना म्यामायकारूणा
गीक्षणनानिसावि सिद्धि सोमस्तनाथं ॥ जयायदवीक्लुट्ठिकाद्याक्रमकुलसकलं
मण्डलस्तं विषयवा ॥ कंजपीठं जेयपीठमेसगणणुदेहनायानिनीहृन्यमव ४ ॥

श्रीवश्रीकण्ठनाथं यजनयति धीदीपजागादिपूर्व्वं ॥ विघ्नान्त्रप्रपमकेंऊतिम
नरुलपानाजलक्ष्मी रसना ॥ जनयनामानुणाहुंयादि ॥ ननासुकृद्विकाय
वीस सिद्धार्थदायनी ॥ सद्भूणाक्रिकयनिर्यदकजाकेपनमश्वरी ॥ जनिद्विघ्नवीय
शागन्तुणादिमक्षावसाम्यदं ॥ मस्मत्युन्यलाकानीं शिवदवकुनियमः ॥ यजमाय
ष्नकामना थंदीयजागण श्रीकुद्विकानिसाद्वनिविधेसर्व्वंयविपूर्णुमस्तु ॥ म
यगंन्याधि ॥ हंनियानिया ॥ मिसाहकासकाय ॥ निहृकाद्रकावनपूजा ॥ थवथवम
रुनपूजा ॥ कमार्कथनहृना ॥ जनयासयाहृकी ॥ काकांद्वंकेणपालायपादकी ॥

यन्दना क्वयादुकां ॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पादुकां ॥ अतर्गमावाङ्कवगुमूदा ॥ वनूयारस्मय ॥
ॐ यवनूर्कीगृह्रुगवीपत्यादि ॥ दक्षिणा ॥ ॐ वत्तिगृह्रुरुत्यादि ॥ सिन्दूरदक्षिणा ॥ ॐ
सिन्दूरचन्दनविषत्यादि ॥ क्षात ॥ ॐ श्वावादोमधुसंस्कृ सितनूधिवेनिरीवदकर्म्म
भिर्म्मे ॥ स्वस्वधार्गपक्कनूयवकनधर्नस्मृद्वकुयकर्म्म ॥ नहामानूस्कृदवाप्तूनू
गतवलायापविन्दूद्विमार्थ ॥ नौमि श्री वामदेव स्मृक्तिनक कूपवद्गतीन्दो यालीवय
वा ॥ पूष्पगन्धादि ॥ कैतया ॥ ॥ ऐँ ॐ मधूनासनपादूकां ॥ ॐ श्री ह्रीं कूलपूरवट
कूनाथाय पादूकां ॥ वन्दनाक्वनपादूकां ॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पादूकां ॥ अतर्गमावाङ्कगर्ज

निमूदा ॥ वनूयारस्मय ॥ ॐ यवनूर्कीगृह्रुगत्यादि ॥ दक्षिणा ॥ वलिगृह्रुमहावीपत्या
दि ॥ सिन्दूरदक्षिणा ॥ ॐ सिन्दूरचयन्दविस्यादि ॥ क्षात ॥ ॐ आतुरसघनादवदूकवू
नमूनं नकवनूकवत्पुं ॥ वक्कवक्रितर्ययूगकनविधिर्न्हावदवोपसंस्कृ ॥
शक्तिमालाकर्म्मयूनतपिविधूर्नवेष्पवायद्विकर्म्म ॥ नौमि श्री वालतूर्यकुनक
मनिसर्वसिद्धिरावंपूर्यवे ॥ पूष्पगन्धादि ॥ सर्वपूर्ववनू ॥ वदकूया ॥ ॥ ऐँमूग
सनपादूकां ॥ ऐं ह्रीं हूं ... श्री कूलगणेश्वराय पादूकां ॥ वन्दनाक्वनपा
दूकां ॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पादूकां ॥ अतर्गभावाङ्कगजमूदा ॥ वनूयारसमय ॥ जय

धूपं ष्ट्रक्षगवीय स्वादि ॥ दक्षिणा ॥ बलि ष्ट्रक्षमकावीय स्वादि ॥ सिंधूनचन्दन
विप स्वादि ॥ स्नाय ॥ ०विघ्नसंघ क्र ठ स्के लिवसतनविदिग्गोकन्दनं स्रुं ॥ जिनर्त ॥ न
ष्वर्कं ग न तनार्व सिंन संकिवणाद्वानवाम पुसंस्कं ॥ धूपदन्के चमूलं पचरगुकच
धेननहनुनैलयार्ग ॥ वन्दश्रीकुजवास्यविविद्यिवयकर्नकार्यासिद्धिपुदक्ष ॥ अ
वगन्धादि ॥ सर्वपूर्ववत ॥ गणपति ॥ ॥ ० ॥ ०वृषासनपादुका ॥ ०सिंहासन
पादुकां ॥ ०ॐ ०सं ०श्रीकण्ठनाथाय स्वशक्तिसहिताय पादुकां ॥ वन्दनाक
नपादुकां ॥ ॐ ०सं ०पादुकां ॥ पठर्न मावाङ्क त्रिशूलथाविमुद्रा ॥ चन्दुपा

ठस्नाय ॥ ०धूपं ष्ट्रक्षग स्वादि ॥ दक्षिणा ॥ बलि ष्ट्रक्षमकावीय स्वादि ॥ सिन्दु
नचन्दनविग स्वादि ॥ स्नाय ॥ ०नुकुणाकति भर्गवृवक विगगनं मूवकस्के
तिष्टती ॥ गन्धच्याप्रेवकवेधूगकाव४ नियर्तधवीकालिर्गधार ॥ वामादू ह्वारवानि
णुकसम किवनादवकालिर्गकण्ठ ॥ वामातवाकेकस्कैमणिकनकरननीमिश्री
कण्ठनाथ ४ ॥ अप्रगन्धादि ॥ सर्वपूर्ववत ॥ श्रीकण्ठया ॥ ॥ ०पद्मासनपादु
कां ॥ ०ॐ ०सं ०श्रीशिखास्वच्छन्दमहाभैरवाय पादुकां ॥ वन्दनाक्षतनपादु
कां ॥ ०ॐ ०सं ०पादुकां ॥ पठर्न मावाङ्क मूलमुद्रा ॥ चन्दुपात्रस्नाय ॥ ०धूपं

वीं ह्रूक्रमवीजस्यादि ॥ दक्षिणा ॥ ७ बलिहूक्रमकावीङ्‌ ह्यादि ॥ सिद्धवद्ध ह्री
ं ॥ ७ सिद्धवन्ध विधस्यादि ॥ गाथ ॥ जपा ना ब्रह्म कपालम ह्ल ह्‌ ह्यादि
अ ष ग श्री दि ॥ सर्व्व पूर्व्ववत ॥ ब्रह्मन्ध्या ॥ ततो वज्र बलिपूजन ॥ सर्व्व पूर्व्ववत्
॥ ह्‌ लिवीन जन पूजा विधि ॥ ॥ ततोऽप्याचार्य्यस्यपूर्व श्रद्धया दाथ जाननर्ये
था ॥ वीन जन स्थनमस्कारयाय ॥ वाक्य ५०७ ॥ ७ अभ्यखण्ड धान मण्डलयपीत
पद्म समायुर्त । लाजावृश्याद्धतं दीर्घंच मिश्रजानु संस्थितं ॥ देवदत्ता समाल
क्षीनायुधूर्व रजसंग्रिय ॥ धनधान्य सदा लक्ष्मी वृद्धि सर्व्व च मङ्गल ॥ पूजनस

र्व्वकीवीया ४ सर्व्वदेवा वर्ज्जित था २ ॥ ॥ सर्व्वथा नित्यादिन मस्कारं कृत्वा ॥ अ
थ गुरु पदमनदेवा वर्ज्जनिकथामि ॥ गुरुर्णा सा दिवीन जन सर्व्वपूः ॥ गुरुमण्ड
ल वार्ज्जनि कृत्वा ॥ थव थव सह्व वनव लिविय ॥ धन धून दावपूजा चार्य्यस्य पू
जाकाय ॥ पूजा वाक्य ५०७ ॥ ॥ श्रीगणिक उवाच ॥ अहं कथ कासाव कूर्थं तव
व ४ श्री देवदेव समनाप्रणम्य । हस्तु हितकालयदकं यतिह्न मु समर्थव
नुदक दीर्य ॥ श्रीवज्रुवाच ॥ ला साधकं हाजु नवाकृवार्ज्ज सर्व्वकर्मकोरल सिद्धि
कृता ॥ जावन सिद्धि सलया नरुणा ४ नाव कमल कृपणमा विसर्व ॥ देवावाच ॥ अ

ज्ञाप्रसादगुरूणां गणथां नवक्रः आज्ञाप्रसाद गुरूणां गण सिद्धिलक्ष्मी ॥ आ
ज्ञाप्रसाद अष्ट थां नि निलाकथा ला ॥ आज्ञा सर्व्वथश्री सिद्धिममद कि दद्धि ॥
श्रीदधूवाच ॥ आज्ञाम विमलं गक्ति दी यप्र वाध सारवरा ब्रवू ॥ आना विनंश्री
आज्ञ मिगं क वाष्ठला किं रगवानकृजणः ॥ ॐ न्यादि आज्ञावाक्य ॥ ॥ नमागु
रुनाय श्रीवनूथनं नत्वा ॥ आचार्यमूर्तये ॥ न्यासयाय ॥ भारान्यासा ढुन ॥
गुनगु ह्यालमा पूजा ॥ वन्दनाकन आत्म पूजा ॥ नमावनूरवंनादिन पूजा ॥ ॐ ग
रुणसनाय पादुकां ॥ ॐ ज्या महासिद्धिकैवन पादुकां ॥ ध्यान ॥ ॐ ग नीत्तगुगा

सा ध

नर्गनवं वत्तुवद्धू विलावनः विगूलीजाथ्य मालाप्र विघ्नां मितपू विता मूलना ॥
खगणध्ववसमावृटं विलु ह्रि वक्कु सीस्कुि गंश्रा वाखणण्णवंयवं लुक्ष्मीसीतगु
यायकं ॥ ध्यान ॥ पूजन ॥ ॐ ग क्ष्मां क्ष्मीं गूहूं गानिकाथैंक्रीं लूंकलु धंमांसीं मूंम्यु
विगुद्दसाकि नियथ्रक्त दिपू विजनूमीसानन्दयवपादुकां ॥ ॐ ग वाग ध्वीगु
गूं वतनगभण लीकराग गक्रं गा निलीगगणला वप्स्तूनसंयानतिगगणा
नन्दय वगण आवाधिवं व उपह्रि लक्ष्मकाति सिद्धिच उपह्रि लक्ष्मकालियानि
निपादुकां ॥ ॐ ग चन्द्रविसममायूकंप निमूर्थ्ध उरदितः ॥ पद्मा विणत्सनंथ

वंकृगुलिसनमाम्तुनखवच्वपादुकां ॥ ध्यान ॥ ॐ ऐं ओं क्षं वर्द सिद्धिर्द नन्द सर्वसं
पतियायकं ॥ भाञ्जिलक्ष्मी सदा नन्द्य लिवद्वपिनमामुम ॥ कीवनवकृत सर्व्वं
पविपूर्णुमस्तु ॥ ॐ लिङ्कं वचपूर्वकालं ॥ ॥ गताहूवच पूजा ॥ ऐं ओं वृ यास
नायपादुकां ॥ ऐं ओं म्लु मकासिद्धिकुवचपादुकां ॥ ध्यान ॥ ऐं ओं पीतवर्णु निर्दं
यर्क सनाकाम्याति श्रीं लावनं ॥ वपुर्त्तजायुस्कका कीक्रंकनूयात धूनाद्द
ती खुम लाम्न स्किताश्री येष्वायितं लिविदं तथा ॥ चिन्तय ७ हुवर्नदवी [illegible] या
लि वलि दूयान वं ॥ ध्यान ॥ पूजा ॥ ऐं था नगत्याथ पथ्याना म खीवद्भुवाथ धं

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
सूं मकां धं कं कीं कूं क्ष्मीं मू नाहनकाकि नियमुलप्र विविस्वानन्दपव पादुका
ऐं ओं नाथायेश्व स्तूं श्री नल वर्गलाककागनवकु गामिनि स्वर्गलाक भूहनसंवा
वनिस्वर्गानन्दधं व स्वर्गविधिवीवती सवक्ष कालिसिद्धिवलिगव ककालि
यालिनिपादुकां ॥ ऐं ओं लिखाश खवनधेश्कं कूद्विकानन्दसंयुतं ॥ कालिमन्त्रन
संयुक्तं कृगुलि सनमामुन ॥ हुवचपादुकां ॥ ध्यान ॥ ऐं ओं हूवर्ण स्वर्न सर्व्वं
यविर्तं यह साधनं ॥ श क्रिमं यदाल क्ष्मी वक्षदूपिनमामुन ॥ ह्वनवकृत
सर्व्वं पनिपूर्णुमस्तु ॥ ॐ तिहूवनने स्वकालं ॥ ॥ ततोऽव वनूपजा ॥

ॐ ऐं ५ मकर्णासनायपादुकां ॥ ॐ ऐं ५ श्रीं महासिद्धि ५ नवचक्रपादुकां ॥ ध्यान ॥
ॐ ऐं ५ ध्यं नतुहिमसंकाशं मीनवक्त्रं श्रीं कुंडल्यैचक्रं ॥ सृष्टिरूपामनीचक्र
ण्ं स्वयात धृतामृता ॥ मनीपूरक चक्र श्रीं मकर्णासनसं स्थिता ॥ ध्यान वाजुन्दुव
णाय वृद्धि सायुश्यमूर्खं पूर्यं ॥ ध्यान ॥ पूजन ॥ ॐ ऐं ५ ऐं ह्रीं ह्रूं वदय लिखजं ह्लूंक
नार्थं लालीलं ल्नूं मणीपूरक लाकिनियमहायुविष्णुसानन्दपदवपादुकां ॥
ॐ मः ह्रनिप्तूर श्रीं नतयवललाकरानगर्द्र्नामिनिपवललाक ग्रहगस श्री
त्रैलोक्य नन्द यवयवलाम्बायवीयतसलक्ष्मकाटिसिद्धियतसनत्का
[illegible] लपादुकां ॥ ॐ ऐं ५ नकमन्तुलसंपूर्णुनकत्नु त्रिप्रति ष्ठितं ॥ नूकाग्नि
ज्ञाप्रवाला वृंकुंडलीसनमा स्तुत ॥ ५ नवचक्रपादुकां ॥ पात ॥ ॐ ऐं ५ सं ह्नाम
वर्षी ओजायविर्यपायनागनी ॥ सिद्धिसा नाग्यर्द नर्द विष्णुवुपनमा स्तुत ॥
ऐं ५ नवचक्रगतसिद्धं पविधूर्णुमस्तु ॥ इति नवचक्रपायूकां ८ ॥ ॥ न
णासखनपूजा ॥ ॐ ऐं ५ कल्यवृक्षा सनाययपादुकां ॥ ॐ ऐं ५ श्रीं महासिद्धिस
पनपादुकां ॥ ध्यान ॥ ॐ ऐं ५ नकवर्णमहाननर्दं लाविवर्कीत्रि श्रीं लावनि ॥ स्वन
पद्मान्हरुस्कश्चम्र कायारधृंगालय ॥ स्वाधिष्ठाननिष्ठि श्रीं नायकीक

ल्यहृत्का स्थिता सन । नवैवयषवरंद्रपंधन धान्यपुराणदं ॥ ध्यान ॥ पुज
न ॥ ऐं ह्रूं द्ददिकायकलदियाय ह्रीं ह्रूं पादा ध्वं वां वीं ह्रूं मों स्वाधिष्ठात
पाकिलि रय धिपूर्वी अनुग्रहि सानन्दद वपादुका ॥ ऐं ३ स्थानाधि
च त्रमर्त्यलाकरागनगंई नामिणी मर्त्यलोक अष्ट नमः श्रीव वीम र्त्यानन्द
वमर्त्यान्वादवी अष्ट नक्ष काटि चिद्ध अष्ट नक्षकाटि यागिणी पादुकां ॥ ऐं
३ डाजा पूकादि सपकं कर्म्मभवपपूजित ॥ आदिखन कविनिक्राका
कपुंशीनमा पुन ॥ सखवपादुका ॥ नाय ॥ ऐं ३ सख्व नेमं सर्व्वदेवी यानिव

लवी ... विवर्द्धनं । ... यमाकसदाल क्षीं ... वनमा पुन ॥ सखवनत्स
वं य नियूर्णमस्तु ॥ ॐ निः सखवन ... ॥ ॥ नेना सर्व्ववनूपु
जा ॥ ऐं ३ धीन्यासेनायपादुका ॥ ऐं ३ क्लीं महासिद्धि सर्व्वचत्रू पादुकां
॥ ध्यान ॥ ऐं ३ सूर्यमवर्णपुत्रतीका मं वद बद्धि विलाचनं । उत्पलाय
भद्र सर्व महायाग कलाधृतं ॥ साकाद्ध वीनहाल क्षीं धान्यपासो पु
लि श्किनं । सर्व्वचत्रूदवी सर्व्व संपति दायका ॥ ध्यान ॥ पूजन ॥ ऐं ३

नमो रुनवर्गी हन कमलाय ॐ नूं रवना ॐ क्रीं हूं श्रीं। आधावताकिनी
परमहंसी श्री अरवण्डुसानन्द देव पादुकां॥ ॐ ऐं ॐ नाय त्रिनून्तन
गलाकरानगङ्गामिनी नाम लोक अमृत सैवावनीनागानन्ददेव नाम
स्वादवीय स्वावीलक्षकोटि सिद्धिवन्दालिनन्दकोटियामिनि पादुकां॥
ॐ ऐं सर्वत्र लक्ष्मी चक्र दिव्यं सर्व्व सिद्धि प्रदं २ हुं। सर्व्वलोकविध्वंसयानि कुं
गुलि मनमा मुन॥ सर्वचक्र पादुकां॥ नाद॥ सर्वचक्र भावनं पूजयंयवि

वैदन्त साधनं॥ ॐ स्त्री सिद्धि क्रिया सर्व्वं ॐ ह्रीं श्वयमु नमामुन॥ सर्व्वचक्र तत्व
र्वं यथविपुलं मन्त्र॥ ॐ तिग्मा मिक्रा ले॥ ॥नमो आनन्द वह्नू भूपा॥ ॐ
ऐं धनासनाय पादुकां॥ ॐ ऐं ॐ कं कालिकादेवी श्री पादुकां॥ ध्यान॥ ॐ
नीला ओन नि दंष्ट्र वक्त्रा हूं त्रिलोचनं। खड्ग दवी पु
र्गु यात्र कलत्र हर्यं॥ श्मशान निर्वि विध्वंस मातृ नाचति। आज्ञा
मुनादेवी कालिकाल विमागणि॥ ध्यान॥ पूजन॥ ॐ ऐं कि लि २ विद्ध का

कैनाय ऐँ ह्रूँ नत्वाधिप क्रँ ज्रँ हूँ श्रूँ । आम्नाकाकिनीय श्री अम्बागुसानन्द
देव पादुकां ॥ ऐँ ॐ क्रौँ ह्रं न्द्रनी ॥ ल अनन्तलोककृतागगङ्गनामिनी अनन्त
लोक सृगमे वावति अमृतानन्द देव अमृताम्बा देवी अनन्तचक्रकाटि
सिद्धि अनन्तचक्रकाटियानिनि पादुकां ॥ ऐँ ॐ अनादि वाधसंकासी आम्ना
नीतिनिनायकं ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदानाय कुण्डलीसनमास्तु ते ॥ आनन्दचन्द्रपा
दुकां ॥ नाथ ॥ ऐँ ॐ नमः कालिका देवी गुह्यानिर्वाननायकं । व्याधि साध

रयैश्चार्थकानमृत्युनयायकं ॥ आयुपूर्वं जसाराज्यलक्ष्मीसंपतिदायकं ॥
कालीमहूस्कनालीन आनन्दचन्द्र नमोस्तुते ॥ आनन्दचन्द्र सर्वार्थ्य यवि पुष्पु म
स्तु ॥ इं ति आनन्दचन्द्रयष्टिमकाले ॥ ॥ नमालिवचन्द्रपूजा ॥ अगुरुयात
पञ्चपूजनं ॥ ऐँ ॐ पद्मासनाय पादुकां ॥ ऐँ ॐ क्रौं क्रौं ह्रं ह्मालकयअगुरु
पादुकां ॥ ध्यान ॥ ऐँ ॐ चन्द्रकोटिमहानजाविनगी व ज्रगुज । पूर्णुयात
हृनाथदेवीवचनाकमलारुया ॥ वस्त्रालिकानदेवाले साराज्य सिद्धिकामदाय ॥

ह्रीं कामसाठकी दवी त्र्ख्मशक्ति नमास्तुत ॥ ध्यान ॥ पूजन ॥ ॐ जम्बूसी सकाय
कामसान्कनी दवी श्रीपादुकां ॥ ॐ जजूधाय हीकस ष्मातनव्वा विष्कय त्रि
युगक्रिज्यूय वायनिर्व्वानि चन्द्रीका दवी श्रीपादुकां ॥ बियाज्जलि ॥ ध्यानमूत्र
॥ ॐ जगप्ष्मादलशक्ति ति ह्नान ... सेवव संयूनं ॥ ज्यू हास्कक मूनयन कु
ली सनमास्तुत ॥ ज्यु ज पादुकां ॥ मात ॥ ॐ ज ज्यूणुजा कामसा दवी स ह्वीन
नकावलि । बान साकान्क प्रायानि सर्व्वसिद्धि प्रदायकी ॥ ज्यु जुनत्स वं पवियून
मस्तु ॥ ज्यु ज मातदक्क ॥ ॥ नना ज्यू ड पाकि कीं पानवाभ ॥ ॐ नय प्मासयवी

दुकां ॥ ॐ ऐं क्रीं ॐ ह्नाननकाउवीजपादुकां ॥ ध्यान ॥ जमूर्च्यकादिप्रतिकां सं
युगह्स्क ति लावनं ॥ विन्दूयाव धूताप्रूर्णुउत्पलावलयदारुया ॥
नानालंकान ह्रयामं ॐ ह्नाकामनमूसिद्धिदा ॥ ह्रीं वाउ साठकी दवी वि
ष्मूलकि नमास्तुत ॥ ध्यान ॥ पूजन ॥ ॐ जम्बूं वं न व्वायवाजसाठकी दवी
श्रीपादुकां ॥ ॐ जयनमुधाव ह्रूधावामू ख्वी क्रिमसीवनीभ्रमर चिव
श्रुह्नवव श्रूमूर श्रीं ह्रूंप्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रूं विधाणवा विष्कयय वायवी

कं च १

यनिर्व्वानकालिदेवीश्रीपादुका ॥ विद्याञ्जलि ॥ थानिमुद्रा ॥ ॐ ज्ञांज्ञीमका
नष्टक्रमरवत्नुग्रममन्त्रि ॥ मन्त्रसिद्धिसमाख्यानामकुण्डलीसनमामुण ॥ अर्द्ध
याकपादुकां ॥ भाव ॥ ॐ ज्ञंस्नं नामसिद्धवीवाजसर्पत्तिदायकं ॥ सर्व्व
विघ्नविनाशाय सर्व्वलोपविमोचनं ॥ अर्द्धयाकिकीधारवामेनत्तर्व्वय विपु
णुमसु ॥ अर्द्धपाकपायवाम ॥ ॥ नमः काञ्जपाचाये ॥ ॐ ज्ञं यद्मासनाय
पादुकां ॥ ॐ ज्ञं ह्रूँ ह्रौं क्लियाल क्लं काञ्ज श्रीपादुकां ॥ ध्यान ॥ ॐ ज्ञं कामानिसर्म

प्रवालतूयमन्त्रकरुजवदण ॥४॥ काञ्जविद्यालिपूर्णनिपाविजागवनारुया ॥ सर्व्व
दृशनावर्त्तश्चक्षुद्या सर्व्वसंपत्तिदायकं ॥ वीनामसीपदेवी ज्ञू ज्ञं क्लिनमामुन ॥ ध्या
न ॥ पूजन ॥ ॐ ज्ञं भ्रं गीनामसाटकीदेवीश्रीपादुका ॥ ॐ ज्ञं ह्रूं ह्रौं शिवनत्वाधि
कयं ह्लां क्लिं पूपनायनिर्व्वानिसूक्ष्मविदेवीपादुका ॥ विद्याञ्जलि ॥ म
कामुद्रा ॥ ॐ जवड पीठिप्रसदनजाजापूर्णनिवीसकथ ॥४॥ कामनूसदेवी ॥८॥
कुण्डलीसनमामुण ॥ काञ्ज पादुका ॥ भाव ॥ ॐ ज्ञं याकञनामसीदेवी सर्व्वका
मफलप्रदं ॥ श्रीदमकमपसर्व्वयसर्व्वलोकिकनधव ॥४॥ काञ्ज पाताये न तस्मै ॥

यथिपूर्णमस्तु ॥ इति काशी ॥ ॥ ततो समयाकपूजा ॥ ॐ ऐं ह्रां सर्वसिद्धालय
कालाय पादुकां ॥ ध्यान ॥ ॐ ऐं सर्ववर्णधर्मीदेवी वरदारू युक्तसर्वं ॥ त्रि
नयनं महासौम्य विद्धि सिद्धि ददातु मे ॥ ध्यान ॥ पूजन ॥ ॐ ऐं क्लीं सर्व
मात्रिकायै नित्य स्वाहा ॥ त्रियाञ्जलि ॥ पात्र ॥ ॐ ऐं समयाकमकादेवी श्राय
मक्किकर्णीयम ॥ शान्ति पुष्टि सदा नस्य लक्ष्मी संपत्ति दायकं ॥ समयाकं सर्व
यथिपूर्णमस्तु ॥ इति समयाकं ॥ ॥ ततो मङ्गलायापूजा ॥ ॐ ऐं ह्रां धुर्वल
कोल्या विश्वरूप पश्चिकासनं ॥ ॐ ऐं यर श्री अग्नासनाय पादुकां ॥ ध्यान ॥ ऐं ऐं

लाम्बोनसनिरायदेवी अम्बानागसमन्कवायोवनानतत्र्पार्गं विनयं दिव्यत्र
पिनश्च मदिरानन्दघ मन्त्र जप्तादगन्तुड धावनी ॥ खड्ग शूल वज्र अंकुश दिलिमू
त्तुगर्न तथा ॥ नदाय पद्म वनपार्व दक्षिणेन विराजित ॥ स्फटिक पूर्ण घण्ट
कयालसवद्वार्ग कम्बूया ॥ नीलोत्पलरुचं विन्दुवामककस्त्रविधावनी ॥ दिव्यवस्त्र
त्रिशलापाङ्कमारुवणहू विता ॥ वन ल भासमानानो ४ वन्धयज्ञासनुष्ठित ॥ ॥
एवंरूपं महादेवी वारूनि दिव्यहू विनी ॥ ध्यान ॥ पूजन ॥ ॐ ऐं जयायै पूर्वां ल
लादयक नीयय नीपूनीकालीसानन्ददेव पादुकां ॥ ॐ ऐं श्रीवारूणी ध्व

वीयात्मपादुकां ॥ पातमण्डकमर्चितसार्गपार्गेन ॥ द्वादशार्ग ॥ ॐ ह्रूं सिद्धाये
पादद्वयपादुकां ॥ ॐ ह्रूं कूष्माण्डाये जानुद्वयपादुकां ॥ ॐ ह्रीं विद्युताये ऊरुद्व
यपादुकां ॥ ॐ ह्रीं लक्ष्म्याये गुह्यपादुकां ॥ ॐ ह्रूं दीपकाये नाभौ पादुकां ॥ ह्रूं
मालिन्याये हृदयाये पादुकां ॥ ॐ ह्रूं शिवाये कण्ठपादुकां ॥ ॐ ह्रूं वक्त्रमुखाये
मुखपादुकां ॥ ॐ ह्रीं नासाग्रमाये नासापुटद्वयपादुकां ॥ ॐ ह्रीं कटुकाये क
र्णद्वयपादुकां ॥ ॐ ह्रूं कविकल्पेतिकाये पादुकां ॥ ॐ ह्रूं महामुखालिनसिपादु
कां ॥ ॐ तिद्वादशार्ग ॥ ॐ ह्रूं सर्वज्ञानाथहृदयाये पादुकां ॥ ॐ ह्रीं गु

गुतन जामालनानि विप्तालितसम्बाहा ॥ ॐ ह्रूं उवदवदनीऊनादिवाय
निशिखाय वौषट् ॥ ॐ ह्रूं वज्रानीवज्रधा पायसुमन्त्रकवचाय हुं ॥
ॐ ह्रीं नान्तुनित्यूष्णलू फट् किसहविनयहूयं वषट् ॥ ॐ ह्रूं नमस्तुये
अनन्तमुकि ह्लीं हूं महापाशुपतास्त्राय सहस्राक्षाय हूं फट् ॥ ॐ तिपञ्चर्ग ॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सर्वात्मनयात्रपादुकां ॥ पुनः षडङ्ग मावाह्य
॥ पादुकां मिमुद्रा ॥ अथवा ॥ अधानवद्रावतिलिखिय ॥
३ ॥ कवसकार ॥ सद्भावहकावार्के ॥ द्वादशार्ग ॥ ॐ ज्ञानमुक्तिनिर्वाकार्व

ॐकारबीजहूंसम्वितं । निष्कलं निर्मलं शुद्धं कुण्डलीसं नमाम्यहं ॥ षडर्मिनपू

जन४ ॥ आवाहनादि त्रिशूलमुद्रा ॥ हूं ति यावपूजा ॥ ॥ नपावलिपूजा

॥ गजः याय बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ हूं त्यादि ॥ गजः तं ध्यानजन्मस्त्र हूं ताया

युतं श्रीक्रमिकिका । ज्ञनकाज्ञ यमादप्रवृ पूर्व रुद्रनभवव ॥ पूजमकोउपन

श्रीवकेपाम एकदण्ड ज्ञं । विनायकाभाग्या पूर्व ऊंमधी सूर्यवाहकं ॥ ज्ञक

वाहाक वनपूर्वस्व नुर्ण मूं णमवव ॥ षष्ठा लाहु ॐ गणन श्रीवलुषटकोनक

६ । त्रनना पाज कानाश्चीक ना ॐ षट श्लेन ॥ टके पालिथा वलाक्ष कामसाट

ठकर्णिका४ ॥ गनिका कत दिका नथ धियादनुक स्मथ । धन धानागकर्णु ष्ठ

सुवपुरुटकानका४ ॥ वीवर्सि करकाठ स्त्री गराशुनयूनाक्सथ । यूनाक्रमानव

श्रीव लीवादनव [illegible] र्णुकं ॥ सकेवपुवभु वा रुसूनाशाहूं हूकास्मथ । क्रयं

नश्रीपक्षाली क्रेशाय पश्री गनमास्तुण ॥ ज्ञनपश्री गमहाक्र नलिधिब धर्म श्रि

नं ॥ निरु वीकृत्या याक्र श्री नवावारवणहूविनं ॥ पृथ्वक्समक्र नूयपघ मर्ष मूका

षविन्दूना । ज्ञज दिमहाकेर्ष कनकायालं समाम्यहं ॥ क्रां क्रीं क्रूं मूजवादि कं

सपालाय बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ जयवल्गु घण्टम कानो साधू मू स्वी सनन स्वी वला

।स्ववनीप्र[illegible]माधावासोम्या ह्रीमामहबवा ॥ जयाप्रदिजया [illegible] व प्र जितावाय
नाजिता। मका कण विनुसा क्री स्वक्का माकासमाहका ॥ य[illegible] कारीसंकावीवज्र
ली
षासकवनी। पिपिलीपुष्पका विवप्रासिनी। ग्यकास्यनी ॥ [illegible]का[illegible]गुरु
हिका। [illegible] मक्तमानुगु [illegible]कापाल [illegible] विनी ॥ [illegible] धूनकाया[illegible]
[illegible] वासनी ॥ [illegible] सर्वनसर्वतस[illegible]
[illegible] स्वाहा ॥ [illegible]
[illegible] पूजा ॥

[illegible] दीपद्याय ॥ [illegible] समर्पन ॥ अथ दिपप्रज्वाल्यमन्त्र ॥ दीपप्रज्वालय स्वाहा ॥ [illegible] कुलाग्नि नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ [illegible] कनकाय [illegible] त्रिपथ [illegible]
देवी [illegible] त्रिमाता [illegible] किं [illegible] ॥
[illegible] विश्व सं [illegible]
[illegible] ॥ ध्यान ॥ पूजन ॥ [illegible]
॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ नवात्मा नवात्मी ॥ ॐ [illegible] पादुका ॥ ॐ [illegible] सूर्य
[illegible] महा[illegible]निधीय। [illegible]
व ये त्रि

॥ह्रदयादि ॥ अस्त्रान्तादि ध्यानं मुद्रा ॥ अमृतन्यासादि ॥ ॥ श्रीदीप उसन ॥
श्रीसम्बत्सनिवर्णन ॥ नमस्कालं ॥ दीपपात्र वपूजा ॥ ज्वल मन्त्र ॥ पञ्चबलि
दान ॥ योगिनी आदि नसहविनज नानाम कर्मकंदवा ॥ खवपाकानस कोल
पञ्चमन्त्र ॥ पञ्च श्राथप्यं वाक्य ॥ मूलदक याढयाक्य ॥ वाक्य ८० ॥ ते ज
मूलस्थजावडि स्मजा सबाना मानियामय ॥ समर्थ काय गकनम धुमखबन
पिउं ॥ अनाश्रिता धर्मका सं आकानलिना पढें ॥ उकिम किपद ॥ दीपलकम
सितना दिनं ॥ श्रीमांची मूं यवनाज पूजा नान्ति द्वापिली प्रकालकय स्वाहा ॥ ७

निर्मलीका यकुम्भु मूं ॥ बालकं दीपथापय ॥ आनन्दादि वरूकलालु
कुं बाकें वलिन्तु ६० ॥ ॥ जमाव्ह आदिहहा ल्वेव ल्मा घनं व्रकुघात
के ॥ दीपसकेण मोत न सर्व पापयमुच्यत ॥ ॥ जसकें वानि यसीनि
सिन्नु नन्व वकूकावनी ॥ कालीसर्वविनिर्मुक्तं कालीकाल विनाशनी
॥ यजमानस्य अमृककोमथाप्रसादा ॥ याकालनकं दीपप्राणयामि ॥
वीनुउध्याकयनक्वाकु य ॥ इति कालदीयसकण विधि ॥ ॥ ततावेब
व ॥ ॐ जमहासमर्थं कुंनं दिव्यभवानाकाङवः नवद्रव समापकं कुकि

इहस्मिन्नमास्तु ते ॥ ओं मयूरवकाककनिग्रहिटि हाग्रटकस्तु ॥ केवलं त्वं स
माहूत्वाकं वनं जन्मग्रमत्यान ॥ अमुककाम्ययाप्रसादाङ्क्याकं वन प्र
सयो मि ॥ वीनवध्वनकाचूप ॥ ओं इति केवन ॥ १ ॥ ॥ ततो ढूवन ॥ ओं
निर्माल्यं निर्मली दक्षयविरं दह साधनं ॥ प्रसादंदीक्लिनं शकावाकु
क्लिहस्मिन्नमास्तु ते ॥ ॥ ओं अं धेनूगिवाह्वान तलुमेडु ववाह ॥ ढूवनं
त्वमसा ढूत्वा ढूवनं जन्मग्रमत्यान ॥ अमुककाम्ययाप्रसादाङ्क्याढूवनं प्र
सयामि ॥ ओं इति ढूवन ॥ २ ॥ ॥ ततो उनवन ॥ ओं महूमीसमकामासीस्य
र्यंतनकं वन ॥ वप्रकावचढूदिधीकु क्लिहस्मिन्नमास्तु ते ॥ ॥ ककाकु
यन्त्रंसूलिसर्वेप्रमन्दूक ॥ जनवनकसमादूत्वाजनजन्मग्रमत्यान
॥ अमुककाम्ययाप्रसादाङ्क्याजयवनंप्रामसयो मि ॥ वीनदध्वनकावूय ॥
ओं इति उनवन ॥ ३ ॥ ॥ ततो सरवन ॥ ओं आक्राविक्लानंदंदीपब्रह्मसम
यवद्धसी ॥ तजाणातियदलीनकु क्लिहस्मिन्नमास्तु ते ॥ ॥ ओं आदुदीकति
तायक्ति ऊीवकर्यदयालसूं ॥ मूलनमेसर्वं ढूत्वाजजजन्मयमत्यान
॥ वीनवध्वनकावूय ॥ ओं इति सरवन ॥ ४ ॥ ॥ ततो सर्ववनमादायखवन

पिसम्बर्नं नूमापाय ॥ दधि विकालनि संपूज्य वानूद्रव्यसह मिश्रमादय नू ॥
नमोनू त्रिकोणमध्ये कोनमालिख्य ॥ त्रिकोनमध्ये ॐ कालमा लिख्य ॥ चक्रपूज
नसंपूज्य ॥ वलिनिवेद्यं ॥ एकानसकाचान्नी ॥ व उर्द्धं पञ्च क्री पञ्च कैव
ऊर्द्धं पञ्च क्री वदु ॥ धनमध्ये कानसवाय ॥ आवाहनमुद्रा यन्तु सन्ति धनि सेनि
नाथ अनुवन्नु ०न ॥ सर्ववन्तू उमन ॥ नमस्कानवाद्धय पट० ॥ ॐ ग सर्ववनून
मस्कानं स[illegible]ः ॥ दग्नि पापनं पूर्व पग्नि पापय ना [illegible]
ऋम ॥ क्षमूर्खं दविलद्धासंचनिदायनी ॥ विघ्नान्ते कनो निर्कं निर्व्य सर्वपाप

विमाचर्न ॥ आगम दूहावं पाव क्षाय ॥ चनूप्रदान ॥ मनु पट०म ॥ ॐ ग कु
वनचिधिनामध्य ऊ वन्दु समादित ॥ सर्वपापविनिर्मुक्ती ऋद्धि नूवा
नूशापन ॥ ॐ ग विज्ञु २ त्रिभुवन सिद्ध चन्द्रप्रिय विनि क्राँ क्राँ क्रीं हूं
हुं स्वाहा ॥ ग ऊनँ यान वसं मिश्र सर्ववनून माकमं ॥ सर्ववनूस मा
ढूका हृ द्विजन्मन्व्यवस्थाप ॥ अमूककम यापश्च सापाक्षया सर्वविघ्नस्वा
सयानि ॥ वीरद्रव्याक पकावूय ॥ ॐ निसर्व वनू ॥ ॥ नमा पावगमनं ॥
नमा पापनमस्कान ॥ वाक्यपट०म ॥ ग आसा कामाद्र ॥ अनुगवनियवि

कलाब्रह्म निष्ठनिवन्धे ॥ नक्कासिन्दूनवल्गुयिरमभूतमर्यं सर्व्वदेवा त्रि
यन्वं । हयोक्तिदेवदवास्त्रनवनसमणं मा विताज्ञ्वनत्रियं सालक्ष्मीव
भरस्मात्र्णमनसमनं पाठवात्री कूजनं ॥ ॥ अथपात्रप्रथमप्रमन
॥ घन्तुव्रबुलिथाय ॥ अज्ञुजयतिलिसन ॥ वाक्ष्य ८०० ॥ ओं जयासानं द्वि
ॐ त्यादिॐ तिन किसूत्र ॥ प्रथमप्रमन ॥ अण्टुत ॥ ॥ अथद्वितियप्रम
नं ॥ अर्द्धपाकयतिलिमह ॥ घन्तुवुलिथाय ॥ वाक्ष्य ८०० ॥ ओं ज्ञमना
नभ्यन्नमात्मेण ॥ जम ८ धौ विसासनस्त्रा ॥ ज रवन्नदा मन्त्रसिद्धि ॥ जन्मीमाज

का ॥ ॐ तिसीनानसूत्र ॥ द्वितियप्रमन ॥ अर्द्धपाक ॥ ॥ अथतृतियप्रम
नं ॥ स्वाजनायतिलिमन ॥ घन्तुवुविथाय ॥ वाक्ष्य ८०७ ॥ ओं जश्रीसर्व्वका
त्र जयासीरुदायिरुधा ॥ ओं जश्रीनिधृतासङ्का ॥ यिवन्तुदन्ततासर्व ॥ अविनामा
नवन्दहा ॥ ॐ त्यादि ॥ ॐ तिसवकमृत्र ॥ तृतीयप्रमन ॥ काक्ष ॥ ॥ अथस
मयान्कनहियह ॥ समयाक्रयाहातसतस्यसकमसंधापाठधनवर्षथान ॥ वा
क्ष्य ८०७ ॥ ओं जजयवतु देव्याहनयादर्यैका उंधसन्नवामाहूतमाक्षदायकं
अनकमिवाक्रमतिहवा धकींनमामि वाक्षाहृकयोगिनीनगं ॥ १ ॥ योगिनीचक्र

मश्वश्वीमात्मण्डलवर्त्तिनं ।नमामि लिंगसाम्नाथं शेषवर्ग्गेश्वरीप्रियं ॥२॥अ
पयादूनितयोगान्तमयाज्ञानर्ल्लघनात् ।सद्वालिमश्वयाद्वन्दे दिव्यचक्रस्त्रमन्त्र
नात् ॥३॥संपूज्य कौलं प्रतियोलकानां सामान्यतत्त्वं नयोअनानां ।प्रमत्सना
रूपाख्यपूर्वकाङ्क्षनाङ्क ४ कनातुणां त्रिगणवान्कुलं ग ॥४॥ यासा मा श्रृप्रस्ववनम
स्थितंस्तुवनत्रयं ।नमस्कार्यानमस्कार्यायोगिनीश्यानिर्यन्त्रं ॥५॥नद्दृत
साधककुलान्यनिमादिसिद्धि ४ गणपा ४ समन्तु समयद्विवियोगिनिशु ।सासाम्क
वीमून निकादि समाधुवस्थायस्यागुयाण्वन ण मर्कऊमकमव ४ ॥ग॥ यद्दिव

कर्मधूर्यका ४ समयिनामावर्गका ४ सम्बुपाद्ववन ४ कूलयोगिनीजनमनस्काया ४॥
कूलध्वविण ४ वीरद्रव्यविनिन्धका ४ कूलवधूविलासका ४ पूजनद्राधीनधिय ४ पनतुन
रूमस्थयोगिनीमण्डल ॥१॥ कनन्नावदूका ४ सचकूगगणाद्दप्रनायिणावप्रहावनागन्त
येकङ्कूतविनय ४ कवाधिपालान्वसा ४ यत्रेलाकूगताप्युक्कूस्तूधिय ४ प्रायेमकामकौ
स्तूकायान्तुसयास्वधायिनयय्यामास्तास्तवामादिरि ४ ॥८॥ स्वैर्ग्मेश्यानिवसानलीजल
नि८वीकमावक्लिविकूस्थिता ४ सुक्यू ४ कूलगनाम्बधीजातिना ४ स्वकीयजामन्त्रजाप ।या
गस्था ४ सरूजाग्वयगुजतिना ४ श्रीकौ लिकामन्त्रयोगिन्य ४ पलन्नसवान्नमूदिना

कासर्व्वयापाठव॥ ८ ॥ह्वानस्फा॥सदगद्ववादितिलया॥श्रीनन्दनकानमस्थन्यागान
त्रिलोय कन्यनमध्यायामंगमगानेखिना॥कूयस्फानगताप्तउस्यथगता॥सन्धाहस्फाप्तय
पध्वान्नापनरुलमात्तकूमूर्न पृक्षनुउष्यनुन॥ ॥१०॥नन्दनुकूलयागिन्यानन्दनु
कूलसैनव॥नन्दनुश्रीकूलाचार्यश्रेवान्यं कूलदिपिना॥दक्षिणेतुपिनसनुसूकीम
सनुपदकवगाप्रसादनु सदाधर्मचगणं जीवधापनं॥ ॥११॥सनुसर्कतिपकत्तसूक्तगता
विधस्मयाचायस्या॥नाजार्णप्रतिपालयनुवसूधधर्म्मखिनाप्तसर्व्वदा॥कालर्वनति
वर्मनाजवसूवसनुप्रजायून्यना॥सादकाधनद्वेद्विवांधवसूहतन८गा॥स्त्रिप्रमापासव
॥१२॥नम॥श्रीनाथाय॥नम॥श्रीसिद्धिनाथाय॥नम॥श्रीकूजगनाथाय॥ ॥धगनघल

याजाव॥सप्रलयाव॥ऊंक्षामूखीयाहाव॥॥लेंघथंहाव॥पात्रलेंपनऊरिस्थ
स्वविय॥यागिन्यादिऊंदिनवीनजानसकर्त्तेउखा॥वाक्यय८०७॥त्रेजऊरि८ोप
सर्वूर्कस्यायागिनीसिद्धिहगव॥सपूर्णुसर्व्वसिद्धिनुकाप्यधासर्व्वसंपदा॥वठ
समूढसंपूर्कचविरीपायनागनं॥नद्धीसोनाङ्कुदंवेद्वा॥सर्व्वसिद्धिकनंपर्व
॥ऊंकानीनृत्यपाधा॥०ऽयाधि॥व्याकूसविय॥धनवाक्य॥त्रेजवेच्यनंगऊनागाय
सर्व्वजनप्रियालव॥गजाश्री कानिसोराय॥जगकीर्त्तिधनापदा॥सिंदूर॥
त्रेजकुक्तिकावुसिंदूरं॥गिलवीद्धिजनागनं॥सर्व्वविघकामाथसिद्धिकामदा॥कूक
तंपागनागायरुलपूष्पगुरनधग॥भाहुनि॥त्रेजभाहुनीसर्व्वकामार्थजनदान

त्वकानर्कं ॥ सर्व्वसाधूनणीक्षयासिद्धिसं भाजमाहुनि ॥ ॥ पवाणीबुद्धि ॥ ॐ ए
एकान करुणत्रिमूर्त्तिकयनाक्षं त्याधि ॥ थागन्यादिसर्व्वम्त्राणीवाद ॥ ॐ एकं खेघू
व नगि याधि ॥ वतिनि नर्जनं ॥ मूजाल्लायन ॥ वाक्यप८० पू ॥ ॐ एवीनचक्र सम
लाया ॥ सर्व्ववस्तु द्विजानत्र । चक्रान्कं कर्त्तन सव सर्व्ववस्तुं पृथक् पृथक् ॥ रा क्षुका
य ए७ ॥ ॥ नानाकर्मकपूजा ॥ कुशमपुलमधुनिर्म्माल्ययुत स्नायय ७ ॥ न्यास ॥ ॐ ए
वं क्रकायफट् ॥ कन स्वाभर्त ॥ ॐ एकां हृदयाय २ ॥ ॐ एकीं नर्जनि ०० ॥ ॐ एकूं मध्य
मायवीषट् ॥ ॐ एकैं ४ अनामिकायहुं ॥ ॐ एकौं ४ कनिष्ठाय ०० ॥ ॐ एकः ४ करतला
यफट् ॥ अनन्तासन कूर्म न्यास ॥ जनपात्र अर्घपात्र पूजा ॥ आसन ॥ ध्यान ॥ ॐ ए धू

मु वर्णमहानजं एकवक्त्रं त्रिलोचनं ॥ शून वत्यल हस्ताकू अयाक्षुपणानिच ॥
वामाहस्ते भगानवी लं कुर्यादिव्यनुलिपि ॥ मान ध मानशी द्रवी निर्म्माल्य खं धुचि
नि ॥ ध्यानमुद्रा विविक्तय ७ ॥ ॐ कां कीं कूं ह्रां क्रूं श्रीकुलंकमहारेवबायपादुकां ॥ ॐ ए
कां कीं कूं श्रीकुलं कमहारुनवीपादूकंतु ॥ ॐ एकां हृदयायनम ४ ॥ ॐ न्यो दिसंपू
र्ण ॥ आ [illegible] कनाधिपन्तानमूल ॥ जाप ॥ ॐ एकां ५८ ॥ गात ॥ ॐ नमा कर्मनाथ
[illegible] ॐ एतू [illegible] आदि फयकंनलिनपूयिजनाथी ॥ [illegible] लिनत्रिकलालनस्तवद्धीभ
कतुनद् पनि [illegible] बितनीकुसलंकपालं ॥ चक्रान्कन समांसासकनसविविधे
मा वितान्नुतसंस्था ॥ मानसी सांद्ररावं समन णपविष्टं [illegible] तोमि उच्छिष्टनाथ ॥ ॥

स्ल नाश्वा नादि मूखमूर्द्धि ॥ कऊस्त्राय स्तु ॥ विसर्जन ॥ उदक मन्तुलं कृत्वा ॥ यज्ञ पू
ध्याव कीर्तुं ॥ ॐ जद्दसि नक्तान्तस्वामन्त्रीकृ तां लियूटिक्कनं । नमस्कमु नमस्कमु सर्व
पवा पिथवना ॥ सा स्कवी कृह्तिनि त्याति स्व कन्य यय मभ्वन ॥ सर्व वीना पिका सर्व वी
नाति सकसंयूना ॥ यथोक्त विधिनावं चक्र ध्यानं पयनमध्वनी ॥ उनाधिकमिथंव
क्रमकृत्तीनक्रियानि स्व ॥ तावनारकि हीन क्षत्रमस्मा पयनमभ्वन ॥ स्पिक्तना कृत्वा
साध्वानं प्रणिपान यतू ॥ गच्छ गच्छ गण सर्व स्व स्थानं गतं यय । यत्र मत्र मनसानि
पूनपाय गमनायच ॥ विसर्जन ॥ पावकन स्वाय ॥ यज्ञ वलि ह्वनं ॥ कर्म कृलिव
स्त्रीय ॥ ॥ धृण धून ध्वावमन्तुलया ध्वावा मनं ध्यूनयाव ॥ ध्वउ श्वाथ अर्थ दी

आनवयंथान ॥ यजमानस्वं ॥ वाक्यथनु ॥ ॐ जनमस्क ॥ देनवंपवं वीनक्तुयो
नावकी वीयणी सैन वीयुक्तं सर्व पव यूपवनी ॥ सामक्वीसगण सर्वजन वनानथ
नमभ्वनी । यथोक्तं विधिना सर्वकिउतिसाक्ष व्रजनं ॥ उनाधिक यथयावुजाय
पिक्विदमक्तिउर्क ॥ संपूर्ण सर्व सावापि कृष्य नायनमभ्वनी ॥ गच्छ गच्छ गण
सर्व स्व स्थानं गनं नय ॥ यत्र नत्र मठ सानि पूननाय विजयायच ॥ सर्वभून
मस्थानं ॥ मतनयूयवर्क्कविय ॥ नयूवीनउनस्क धूनध्वाबद्धा त्या स्वस्ति ॥ कर्मयूथ
वक दंसीसवकं ह्य ॥ कर्कायावन नयूणगंध्वादि ॥ स्फुलिङ्ग दंपनी क्रियायी यजा
गणविधि समाप्त ॥ — ॐ — ॥